● वर्ष-3
● अंक-65
रायपुर, मंगलवार
24 अक्टूबर 2023
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

samacharpacheesa@gmail.com

अवकाश सूचना

समाचार पचीसा के कार्यलय में विजयादशमी दशहरा के अवसर पर 24 अक्टूबर मंगलवार अवकाश रहेगा। समाचार पचीसा का अगला अंक 26 अक्टूबर गुरुवार को प्रकाशित होगा।

वसुंधरा-गहलोत अपनी-अपनी पार्टी पर भारी!

नईदिल्ली। राजस्थान विधानसभा चुनाव को देखते हुए दो नेताओं पर सबकी नजर है। एक कांग्रेस के अशोक गहलोत है जो वर्तमान में राज्य के मुख्यमंत्री हैं और एक भाजपा की वसुंधरा राजे हैं जो राजस्थान में दो बार मुख्यमंत्री रह चुकी हैं। पिछले 20 वर्षों के इतिहास को देखें तो इन्हीं दोनों के इर्द-गिर्द राज्य की राजनीति घूमती रही है। हालांकि, 2023 का विधानसभा चुनाव इन दोनों नेताओं के लिए किसी बड़ी परीक्षा से काम नहीं है और अगर हम दूसरे शब्दों में कहें तो शायद इन दोनों नेताओं के लिए यह आखरी सियासी दांव भी होगा। दोनों नेताओं को पार्टी के भीतर भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है और वर्तमान में इन दोनों के समक्ष पार्टी नेतृत्व के फैसले को भी स्वीकार करने की एक बड़ी चुनौती है।

वसुंधरा का दम

सबसे पहले बात वसुंधरा राजे की करें तो 2018 के विधानसभा चुनाव में मिली हार के बाद कहीं ना कहीं वह पार्टी में हाशिए पर जाती दिखीं। जब भाजपा ने सतीश पूनिया को प्रदेश अध्यक्ष बनाया तब भी वसुंधरा राजे नाराज हुई थीं। वसुंधरा राजे के विरोधी गुट को प्रदेश अध्यक्ष कि जिम्मेदारी सौंप कर भाजपा ने भी कोई बड़ा संदेश देने की कोशिश की। हालांकि पार्टी का यह दांव कामयाब नहीं हो सका। फिलहाल राजस्थान में वसुंधरा के भविष्य पर अटकलें का दौर जारी है। हालांकि, वसुंधरा राजे को पार्टी ने उनके पारंपरिक सीट झालरापाटन से मैदान में उतार दिया है। लेकिन उन्हें मुख्यमंत्री का उम्मीदवार नहीं बनाया है। पार्टी सामूहिक नेतृत्व पर जोर दे रही है। हालांकि फिलहाल उन्हें पार्टी की ओर से भरोसे

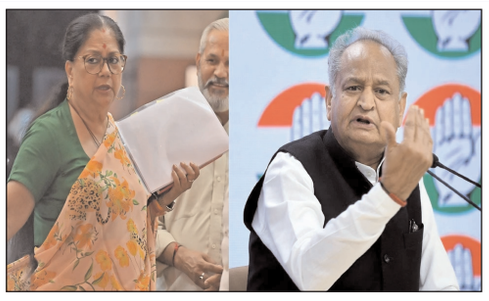

में लिया जा रहा है।

गहलोत का पक्ष

अशोक गहलोत के लिए राजस्थान में पिछले 5 सालों में कई चुनौतियां आई। सत्ता के शीर्ष पर रहने के बावजूद भी उन्होंने पार्टी के भीतर के विरोध का भी सामना किया। सचिन पायलट जैसे नेता लगातार उन्हें चुनौती दे रहे थे। हालांकि, अशोक गहलोत को विधायकों का समर्थन लगातार मिलता रहा। यही कारण है कि पार्टी आलाकमान भी चाह कर भी कुछ बड़े कदम नहीं उठा सका। वर्तमान में देखें तो पार्टी ने सचिन पायलट और अशोक गहलोत के बीच के मनमुटाव को खत्म करने की कोशिश की। इसी से जुड़े एक सवाल पर अशोक गहलोत ने कहा कि उन्होंने पायलट पक्ष के किसी भी उम्मीदवार का विरोध नहीं किया। हालांकि अशोक गहलोत के तीन करीबी नेताओं को अभी भी आलाकमान ने टिकट से दूर रखा है। ये तीन नाम शांति धारीवाल, महेश जोशी और धर्मेंद्र राठौर के हैं। राजस्थान में पिछले तीन-चार सालों के सियासत में इन तीनों नाम की चर्चा खूब रही है। गहलोत हर हाल में राजस्थान में सत्ता की कमान अपने हाथ में रखना चाहते हैं। हालांकि इस बार कांग्रेस की ओर से भी उन्हें मुख्यमंत्री का उम्मीदवार नहीं बनाया गया है।

गहलोत और राजे में समानता

गहलोत और राजे में यह भी समानता है कि पिछले पांच वर्षों में उन्होंने अपने-अपने आलाकमानों की नापसंदगी को किस तरह दृढ़ता से झेला है। यह दोनों नेता भले ही सियासी विरोधी हैं, लेकिन इनके साथ होने के भी खूब चर्चे होते हैं। याद करिए कुछ दिन पहले अशोक गहलोत ने कहा था कि वसुंधरा राजे की ही वजह से उनकी सरकार बच पाई थी। दूसरी ओर देखे तो सचिन पायलट ने पिछले दिनों एक विरोध प्रदर्शन किया था। उन्होंने अशोक गहलोत की ही सरकार को घेरते हुए मांग की थी कि वसुंधरा राजे के कार्यकाल के दौरान हुए भ्रष्टाचार की जांच हो। सचिन पायलट ने गहलोत पर वसुंधरा की मदद करने का भी आरोप लगाया था। जब वसुंधरा राजे को टिकट मिलने में देरी हुई तो अशोक गहलोत ने कहा मेरी वजह से वसुंधरा राजे को सजा नहीं मिलनी चाहिए। गहलोत कि बयान के बाद राजस्थान की राजनीति में एक बार फिर से नए पुराने अफसाने ने जोर पकड़ लिया।

फिलहाल देखे तो राजस्थान की चुनावी गलियारों में वादों की भरमार है। लेकिन इन दोनों ने नेता की भी लगातार चर्चा बनी रहती है। फैसला जनता के हाथों में है। यही तो प्रजातंत्र है।

न्यायिक प्रक्रिया से मोहभंग का खतरा

- **मुकदमों का फैसला आने में देरी पर अदालत की बड़ी टिप्पणी**

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने कानूनी कार्यवाही के तार्किक अंत तक नहीं पहुंचने और देशभर की अदालतों में लंबित मामलों पर चिंता जाहिर की है। अदालत ने मुकदमों के कछुए की गति से चलने के कारण जनता का न्यायिक प्रक्रियाओं से मोहभंग होने के खतरे से आगाह किया है। शीर्ष अदालत ने मुकदमे के दौरान पक्षकारों की तरफ से अपनाई जाने वाली टालमटोल की रणनीति पर भी चिंता जाहिर की।

41 साल से लंबित है मामला

कोर्ट ने लंबित मामलों में एक का जिक्र करते हुए कहा, 41 साल पहले संपत्ति विवाद का मुकदमा करने वाले याचिकाकर्ता अभी भी अंधेरे में हैं। अदालत ने लंबित मामलों को निपटाने के लिए देश की न्यायिक प्रणाली में तत्काल सुधार का आह्वान किया है।

कौन सी पीठ ने पारित किया आदेश

न्यायमूर्ति एस रवींद्र भट (अब सेवानिवृत्त) और जस्टिस

अरविंद कुमार की पीठ ने निचली अदालतों के लिए कई अहम निर्देश जारी किए। अदालत ने कहा, 41 वर्षों के बाद भी मुकदमेबाजी हो रही है। जिरह किया जा रहा है कि एकमात्र वादी के कानूनी प्रतिनिधि के रूप में किसे रिकॉर्ड पर लाया जाना चाहिए। यह एक क्लासिक मामला है। पीठ ने शुक्रवार को जारी फैसले में कहा, देश का लोकतंत्र न्यायपालिका पर निर्भर है।

नौकरशाही की अक्षमता को दूर करने की जरूरत

अदालत ने कहा कि भारत की न्यायपालिका सर्वोपरि मिशन के रूप में न्याय देती है। दो जजों की खंडपीठ ने अपने फैसले में कहा, हमें अनुकूलन और सुधार करना चाहिए। हमें सुनिश्चित करना चाहिए कि न्याय एक मृगतृष्णा नहीं बल्कि सभी के लिए एक वास्तविकता हो। मुकदमे के निपटारे में विलंब और नौकरशाही की अक्षमता को दूर करने की जरूरत पर बल देते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा, अब समय आ चुका है जब अदालतों में देरी और लंबित मामलों के खिलाफ तत्काल कार्रवाई की जाए।

नागरिकों का विश्वास बहाल करने का आह्वान

सुप्रीम कोर्ट ने कहा, अदालतों में टालमटोल का समय बहुत पहले चला गया है। न्याय, नौकरशाही की अक्षमता का शिकार नहीं हो सकता। हमें अब कार्रवाई करनी चाहिए, क्योंकि बहुत देर हो चुकी है। अदालत ने कानून के संरक्षक के रूप में, एक न्यायसंगत समाज के वादे में नागरिकों का विश्वास बहाल करने का आह्वान किया। तत्परता के साथ कानूनी सुधार की यात्रा शुरू करने की अपील करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा, हम जो विरासत छोड़ेंगे वह राष्ट्र की नियति को आकार देगी।

मुकदमे की तारीख के लिए वकीलों से बात करें

अदालत ने कहा कि मुकदमे की तारीख, पार्टियों की ओर से पेश होने वाले अधिवक्ताओं के परामर्श से तय की जाएगी ताकि वे अपने कैलेंडर को समायोजित कर सकें।

नवरात्र अंतिम दिन महानवमी के अवसर पर घरों में नौ कन्या भोज का आयोजन कराया जा रहा है. इस अवसर पर प्रदेश के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के भिलाई 3 स्थित स्थानीय निवास पर कन्या भोज का आयोजन किया गया. कन्या भोज के आयोजन के दौरान मुख्यमंत्री ने सहपरिवार सभी की आरती कर उन्हें भोजन कराया और सभी बालिकाओं को उपहार भी दिए.

अफगानिस्तान ने पाक को पहली बार वनडे में हराया

चेन्नई। अफगानिस्तान ने पाकिस्तान के खिलाफ वनडे की पहली जीत हासिल कर ली है। टीम ने वर्ल्ड कप 2023 का तीसरा उलटफेर कर दिया। अफगान टीम ने पाकिस्तान को 8 विकेट से हराया। अफगानिस्तान इसी टूर्नामेंट में डिफेंडिंग चैंपियन इंग्लैंड को भी हरा चुका है। जबकि नीदरलैंड ने साउथ अफ्रीका को हराकर टूर्नामेंट का दूसरा उलटफेर किया था।चेन्नई के चेपॉक मैदान पर पाकिस्तान ने टॉस जीतकर बैटिंग चुनी। टीम ने 50 ओवर में 7 विकेट पर 282 रन बनाए, नूर अहमद ने 3 विकेट झटके। अफगानिस्तान ने 49 ओवर में 2 विकेट खोकर टारगेट हासिल कर लिया। इब्राहिम जादरान ने 87 रन बनाए, उन्होंने रहमानुल्लाह गुरबाज के साथ 130 रन की ओपनिंग पार्टनरशिप भी की।

चॉपर से प्रचार हर घंटे 5 लाख रुपये तक खर्च करेंगे दल

- **भाजपा और कांग्रेस ने लिए किराये पर**

रायपुर। छत्तीसगढ़ में पहले चरण के नामांकन प्रक्रिया खत्म होने के बाद अब दूसरे दौर की प्रक्रिया शुरू हो गई है। सभी दलों के नेता स्टार नेता प्रचार में कूद गए हैं। इसके साथ ही इनके लिए किराये पर हेलीकॉप्टर के भी इंतजाम कर लिए गए हैं। जानकारी के मुताबिक, भाजपा ने प्रचार के लिए अब तक तीन हेलीकॉप्टर किराये पर लिए हैं। जबकि कांग्रेस ने अब तक दो हेलीकॉप्टर किराये पर लिए हैं। विमानन कंपनियां इन हेलीकॉप्टर का हर घंटे चार से पांच लाख किराए वसूल रही हैं।प्रदेश में

चुनावी आदर्श आचार संहिता लगने के बाद एविएशन कंपनियों ने हेलीकॉप्टर का किराया दो से तीन गुना बढ़ा दिया है। सिंगल इंजन के विमान के लिए कंपनियां ढाई से तीन लाख और डबल इंजन विमान के लिए चार से पांच लाख रुपये तक किराया वसूल रही हैं। इसके अलावा एयरपोर्ट से सभा स्थल के लिए निकलने और सभा के दौरान जितनी देर तक हेलीकॉप्टर खड़ा रहेगा। कंपनियां उसका अलग से किराया वसूलेंगी। छत्तीसगढ़ में एक भी एविएशन कंपनी नहीं है। इसलिए प्रचार के लिए हेलीकॉप्टर को दिल्ली या मुंबई से मंगवाया जा रहा है। मुंबई में सात और दिल्ली में 5 एविएशन कंपनियां ऐसी हैं, जो किराए पर हेलीकॉप्टर मुहैया कराती हैं।

दोनों दलों के लिए प्रचार के लिए गए हेलीकॉप्टर प्रदेश की राजधानी रायपुर एयरपोर्ट हैंगर में रखे गए हैं। दोनों दलों के राष्ट्रीय नेताओं के छत्तीसगढ़ दौरे का कार्यक्रम बनने पर प्रदेश कार्यालय के को-ऑर्डिनेशन से ही इन उपयोग किया जाएगा। बताया जाता है कि दशहरे के बाद कुछ हेलीकॉप्टर किराए से मंगाए जाएंगे। इसके बाद बाद तेजी से प्रचार शुरू किया जाएगा।

हेलीकॉप्टर के किराए को लेकर फिलहाल भाजपा और कांग्रेस कुछ भी कहने से बच रही है। दोनों दलों का इतना कहना है कि हेलीकॉप्टर राष्ट्रीय कार्यालय की तरफ से भेजे गए हैं। इनका उपयोग राष्ट्रीय स्तर के नेता और स्टार प्रचारकों की विभिन्न सभाओं के लिए किया जाएगा।

प्रमुख समाचार

मोदी सरकार में अमीर हुए मालामाल, गरीबों की आय हुई कमः जयराम रमेश

नईदिल्ली। यह आरोप लगाते हुए कि मोदी सरकार के तहत अति-अमीर और मध्यम वर्ग के बीच बढ़ती खाई अधिक से अधिक स्पष्ट है, कांग्रेस

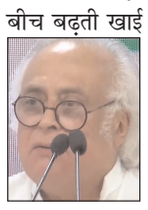

सांसद जयराम रमेश ने सोमवार को कहा कि देश में बढ़ती आय असमानताओं को 2013-14 से 2021-22 तक आयकर रिटर्न का विश्लेषण पुष्टि करता है। उन्होंने इसको लेकर एक एक्स पोस्ट किया। उन्होंने कहा कि 2013-14 से 2021-22 के आयकर रिटर्न के सार्वजनिक रूप से उपलब्ध आंकड़ों के विश्लेषण से भारत जोड़ो यात्रा के मुख्य मुद्दों में से एक की पुष्टि होती है। बढ़ती आय असमानता का मुद्दा यात्रा के मुख्य मुद्दों में से एक था। मोदी सरकार में सबसे अमीर लोगों और मध्यम वर्ग के बीच बढ़ती खाई स्पष्ट रूप से नज़र आ रही है। प्रमाण देते हुए कांग्रेस नेता ने कहा कि 2013-14 में टॉप के 1त्न आयकरदाताओं की कमाई कुल आय का 17त्न थी। 2021-22 तक टॉप 1त्न की कमाई कुल का 23त्न हो गई। उन्होंन कहा कि इसके अलावा, सबसे अमीर लोगों की आय में बढ़ोतरी भी मध्यम वर्ग की तुलना में बहुत तेज़ी से हुई है।

राज्यों में घटती चली जा रही है हिंदुओं की संख्या, हालात बिगड़े

नईदिल्ली। देश में कोई जातीय आधार पर जनगणना कराने की मांग कर रहा है तो कोई किसी जाति या वर्ग या धर्म के नाम पर आरक्षण की मांग कर रहा है। कोई कह रहा है भारत को हिंदू राष्ट्र

घोषित करो तो कोई 2047 तक हिंदुस्तान को इस्लामिक राष्ट्र में तब्दील करने के अपने छिपे हुए एजेंडे के तहत काम कर रहा है। लेकिन इस सबके बीच देश की सबसे बड़ी समस्याओं घुसपैठ, धर्मांतरण और जनसंख्या विस्फोट की ओर किसी का ध्यान ही नहीं जा रहा है। यह समस्या कितनी गंभीर है इसका अंदाजा आप इसी से लगा सकते हैं कि भारत में घुसपैठ, धर्मांतरण और जनसंख्या विस्फोट के चलते 9 राज्यों, 200 जिलों और 300 तहसीलों में हिंदुओं की संख्या बेहद कम हो गयी है या बिल्कुल नहीं है। पुणे में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भारत के पीआईएलमैन के रूप में विख्यात सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता अश्विनी उपाध्याय ने जो कुछ बताया है वह बेहद चौंकाने वाला है।उन्होंने कहा कि सनातन धर्म पर खतरा बढ़ रहा है। लेकिन इस ओर किसी का ध्यान नहीं है। उन्होंने कहा कि हमें यह समझना होगा कि हर समस्या का समाधान है।

घुसपैठ की कोशिश नाकाम, दो आतंकवादी मारे गए

नईदिल्ली। जम्मू-कश्मीर के उरी सेक्टर में नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर सुरक्षाबलों ने घुसपैठ की कोशिश को नाकाम करते हुए दो आतंकवादियों को मार गिराया। रक्षा विभाग के एक प्रवक्ता ने रविवार को यह जानकारी दी। श्रीनगर में रक्षा विभाग के प्रवक्ता ने बताया कि खुफिया एजेंसियों और जम्मू-कश्मीर पुलिस से गुप्त जानकारी मिली थी कि नियंत्रण रेखा के पार से भारी हथियारों से लैस आतंकवादी उरी सेक्टर में घुसपैठ की कोशिश कर सकते हैं, जिसके बाद सैनिकों को 'हाई अलर्ट' पर रखा गया था व घुसपैठ रोधी ग्रिड को मजबूत किया गया था।उन्होंने कहा कि लगातार बारिश और कम दृश्यता की वजह से खराब मौसम का फायदा उठाकर हथियारों से लैस आतंकवादी नियंत्रण रेखा को पार करने का प्रयास कर रहे थे। प्रवक्ता ने बताया कि शुक्रवार और शनिवार की दरमियानी रात करीब तीन बजे आतंकवादियों के समूह को हमारे सैनिकों ने देख लिया, जिसके बाद मुठभेड़ शुरू हो गई।उन्होंने बताया कि सुबह होने तक मुठभेड़ जारी रही, जिसमें दो आतंकवादियों को मार गिराया गया। नियंत्रण रेखा की दूसरी तरफ मौजूद आतंकवादी मुठभेड़ में मारे गए आतंकियों को शवों को अपने साथ ले गए।

चाय कंपनी के मालिक पराग देसाई को कुत्तों ने नौंचा, मौत

नईदिल्ली। वाघ बकरी के मालिक 49 वर्षीय वंशज पराग देसाई की सड़क के कुत्तों के हमले के बाद मौत हो गई। वाघ बकरी चाय समूह के शीर्ष कार्यकारी, व्यवसायी पराग देसाई की रविवार को

उनके आवास के बाहर आवारा कुत्तों द्वारा हमला किए जाने के बाद मृत्यु हो गई। वह 49 वर्ष के थे। अहमदाबाद मिरर की रिपोर्ट के अनुसार, 15 अक्टूबर को उन पर हमला करने वाले सड़क के कुत्तों को बचाने की कोशिश में देसाई को गंभीर चोटें आईं। उनके आवास के बाहर एक सुरक्षा गार्ड ने उनके परिवार के सदस्यों को घटना के बारे में सचेत किया जिसके बाद उन्हें शेल्बी अस्पताल ले जाया गया। शेल्बी अस्पताल में एक दिन के अवलोकन के बाद, देसाई को सर्जिकल प्रक्रिया के लिए ज़ाइडस अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया गया। हालांकि, रविवार को इलाज के दौरान ब्रेन हैमरेज के कारण उनकी मौत हो गई।गुजरात कांग्रेस प्रमुख और राज्यसभा सदस्य शक्तिसिंह गोहिल ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में देसाई के निधन पर शोक व्यक्त किया। उन्होंने लिखा बहुत दुखद खबर आ रही है। वाघ बकरी टी के निदेशक और मालिक पराग देसाई का निधन हो गया।

सीपीएम और बीएपी से गठबंधन पर कांग्रेस की चर्चा

जयपुर । राजस्थान में विधानसभा चुनावों को लेकर सीएम अशोक गहलोत अब उन राजनीतिक दलों से गठबंधन की रूपरेखा भी तैयार कर चुके हैं जिन्होंने सियास संकट में उनका साथ दिया था। इसमें सीपीएम और भारत आदिवासी पार्टी शामिल हैं। गहलोत इसके संकेत दे भी चुके हैं। सीपीएम के मौजूदा समय में 2 विधायक हैं। जिनमें भादरा से बलवाल पूनियां और श्रीडूंगरगढ़ से गिरधारी लाल हैं। सूत्रों के मुताबिक इन दोनों सीटों के अलावा दांतारामगढ़ की सीट पर कांग्रेस सीपीएम से अलायंस कर सकती है। हालांकि, इस सीट पर कांग्रेस विरेंद्र सिंह विधायक हैं। लेकिन, 2008 के विस चुनावों में यह सीट सीपीएम के खाते में ही थी। सीपीएम के अमराराम यहां से विधायक थे। इस सीट पर कम्यूनिस्ट पार्टी का बड़ा होल्ड माना जाता है। हालांकि, पिछले दो चुनाव कांग्रेस यहां से जीत रही है। भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) के फिलहाल 2 विधायक हैं। डूंगरपुर के चौरासी से राजकुमार रोत और सागवाड़ा से राम प्रसाद। ये दोनों ही विधायक सरकार बचाने के लिए हुई बाड़ाबंदी में शामिल थे। उस वक्त ये भारतीय ट्राइबल पार्टी में थे लेकिन, विधानसभा चुनावों से पहले राजकुमार रोत ने ट्राइबल बेल्ट के लिए नई भारत आदिवासी पार्टी गठित कर दी।

महिलाओं के सहारे जातिगत राजनीति को ध्वस्त करने की तैयारी में भाजपा, टीम मोदी ने बनाया यह प्लान

नईदिल्ली। इस समय चल रहे पांच विधानसभा चुनावों और अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव में भाजपा को घेरने के लिए विपक्ष ने ओबीसी आरक्षण का दांव चलने का प्लान बनाया है। विपक्ष के इस प्लान को ध्वस्त करने के लिए भाजपा ने महिला मतदाताओं को अपनी ओर आकर्षित करने की योजना बनाई है। पार्टी का मानना है कि यदि महिलाओं को छूने वाले मुद्दे उनके सामने रखे जाएं, तो महिला मतदाता जातिगत-धर्मगत सोच से ऊपर उठकर वोट देती हैं। पार्टी इसके पहले भी तीन तलाक, प्रधानमंत्री आवास योजना और राशन योजनाओं के सहारे महिलाओं को अपने साथ सफलतापूर्वक जोड़ चुकी है। अब इसी सोच को ज्यादा मजबूती के साथ आगे बढ़ाने की तैयारी है।

भाजपा की समस्या

भाजपा की असली परेशानी यह है कि राहुल गांधी ने जातिगत आंकड़ों को नौकरियों से जोड़ना शुरू कर दिया है। वे बार-बार जातिगत संख्या के आधार पर सरकारी नौकरियों में हिस्सेदारी की बात उठा रहे हैं। विपक्ष के कई दल इसके लिए आरक्षण की ऊपरी सीमा को तोड़ने की बात भी कर रहे हैं। सरकारी नौकरियों के प्रति लोगों के आकर्षण को देखते हुए यह दांव बहुत कारगर साबित हो सकता है। विशेषकर उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा सहित उन राज्यों में जहां गरीबी-पिछड़ापन ज्यादा है, और सरकारी नौकरी लोगों की आजीविका

के एक बड़े साधन के तौर पर देखी जाती है, वहां यह मुद्दा पिछड़े-दलित जाति के लोगों को विशेष तौर पर आकर्षित कर सकता है।

भाजपा ने इन राज्यों में विकास योजनाओं, हिंदुत्व और राष्ट्रवाद के मुद्दों के सहारे अच्छी पैठ बनाई है। उसका यह समीकरण इतना कारगर रहा है कि जातिगत राजनीति करने वाले समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी जैसे दलों का परंपरागत वोट बैंक भी टूट गया है और भाजपा को इस वोट बैंक में सेंध लगाने में सफलता मिली है। लेकिन भाजपा की चिंता है कि जातिगत आंकड़ों के सहारे पूरा मामला एक बार फिर नब्बे के उस दौर की ओर लौट सकता है जहां मंडलवादी राजनीति ने उसकी बढ़ती राहों को रोक लिया था।

समाधान क्या है

पार्टी को लगता है कि महिला मतदाता ही उसकी इस समस्या का समाधान हो सकती हैं। महिलाएं ज्यादा संवेदनशील होती हैं। कल्याणकारी योजनाओं, महिला आत्मसम्मान से जुड़े मुद्दों, नारी शक्ति वंदन एक्ट और सरकार-संगठन में ज्यादा महिलाओं को भागीदारी देकर वह महिला मतदाताओं के बीच यह संदेश दे सकती है कि यदि महिलाओं को आगे बढ़ाना है तो इसके लिए भाजपा ही बेहतर विकल्प हो सकती है। पार्टी इसी रणनीति पर आगे बढ़ रही है।

इसके पहले भी भाजपा ने इन्हीं मुद्दों के सहारे विपक्षी दलों की तुलना में महिलाओं के ज्यादा वोट लेने में सफलता हासिल की थी। सीएसडीएस के आंकड़ों के अनुसार, 2014 के लोकसभा चुनाव में 29 फीसदी महिलाओं ने भाजपा को वोट दिया था। 2019 के लोकसभा चुनाव में यह आंकड़ा बढ़कर 36 फीसदी हो गया था। यूपी के विधानसभा चुनाव में, जहां भाजपा ने महिला सुरक्षा को अपना सबसे बड़ा मुद्दा बनाया था, वहां 46 फीसदी महिलाओं ने भाजपा को वोट दिया। यह काम जातिगत राजनीति करने वाली पार्टियों सपा-बसपा के रहते हुआ था। भाजपा को लगता है कि यदि वह महिलाओं को साथ ले सके, तो इस आंकड़े को राष्ट्रीय स्तर पर और ज्यादा बढ़ाया जा सकता है।

क्या करेगी पार्टी

राजनीतिक विश्लेषक सुनील पांडे ने अमर उजाला से कहा कि केंद्र सरकार ने बेहद चतुराई के साथ पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों के ठीक पहले नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित कराकर महिलाओं को यह संदेश दे दिया है कि वह उन्हें आगे बढ़ाने के लिए एतिहासिक निर्णय ले रही है। चुनावी राज्यों में महिला केंद्रित सभाएं कर वह उन्हें अपने साथ जोड़ने की कोशिश कर रही है। अगले वर्ष होने वाले लोकसभा चुनावों के पहले केंद्र सरकार महिला केंद्रित कुछ अन्य लोकप्रिय घोषणाएं कर भी महिलाओं को अपने साथ जोड़ने की योजना पर काम कर सकती है।

महिलाएं ज्यादा बड़ी वोटर

जिन पांच राज्यों में इस समय विधानसभा चुनाव चल रहे हैं, इन्हीं राज्यों के पिछले चुनाव के आंकड़े बताते हैं कि यहां पुरुषों की तुलना में ज्यादा महिलाओं ने वोट किया।

सरगुजा में चिंतामणि महाराज ने बढ़ाई कांग्रेस की चिंता, बगावत का छेड़ा सुर

सरगुजा/बलरामपुर। सरगुजा के सामरी सीट से कांग्रेस के विधायक चिंतामणि महाराज ने बगावती तेवर दिखाए हैं। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने उनका टिकट काट दिया। उनकी जगह पर विजय पैकरा को कांग्रेस ने सामरी से टिकट दिया है। जिसके बाद से चिंतामणि महाराज ने बगावती सुर अपना लिया है। रविवार को चिंतामणि महाराज ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि अगर बीजेपी उन्हें अंबिकापुर सीट से बीजेपी उन्हें सिंहदेव के खिलाफ मैदान में उतारेगी तो वह बीजेपी में शामिल होने के बारे में सोच सकते हैं।

चिंतामणि महाराज ने बीजेपी के सामने रखी शर्त

सामरी से कांग्रेस नेता और विधायक चिंतामणि महाराज ने बीजेपी के सामने बड़ी शर्त रख दी है। उन्होंने कहा कि मैं डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव के खिलाफ चुनाव लड़ना चाहता हूं। अगर बीजेपी मुझे अंबिकापुर से बीजेपी टीएस सिंहदेव के खिलाफ टिकट देने पर विचार करती है तो मैं बीजेपी ज्वाइन कर सकता हूं। चिंतामणि महाराज यहीं नहीं रुके। उन्होंने दावा किया है अगले लोकसभा चनाव में बीजेपी उन्हें टिकट देने को तैयार है।

बृजमोहन अग्रवाल और विष्णुदेव साय से मिले चिंतामणि महाराज

चिंतामणि महाराज ने बीजेपी के वरिष्ठ नेता बृजमोहन अग्रवाल और छत्तीसगढ़ बीजेपी के पूर्व अध्यक्ष विष्णुदेव साय से मुलाकात की है। रविवार को बलरामपुर के कुसमी में एक धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वहां तीनों नेताओं की मुलाकात हुई है। यहां धार्मिक अनुष्ठान किया गया। लेकिन इस धार्मिक आयोजन में सियासी रंग देखने को मिला। कांग्रेस पार्टी के मौजूदा विधायक और बीजेपी नेताओं के बीच हुई इस चर्चा से छत्तीसगढ़ में सियासी घमासान बढ़ गया है।

चिंतामणि महाराज ने कहा मुझे बीजेपी ने 2024 के लोकसभा चुनाव में उतरने के लिए कहा है। लेकिन मैने अगले महीने अंबिकापुर से विधानसभा चुनाव लड़ने की शर्त रखी है। बीजेपी नेताओं ने कहा कि अगर आप अभी बीजेपी में शामिल हो जाएं तो अच्छा रहेगा। इस पर मैंने अंबिकापुर से विधानसभा टिकट दिए जाने की शर्त बीजेपी के सामने रखी है।बीजेपी ने यह भी कहा कि अंबिकापुर से चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे नेता नाराज हो जाएंगे। इसलिए हम आपको लोकसभा चुनाव लड़ाने की सोच रहे हैं।

भाजपा ने अंबिकापुर से अभी उम्मीदवार का नहीं किया ऐलान

बीजेपी ने अब तक अंबिकापुर से कैंडिडेट की घोषणा नहीं की है। यही वजह है कि चिंतामणि महाराज ने यह दांव खेला है। चिंतामणि महाराज ने कहा है कि अभी आप अंबिकापुर से हमे टिकट दे दीजिए। बाद में मैं यह सीट खाली कर दूंगा। महाराज ने दावा किया कि उन्होंने भाजपा नेताओं से कहा है कि वह छह महीने बाद अंबिकापुर सीट खाली कर देंगे और लोकसभा चुनाव लड़ेंगे।

बृजमोहन अग्रवाल ने कहा चिंतामणि महाराज जी के साथ अन्याय हुआ है। वह दुखी हैं। हम उनका दुख और दर्द बांटने आए हैं। चिंतामणि महाराज अभी कांग्रेस में हैं। इसलिए उनके साथ कांग्रेस को न्याय करना चाहिए।

चिंतामणि महाराज सामाजिक कार्यकर्ता और दिवंगत संत रामेश्वर गाहिरा के पुत्र हैं। जिनका उत्तरी छत्तीसगढ़ खासकर सरगुजा संभाग में खासा प्रभाव है। आदिवासियों के बीच कार्यों को लेकर वह इस इलाके में काफी प्रभावशाली माने जाते हैं। अब देखना होगा कि बीजेपी चिंतामणि महाराज की शर्तों को किस रूप में लेती है।

शनिवार को हुई मुठभेड़ को परिजनों ने बताया फर्जी

■ दो नक्सलियों को सुरक्षाबलों ने मारने का किया था दावा

कांकेर। कांकेर में हाल ही में पांच सितंबर को सुकमा के तालमेटला में दो इनामी नक्सलियों को मारने का सुरक्षाबलों ने दावा किया था। दावे के बाद परिजन और ग्रामीणों ने उसे फर्जी करार दिया था। इसके बाद सुरक्षा बल सवालों के घेरे में थे। ऐसी ही एक घटना कांकेर जिले में भी सामने आई है। जिसमें शनिवार को हुई मुठभेड़ में परिजनों ने फर्जी मुठभेड़ का आरोप लगाया है।

21 सितंबर को कांकेर पुलिस ने दावा करते हुए बताया था कि कोयलीबेडा इलाके के गांव गोमे और केसोकोड़ी के पहाड़ में कंपनी नंबर पांच के नक्सली दल मौजूद होने की जानकारी मिली थी। जिसके बाद डीआरजी और बीएसएफ की संयुक्त टीम सर्चिंग पर निकली और पहले से मौजूद नक्सलियों ने गोलीबारी की जिसकी जवाबी कार्रवाई में सुरक्षाबलों ने भी गोलीबारी की जिसमें दो वर्दीधारी नक्सली मारे गए उनके पास से इंसास राइफल और 12 बोर की बंदूक सहित अन्य दैनिक सामग्रियां बरामद की गईं।

पुलिस इन मारे गए नक्सलियों को राजू सलाम की कंपनी का सदस्य बताते हुए उनके हिस्ट्री की जांच कर रही है। वहीं दूसरी ओर इस घटना के उजागर होने के बाद परिजनों ने भी कांकेर पुलिस अधीक्षक के नाम शिकायत पत्र सौंपते हुए बताया कि मारे गए कथित नक्सली ग्रामीण है जो शुक्रवार को बाजार में राशन लेने ककनार से कोयलीबेड़ा पहुंचे

थे वापसी के दौरान महिलाएं व मारे गए कथित नक्सली गोमें में रात्रि विश्राम कर वापस अपने गांव ककनार लौट रहे थे तभी सुरक्षा बल के जवानों ने महिलाओं को अलग कर मारे गए दोनों कथित नक्सलियों को अपने साथ ले गए और घटनास्थल पर गोली मारकर उनकी हत्या कर नक्सली वर्दी पहनाकर उन्हें नक्सली करार दिया। साथ ही कथित नक्सली मोड़ा का भाई ने बताया की कोयलीबेडा में राशन लेने जा रहे थे उस दौरान राशन नहीं मिलने पर ग्राम गोमे में रात में रुके और दूसरे दिन सुबह घर जा रहे थे उस समय उनके कथित नक्सली मोड़ा और एक कानाराम पद्दा को पुलिस उठाकर ले गए और महिलाओं को भेज दिया गया। जिसके बाद जंगल में दोनों को मार दिया गया। मामले में पुलिस अधीक्षक दिव्यांग पटेल ने बताया कि नक्सल एनकाउंटर में दो नक्सली मारे गए थे उसमे अपराध पंजीबद्ध किया गया था अपराध और मर्ग जांच के लिए परिजनों के कथन के लिए परिजनों को बुलाया गया था और सभी परिजनों से बात किया गया है। उनका जो जो स्टेटमेंट हैं उसके आधार पर जांच की जा रही है।

अंतागढ़ विस में कांग्रेस को बड़ा झटका पखांजूर में 29 ने दिया इस्तीफा

कांकेर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव को महज कुछ दिन ही बचे हैं। ऐसे में चुनाव से पहले कांग्रेस को बड़ा झटका कांकेर में मिला है। अंतागढ़ विधानसभा के कांग्रेसियों ने सामूहिक इस्तीफा दिया है।

पखांजुर में 29 कांग्रेसियो ने कांग्रेस पार्टी के प्राथमिक सदस्यता और तमाम पदों से सामूहिक इस्तीफा दे दिया है। सभी पदाधिकारियों ने जिला कांग्रेस संगठन पर उपेक्षा का आरोप लगाया है। सभी ने एक स्वर में कहा कि कांग्रेस ने अयोग्य व्यक्ति को विधानसभा का प्रत्याशी बनाया है। जिससे नाराज पदाधिकारियों ने यह कदम उठाया है।

नाराज कांग्रेस नेता टुलु भटाचार्य ने कहा सभी पदाधिकारी निर्दलीय चुनाव लड़ रहे प्रत्याशी अनूप नाग का समर्थन करने की बात कह रहे हैं।

इस्तीफा देने वाले में मुख्य रूप से अमिनेश चक्रवर्ती जिला कांग्रेस प्रवक्ता, टुलू भटाचार्य पूर्व महामंत्री जिला और वर्तमान में विद्यायल प्रतिनिधि है। सूरज विश्वास युवा कांग्रेस ब्लॉक उपाध्यक्ष है। इसके अलावा कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता है।

अंतागढ़ विधानसभा सीट से टिकट काटे जाने के बाद नाराज कांग्रेस विधायक अनूप नाग ने निर्दलीय चुनाव लड़ने का ऐलान कर दिया है। अनूप नाग ने नामंकन फॉर्म लेकर जमा जिला निर्वाचन कार्यालय में जमा कर दिए है। उनका कहना है कि मेरे विधानसभा क्षेत्र की जनता ने मुझे स्वतंत्र चुनाव लड़ने को कहा है। टिकट काटे जाने से उनके समर्थक लगातार नाराज चल रहे है।

अंतागढ़ विधानसभा में कांग्रेस ने अनूप नाग का टिकट काटकर रूपसिंह पोटाई को उम्मीदवार बनाया है। इसके बाद अनूप नाग और उनके समर्थकों में नाराजगी है। अंतागढ़ में हुए संकल्प शिविर में भी अनूप नाग के समर्थकों ने पीसीसी चीफ के सामने अनूप नहीं तो कोई नहीं के नारे भी लगाए थे।

कांग्रेस का अभेद किला है कोंटा विधानसभा सीट, इस बार कवासी लखमा को टक्कर देंगे बीजेपी के सोयम मुका

जगदलपुर। छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग में 12 विधानसभा सीटें हैं। इन 12 सीटों पर कांग्रेस का कब्जा है। इनमें एक कोंटा विधानसभा सीट है। राज्य गठन के पहले से ही कोंटा के नाम से ये विधानसभा सीट जाना जाता है। कोंटा विधानसभा सीट पर आदिवासियों की संख्या अधिक होने के कारण, इसे आदिवासियों के लिए आरक्षित किया गया है। फिलहाल इस सीट पर कांग्रेस के कवासी लखमा विधायक हैं, जो छत्तीसगढ़ के आबकारी मंत्री हैं। इस सीट पर 1998 से कांग्रेस का कब्जा है। ये सीट कांग्रेस का अभेद किला है। कांग्रेस ने एक बार फिर कवासी लखमा पर भरोसा जताते हुए। उन्हें टिकट दिया है। वहीं, बीजेपी ने इस बार इस सीट से सोयम मुका को टिकट दिया है। बीजेपी सालों से कांग्रेस के इस अभेद किले को भेदने के प्रयास में है। हालांकि बीजेपी को अब तक सफलता नहीं मिल पाई है। ऐसे में देखना होगा कि इस बार लखमा के क्षेत्र और कांग्रेस के गढ़ में बीजेपी सेंध लगा पाती है या नहीं।

कोंटा विधानसभा सीट आदिवासियों के लिए आरक्षित है। इस सीट पर 80 फीसद आदिवासी, 20 फीसद अनुसूचित जाति के लोग रहते हैं। इसके अलावा पिछड़ा और सामान्य वर्ग के लोग भी यहां रहते हैं। साथ ही माड़िया, हल्बा, दोरला, मुरिया जाति के लोग यहां निवास करते हैं। ये चारों ही अनुसूचित जनजाति के अंतर्गत आते हैं। आदिवासियों की इस सीट पर संख्या भी सबसे अधिक है। इसके कारण पार्टियों का फोकस भी आदिवासियों पर

रहता है। साल 2018 में भाजपा ने मुरिया जाति के धनीराम बरसे को अपना उम्मीदवार बनाया था। वहीं, कांग्रेस ने माड़िया जाति के कवासी लखमा को अपना उम्मीदवार बनाया था। कवासी लखमा ने इस सीट से जीत हासिल की थी।

मतदाताओं की संख्या- कोंटा विधानसभा सीट पर कुल मतदाताओं की संख्या 1,56,280 है। यहां पुरुष मतदाताओं की संख्या 73,600 है। वहीं, महिला मतदाताओं की संख्या 82,679 है। 1 मतदाता यहां थर्ड जेंडर के भी शामिल हैं। इस विधानसभा सीट पर पुरुषों की अपेक्षा महिला मतदाताओं की संख्या अधिक है।

मुद्दे और समस्याएं- कोंटा विधानसभा क्षेत्र पूरी तरह से नक्सल प्रभावित क्षेत्र है। नक्सलवाद यहां की सबसे बड़ी समस्या है। इसके साथ ही कोंटा विधानसभा क्षेत्र के अंदरूनी इलाकों में बुनियादी सुविधाओं की कमी है। यहां के अंदरूनी क्षेत्र के ग्रामीण आज भी झरिया का पानी पीने को मजबूर है। बिजली, पानी और सड़क अंदरूनी क्षेत्रों के ग्रामीणों से कोसों दूर है। इसके अलावा पोलावरम बांध यहां एक बड़ा मुद्दा है। पोलावरम बांध के बन जाने से कोंटा विधानसभा के कई गांव डूबान क्षेत्र में आएंगे। बीते दो-तीन सालों से लगातार पोलावरम बांध की वजह से शबरी नदी का पानी बैकवॉटर बन कर सुकमा जिले की ओर बढ़ता जा रहा है। कोंटा क्षेत्र पूरी तरह से डूब जाता है। इसके अलावा निर्दोष आदिवासियों को नक्सली बताकर जेलों में बंद किया गया है। उनकी रिहाई भी यहां बड़ा मुद्दा है।

साल 2018 के परिणाम पर एक नजर- साल 2018 में हुए विधानसभा चुनाव में इस सीट से कांग्रेस ने जीत हासिल की थी। पिछले चुनाव में यहां 55 फीसद मतदान हुआ था। कांग्रेस के प्रत्याशी कवासी लखमा को 31933 वोट मिले थे। वहीं, भाजपा के प्रत्याशी धनीराम बरसे को 25224 वोट मिले थे। कांग्रेस को 35 फीसद वोट मिला था। जबकि भाजपा को 28 फीसद वोट हासिल हुए थे।

माड़िया समाज विनिंग फैक्टर- कोंटा विधानसभा सीट आदिवासियों के लिए आरक्षित है। इस विधानसभा सीट पर माड़िया, हल्बा, मुरिया, दोरला जाति के लोगों की संख्या सबसे अधिक है। इसके अलावा माहरा, सुंडी, भतरा, राऊत, मारवाड़ी, मुस्लिम और अन्य समाज के लोग भी यहां रहते हैं। पिछले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के उम्मीदवार मडिया समाज से थे। वहीं, भाजपा के उम्मीदवार मुरिया समाज से थे। इस विधानसभा सीट पर कांग्रेस पिछले 23 सालों से माड़िया समाज से उम्मीदवार उतारते आई है। वहीं, भाजपा मुरिया समाज का प्रत्याशी चुनाव में उतारती है।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

कांग्रेस के चारों प्रत्याशी 26 को दाखिल करेंगे नामाकंन

कोरबा। दशहरा पर्व के ठीक बाद चुनावी घमासान पूरे विधानसभा क्षेत्र में शबाब पर होगा। पिछले विधानसभा चुनाव में भी कांग्रेस ने 26 अक्टूबर को नामाकंन दाखिल किया था क्योंकि पार्टी इस दिन को अपना लकी दिन मानती है इसलिए इस बार भी प्रत्याशी जयसिंह अग्रवाल, फूलसिंह राठिया, पुरुषोत्तम कंवर और दुलेश्वरी सिदार एक साथ नामाकंन दाखिल करेंगे। जबकि भाजपा के चारों प्रत्याशी 27 अक्टूबर को नामाकंन दाखिल करेंगे। नामाकंन रैली के बहाने दोनों पार्टी शक्ति प्रदर्शन करने की तैयारी में है। घंटाघर चौक से सुभाष चौक होते हुए कोसाबाड़ी तिराहे तक रैली पहुंचेगी जहां से तीन गाडियों को ही कलेक्ट्रेट तक जाने की अनुमति होगी।

बस्तर दशहरा में कालबान बंदूक की स्थापना कर शस्त्र पूजा की रस्म होगी आज

जगदलपुर। बस्तर दशहरा में रियासत कालीन परंपरानुसार विजयादशमी तिथि पर 24 अक्टूबर को शस्त्र पूजा की रस्म संपन्न की जायेगी, जिसके तहत मां दंतेश्वरी मंदिर में राजकुमारी मेघावती के कालबान बंदूक व मांईजी के निशान (लाट) को ससम्मान मंदिर में स्थपित कर परंपरानुसार शस्त्र पूजा संपन्न की जायेगी। मां दंतेश्वरी मंदिर के पुजारी उदय पानीग्राही ने बताया कि मेघावती पांसकंड की राजकुमारी थी, राजकुमारी मेघावती के शताब्दियों पहले लगभग 200 वर्ष पूर्व कालबान बंदूक मां दंतेश्वरी को भेंट की थी, तब से यह बंदूक मां दंतेश्वरी मंदिर में रखा गया है, विजयादशमी तिथि पर शस्त्र पूजा के लिए इसे बाहर निकाला जाता है। यह भरमार बंदूक करीब सात फीट लंबी व 20 किलो ग्राम वजनी है। कालबान के साथ ही देवी निशान (लाट) दंतेश्वरी मंदिर में स्थापित करने वाले तुकाराम यादव बताते हैं कि देवी निशान (लाट) राजमहल परिसर में मंदिर निर्माण के मौके पर वर्ष 1894 में राजपरिवार ने उनके पूर्वजों को सौंपा था।

दंतेश्वरी मंदिर में स्थापित है दुर्लभ अष्टधातु निर्मित प्रतिमाएं

जगदलपुर। मां दंतेश्वरी मंदिर में स्थापित दुर्लभ अष्टधातु निर्मित मां दंतेश्वरी की प्रतिमाएं वर्ष 1890 में जगदलपुर स्थित मां दंतेश्वरी मंदिर का निर्माण किया गया था, तब से संगमरमर से निर्मित मां दंतेश्वरी की मूर्ति के नीचे यह तीनों अष्टधातु प्रतिमा भी स्थापित की गई हैं। लगभग 800 वर्ष पूर्व वारंगल से राजा अन्नम देव के साथ बस्तर आई मां दंतेश्वरी के मूर्तियों की पूजा आज भी हो रही है यह प्रतिमाएं शताब्दियों से राजबाड़ा परिसर स्थित दंतेश्वरी मंदिर में स्थापित हैं। प्रतिवर्ष बस्तर दशहरा के मौके पर इन्हे गर्भगृह से बाहर निकाल तथा दक्षिणमुखी स्थापित कर पूजा की जाती है जहां-जहां बस्तर के राजाओं की राजधानी रहीं, माता की अष्टधातु से बनी यह मूर्तियां भी वहां रही है। मंदिर के पुजारी उदयनाथ पानीग्राही बताते हैं कि प्रति वर्ष शारदीय नवरात्रि के पहले दिन इन मूर्तियों को गर्भगृह से बाहर निकाल तथा दक्षिणमुखी स्थापित करने के बाद ही मंदिर में बस्तर दशहरा की पूजा विधिवत शुरू होती है। मां दंतेश्वरी की डोली विदाई के बाद इन मूर्तियों को वापस गर्भगृह में स्थापित कर दिया जाता है।

विस्फोटक, 180 नग स्पाइक के साथ 5 नक्सली गिरफ्तार

सुकमा। आगामी विधानसभा चुनाव को देखते हुए सुरक्षा बल के जवान लगातार नक्सल प्रभावित इलाके में सर्चिंग अभियान चला रहे है। ऐसे ही जगरगुंडा इलाके में सर्चिंग पर निकले जवानों ने 5 नक्सलियों तामु भीमा, ओयाम जोगा, अवलाम पांडु, पूनेम सन्नू, तामु आकाश सभी निवासी बेदरे को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से विस्फोटक 180 नग लकड़ी से बना नुकीला स्पाइक, 2 नग संबल, चुनाव बहिस्कार का नक्सली पर्चा व साहित्य बरामद हुआ। गिरफ्तार नक्सलियों ने विधानसभा चुनाव के दौरान घटना को अंजाम देने की बात स्वीकार करने के बाद कार्यवाही उपरांत अपराध कायम कर न्यायालय के समक्ष पेश कर जेल दाखिल कर दिया गया है।

बैकुंठपुर के दंगल में अंबिका पर कांग्रेस ने जताया भरोसा

कोरिया। छत्तीसगढ़ कांग्रेस ने रविवार को प्रत्याशियों की तीसरी और आखिरी लिस्ट जारी कर दी है। इस लिस्ट में अंबिका सिंह देव का नाम भी शामिल है। अंबिका सिंह देव को कांग्रेस ने एक बार फिर बैकुंठपुर विधानसभा से टिकट दिया है। वहीं, बीजेपी ने इस सीट से भैयालाल राजवाड़े को टिकट दिया है। टिकट मिलने के बाद अंबिका सिंह देव ने पार्टी का आभार जताया है। कांग्रेस प्रत्याशी अंबिका सिंह देव ने कहा कि, मुझे जिस प्रकार से कांग्रेस पार्टी ने भरोसा करके प्रत्याशी के तौर पर बैकुंठपुर विधानसभा से टिकट दिया है। जनता के बीच में जाकर उनकी सेवा करने का मौका दिया है। मैं पार्टी का आभार व्यक्त करती हूं। पिछले अपने पूरे कार्यकाल में जनता के लिए ही मैंने काम किया है। मेरे काका ने यहां के लिए बहुत कुछ सोचा था। मुझे उनका जो काम अधूरा है, उसे पूरा करना है। पहले भी 2018 में मैंने भाजपा के प्रत्याशी भैया लाल राजवाड़े को हराकर बैकुंठपुर विधानसभा से जीत हासिल की थी। इस बार भी मुझे जनता का साथ मिलेगा।

सरायपाली विधानसभा में गाड़ा समाज के हाथों में है जीत और हार की तार

महासमुंद। सरायपाली विधानसभा पड़ोसी राज्य ओडिशा की सीमा को छूती है। इसलिए यहां का ज्यादातर व्यवसाय ओडिशा मार्ग से ही होता है।कभी ये इलाका नक्सलियों के लिए सबसे सुरक्षित माना जाता था।लेकिन नक्सल विरोधी अभियान के बाद ये इलाका अब नक्सलियों के आतंक से मुक्त हो चुका है।इस विधानसभा सीट से बीजेपी ने अपने प्रत्याशी का ऐलान कर दिया है। मौजूदा समय में यहां से बीजेपी की सरला कोसरिया बीजेपी उम्मीदवार हैं।वहीं कांग्रेस ने इस विधानसभा से चातुरीनंद को टिकट दिया है।

बीजेपी ने इस बार सरायपाली से सरला कोसरिया को टिकट दिया है। सरला कोसरिया पूर्व राज्यसभा सांसद रेशमलाल जांगड़े की छोटी बेटी हैं।सरला कोसरिया वर्ष 2016 से भारतीय जनता पार्टी में प्रदेश उपाध्यक्ष के पद पर हैं। इनका गायत्री परिवार से भी खासा जुड़ाव है। सरला कोसरिया साल 2010 से 2015 तक महासमुंद जिला पंचायत अध्यक्ष भी रह चुकी हैं। सरला कोसरिया पार्टी के प्रति निष्ठावान और प्रखर वक्ता के रूप में जानी जाती हैं। सरला के पति बीबी कोसरिया

पेशे से डॉक्टर हैं। पिछले विधानसभा चुनाव में भी सरला टिकट की दावेदार थीं।लेकिन टिकट नहीं मिलने पर वो नाराज चल रही थी।लेकिन केंद्रीय नेतृत्व ने सरला को आश्वासन दिया।जिसके बाद वो लगातार पांच साल कर बीजेपी के लिए जमीनी स्तर पर काम कर रहीं थी।

चातुरी नंद वर्तमान में भूकेल हाईस्कूल में शिक्षिका है । प्रदेश चौहान सेना की प्रदेश अध्यक्ष भी हैं। इसके साथ ही पिछले कई सालों से समाजसेवा से जुड़े कई काम कर रहीं हैं।आपको बता दें कि सर्वे से पहले ही कांग्रेस संगठन में सरायपाली कांग्रेस विधायक किस्मत लाल नंद का विरोध हो रहा था।जिसे देखते हुए आलाकमान ने किस्मत की पेटी बंद कर चातुरी को मौका दिया है।

मतदाताओं की स्थिति - मतदाताओं की संख्या देखी जाए तो 1 लाख 98 हजार 930 मतदाता मौजूद हैं। जिसमें पुरुष मतदाता की संख्या 99 हजार 864 हैं। वहीं 99 हजार 36 महिला मतदाता यहां मतदान करके अपना नेता चुनते हैं।

साल 2018 के चुनाव परिणाम- महासमुंद जिले मे डीएसपी के पद से सेवानिवृत्त होकर साल 2018 में किस्मत लाल नंद ने विधायक के लिए चुनाव लड़ा। पहले ही चुनाव में किस्मत लाल नंद ने बीजेपी के प्रत्याशी श्याम तांडी को रिकॉर्ड मतों से हराया। 2018 चुनाव में किस्मत लाल नन्द को 1 लाख 302 मत मिले थे। जबकि बीजेपी के श्याम तांडी को 48 हजार 14 मतों से ही संतोष करते हुए हार स्वीकारनी पड़ी थी।

जातिगत समीकरण- इस इलाके में गाड़ा समुदाय के लोग ज्यादा संख्या में रहते हैं।क्षेत्र में अघरिया और कोलता समुदाय की भी अधिकता है।यहां पर 24 फीसदी एसटी, 11 फीसदी एससी, 18 फीसदी अघरिया और 16 फीसदी वोटर कोलता समाज के हैं। इसके अलावा सामान्य और अल्पसंख्यक वोटर 2 फीसदी हैं।

आपको बता दें कि सतनामी समाज की सरला कोसरिया को टिकट मिलने पर दूसरे समाज के कार्यकर्ता काफी नाराज हो गए हैं। इस विधानसभा में गाड़ा समाज बड़ी संख्या में मौजूद है। गाड़ा समाज को उम्मीद थी कि उन्हें टिकट मिलेगा।लेकिन ऐसा नहीं हुआ।पिछली बार के बीजेपी प्रत्याशी श्याम तांडी ने टिकट घोषणा के बाद अपने समर्थकों समेत बीजेपी छोड़ी और कांग्रेस में प्रवेश किया है।ऐसे में आगामी विधानसभा में गाड़ा समाज की नाराजगी का असर भी चुनावी नतीजों पर पड़ सकता है।

सियासी समीकरण की बात की जाए तो इस सीट को लंबे समय तक कांग्रेस का गढ़ माना जाता था। छत्तीसगढ़ गठन के बाद इस सीट पर कांग्रेस और बीजेपी के बीच बराबरी का मुकाबला रहा है। यहां कांग्रेस तो कभी बीजेपी के प्रत्याशी को जीत मिलती रही है। लेकिन 2008 में परिसीमन के बाद जब से ये सीट अनुसूचित जाति के लिए रिजर्व हुई है। तब से सरायपाली की सियासत पर इस महल का असर लगभग नहीं के बराबर हो गया है।बीजेपी ने दूसरी बार इस सीट पर महिला प्रत्याशी को मौका दिया है।

सरायपाली की समस्याएं और मुद्दे- यहां समस्याओं और मुद्दों की बात करें तो सरायपाली को नवीन जिला बनाने की मांग 1984 से लगातार हो रही है। सरायपाली जिला मुख्यालय से 120 किमी दूर है। हर बड़े काम के लिए यहां के लोगों को लंबी दूरी तय करनी पड़ती है। व्यापारिक दृष्टिकोण से यह इलाका काफी महत्वपूर्ण है। लंबे समय से यहां रेल लाइन की मांग हो रही है।रेल ना होने की वजह से लोगों को सफर करने में आर्थिक बोझ उठाना पड़ता है।साथ ही साथ अधिक समय लगता है। रोजगार की तलाश में कई परिवार दूसरे राज्यों में पलायन कर जाते हैं।बागबाहरा से बरगढ़ को रेल लाइन से जोड़ने की बात 5 दशकों से चल रही है। कांग्रेस और बीजेपी दोनों ने ही इस मुद्दे को समय-समय पर उठाया है।2012 में सर्वे के लिए बजट में भी शामिल किया गया। लेकिन इसके बाद कुछ नहीं हुआ। ग्रामीण सड़कों की हा

लत इतनी खराब है कि बड़े बड़े गड्ढे साफ नजर आते

संक्षिप्त समाचार

आमरण अनशन पर बैठे कन्हैया

रायपुर। सत्यमेव जयते फाउंडेशन के प्रदेश

संयोजक कन्हैया अग्रवाल ने जिला कलेक्टर को पत्र लिखकर 24 घंटे के अंदर सदर बाजार, पुरानी बस्ती की सड़कों का डामरीकरण प्रारंभ नहीं कराए जाने पर आमरण करने की चेतावनी कल दी थी। आज समय सीमा पूर्ण हो जाने पर आमरण अनशन शुरू कर दी है। कन्हैया अग्रवाल ने कहा कि नवरात्र, दशहरा और दीपावली जैसे सबसे बड़े त्यौहार के दौरान शहर की बदहाल सड़कों के कारण श्रद्धालुओं और बाजार जाने वाले ग्राहकों का निकलना मुश्किल हो गया है । सदर बाजार, सत्तीबाजार,कंकालीपारा, बुढ़ेश्वर मंदिर, पुरानी बस्ती थाना से लाखेनगर चौक तक सड़क अत्यंत जर्जर हालत में है । धूल से पूरा क्षेत्र सराबोर है ,ठंड के मौसम में धूल के कारण सर्दी ,खांसी दमे की शिकायत लगातार बढ़ रही है । श्री अग्रवाल ने कहा कि बदहाल सड़क का निर्माण प्रशासन तुरंत प्रारंभ कराए, सारी सड़कों का निर्माण का टेंडर जारी होने के बाद काम प्रारंभ नहीं होना दुर्भाग्य जनक है । निगम प्रशासन ठेकेदारों के खिलाफ आवश्यक कार्रवाई करे । कन्हैया अग्रवाल ने सोमवार की सुबह से मैं घर/ कार्यालय में अन्न जल त्याग कर आमरण अनशन प्रारंभ कर दिया है। बड़ी संख्या में समर्थक भी साथ बैठे हुए हैं।

कुलदीप का विरोध शुरु, सिंधी अकादमी के डायरेक्टर वासवानी ने दिया इस्तीफा

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने रविवार देर

रात 7 विधानसभा के सीटों के लिए प्रत्याशियों की घोषणा की जिसमें रायपुर उत्तर विधानसभा से एक बार फिर विधायक कुलदीप जुनेजा को प्रत्याशी बनाया गया। आज सोमवार को उनका विरोध भी शुरु हो गया और सिंधी अकादमी के डायरेक्टर अर्जुन वासवानी ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने कहा कि समाज की उपेक्षा असहनीय है क्योंकि वासवानी रायपुर उत्तर से टिकट की दावेदारी कर रहे थे। मगर पार्टी ने मौजूदा विधायक कुलदीप जुनेजा को फिर प्रत्याशी बना दिया। इस बार रायपुर उत्तर से सिंधी समाज से प्रत्याशी तय करने के लिए कांग्रेस नेताओं पर दबाव था। पार्षद अजीत कुकरेजा का नाम भी पैनल में था। मगर प्रदेश से सिंधी समाज से एक भी प्रत्याशी नहीं बनाए जाने पर सिंधी नेताओं में काफी नाराजगी है। टिकट के दावेदार वासवानी ने अपना इस्तीफा मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को भेज दिया है। लेकिन पार्टी में वे बने रहेंगे और पार्टी हित के लिए काम करते रहेंगे। उन्होंने कहा कि समाज से एक भी टिकट तय नहीं होने से भावनाएं आहत हुई है, वे समाज के लोगों की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतर पाए हैं। वरिष्ठ नेताओं तक समाज के लोगों की भावनाएं पहुंचा पाने और उन्हें समझा पाने में विफल रहे हैं। ऐसे में वो डायरेक्टर के रूप में काम करने में असहज महसूस कर रहे हैं इसलिए उन्होंने पद छोडऩा उचित समझा।

विस अध्यक्ष महंत ने विजयादशमी दशहरा की प्रदेशवासियों को दी शुभकामनाएं

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा अध्यक्ष डॉ चरणदास महंत ने असत्य पर सत्य के विजय पर्व विजयादशमी दशहरा के अवसर पर प्रदेशवासियों को दी बधाई शुभकामनाएं। विस अध्यक्ष डॉ चरणदास महंत ने कहा कि यह पर्व हमें समाज में व्याप्त आसुरी प्रवृत्ति को समाप्त कर शांति, सद्भाव और आपसी भाईचारा स्थापित करने का संदेश देता है। यह त्यौहार भारतीय संस्कृति में वीरता और शौर्य का प्रतीक है। डॉ महंत ने प्रदेशवासियों से आह्वान किया कि वे अपने अंदर की बुराईयों को समाप्त कर प्रदेश के विकास एवं समृद्धि में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें। विजयादशमी दशहरा दुर्गा पूजा और नौ दिन तक चलने वाले नवरात्रि उत्सव के समाप्ति का प्रतीक है। यही वह दिन था जब भगवान श्रीराम ने रावण को परास्त किया था, वहीं मां दुर्गा ने महिषासुर का अंत कर देवताओं और मनुष्यों को उनके अत्याचार से मुक्ति दी थी, विजयदशमी को हथियार (अस्त्र-शस्त्र) पूजने की परंपरा भी है।

सीएम बघेल का मास्टर स्ट्रोक, सत्ता वापसी पर किसानों की कर्जमाफी का किया ऐलान

रायपुर। छत्तीसगढ़ में भले ही कांग्रेस और बीजेपी ने अपना घोषणा पत्र जारी ना किया हो।लेकिन इस बार फिर से कांग्रेस धान और किसान कर्जमाफी को लेकर बड़ा दाव खेल सकती है। इसके संकेत सीएम भूपेश बघेल ने दिए हैं।सीएम भूपेश ने ट्वीट के जरिए इसकी जानकारी दी है। सीएम भूपेश ने इससे पहले भी अपने सभाओं में घोषणापत्र को लेकर कई संकेत दिए थे।जिसमें गरीबों को आवास के साथ बेरोजगारों के लिए स्वरोजगार जैसे अवसर लाने की बात कही गई थी।

जांजगीर जांचा से कटकर बने नए जिले सक्ती में सीएम भूपेश बघेल सोमवार को पहुंचे थे। यहीं पर सीएम ने बड़ा एलान किया है। सीएम ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि किसान को शक्तिवान बनाना है। इसलिए आज मैं ऐलान करता हूं कि जिस तरह पहले हमने किसानों का कर्जमाफी की थी। एक बार फिर किसानों की कर्जमाफी होगी। कांग्रेस की सरकार बनाइए। सीएम ने यह आह्वान छत्तीसगढ़ की जनता से की है। सीएम ने ऐलान किया है कि दोबारा कांग्रेस की सरकार बनी तो फिर से कर्जमाफी होगी। 2018 में भी की थी कर्जमाफी की घोषणा ?इससे पहले भी कांग्रेस ने सत्ता में आने से पहले कर्जमाफी की घोषणा की थी।जिसका नतीजा ये था कि 71 सीटों पर कांग्रेस ने बड़ी जीत दर्ज की थी। एक बार फिर कांग्रेस ने कर्जमाफी की बड़ी घोषणा करके किसानों के बीच खुशी की लहर पैदा कर दी है।जिसका असर आने वाले चुनाव में पड़ेगा।

छत्तीसगढ़ की राजनाति में धान और किसान अहम- छत्तीसगढ़ की राजनीति में धान और किसान अहम फैक्टर है। यहां लगातार धान किसानों पर राजनीति होती है। जो पार्टी किसानों के हित की बात करती है। उनकी सरकार हर बार बनती है। ऐसे में एक बार फिर सीएम बघेल ने मास्टर स्ट्रोक खेला है। जिसका असर आने वाले मतदान और चुनाव पर पड़ सकता है।

मुख्यमंत्री ने सपरिवर किया कन्या पूजन

रायपुर। एक्स पर मुख्यमंत्री बघेल ने लिखा कि समस्त प्रदेशवासियों को मां भगवती के नौवें स्वरूप सिद्धिदात्री एवं महानवमी के पावन पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। आज भिलाई निवास में सपरिवार कन्या पूजन एवं प्रसाद का वितरण किया।

भाजपा नेता बिरजू राम तारम को अरुण साव ने दी श्रद्धांजलि

■ लगाया टारगेट किलिंग का आरोप

राजनांदगांव। नवगठित जिला मोहला मानपुर अंबागढ़ चौकी के औंधी थाना क्षेत्र में शुक्रवार 20 अक्टूबर को क्षेत्र के बीजेपी नेता बिरजू राम तारम की हत्या कर दी गई। इसके बाद से ही प्रदेश में सियासी पारा चढ़ा हुआ है। लगातार बीजेपी नेता इस हत्या पर बयानबाजी करते नजर आ रहे हैं। बीजेपी ने बिरजू राम की हत्या को टारगेट किलिंग करार दिया है। इस कड़ी में सोमवार को बीजेपी नेता अरुण साव सरखेड़ा पहुंचे। यहां उन्होंने मृतक बीजेपी नेता के परिजनों से मिलकर संवेदना व्यक्त की। साथ ही कलेक्टर को फोन करके क्षेत्र में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करने का निर्देश दिया।

राज्य सरकार टारगेट किलिंग को नहीं रोक पा रही- इस दौरान बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव ने पत्रकारों से बातचीत की। उन्होंने कहा कि, आज सरखेड़ा आया हूं। हमारे पार्टी के कार्यकर्ता बिरजू राम तारम की हत्या हुई है। परिजनों से मिला हूं। गांव के लोगों से मिला हूं। बिरजू राम का निधन भारतीय जनता पार्टी के लिए अपूरणीय क्षति है।लोकतंत्र में हिंसा का कोई स्थान नहीं है। जैसा कि परिजनों ने बताया प्रशासन को लगातार इस बात की वह सूचना देते रहे हैं कि उनकी जान को खतरा है, लेकिन प्रशासन की ओर से कोई कार्रवाई नहीं की गई।

योजनाबद्ध तरीके से बिरजूराम की हत्या हुई है। यह न केवल टारगेट किलिंग है बल्कि सत्ता प्राप्ति के लिए राजनीतिक हत्या भी है। राज्य सरकार लगातार बीजेपी नेताओं हत्या को रोक नहीं पा रही है। ऐसा लगता है कि प्रदेश कांग्रेस की सरकार जनता से डरी हुई है, घबराई हुई है। इसलिए बीजेपी नेताओं की टारगेट किलिंग हो रही है। रमन सिंह भी गए थे पीड़ित परिवार से मिलने- बता दें कि इससे पहले शनिवार को पूर्व मुख्यमंत्री रमन सिंह और केंद्रीय मंत्री मनसुख मंडविया भी सरखेड़ा पहुंचे थे। यहां उन्होंने मृतक के शव को कंधा भी दिया। परिजनों से मुलाकात की। रमन सिंह ने भी इस हत्या को टारगेट किलिंग करार दिया था। बता दें कि प्रदेश में आदर्श आचार संहिता लागू है। इस बीच 20 अक्टूबर को बीजेपी नेता की हत्या हो गई। पुलिस ने इस मामले में शिकायत दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मामले में नक्सली एंगल से भी जांच की जा रही है।

प्रदेश के लिए आप ने जारी की 12 उम्मीदवारों की चौथी लिस्ट

नईदिल्ली/रायपुर। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली आम आदमी पार्टी ने रविवार देर रात छत्तीसगढ़ में आगामी विधानसभा चुनाव के लिए 12 उम्मीदवारों की चौथी सूची जारी की। राज्य में सात और 17 नवंबर को दो चरणों में मतदान होगा।

आप द्वारा सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट की गई सूची में अधिकतर उम्मीदवार जिला कमेटी के पदाधिकारी हैं तथा कुछ उम्मीदवार अन्य राजनीतिक दलों से आप में शामिल हुए हैं। पार्टी ने लिखा है, घोषणा। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 के लिए उम्मीदवारों की चौथी सूची आ गई है। सभी उम्मीदवारों को शुभकामनाएं। इस बार चलेगी झाड़ू।

पार्टी ने जिन 12 सीटों पर उम्मीदवारों की सूची जारी की है उनमें से छह अनुसूचित जनजाति वर्ग के उम्मीदवार के लिए और एक अनुसूचित जाति वर्ग के लिए आरक्षित हैं। आप ने छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2018 में पहली बार अपनी किस्मत आजमाई थी और कुल 90 सीटों में से 85 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे थे। लेकिन सफलता नहीं मिली थी। 2018 के चुनावों में आप का कोई भी उम्मीदवार अपनी जमानत बचाने में भी सफल नहीं हुआ था। आम आदमी पार्टी ने इस चुनाव में सभी 90 सीटों पर उम्मीदवार उतारने का फैसला किया है। पार्टी ने अभी तक कुल 45 उम्मीदवारों की सूची जारी कर दी है। राज्य में पार्टी के मीडिया विभाग के सदस्य अनुपम सिंह ने बताया कि पार्टी ने जिन उम्मीदवारों की सूची जारी की है उनमें ज्यादातर जिला इकाई के पदाधिकारी शामिल हैं। सूची में सामरी (एसटी) से पूर्व जनपद सदस्य देव गणेश टेकाम, लुंड्रा (एसटी) से पूर्व शिक्षक अलेक्जेंडर, सीतापुर (एसटी) से समाजसेवी मुन्ना टोप्पो, जशपुर (एसटी) से प्रकाश टोप्पो, रायगढ़ से मारवाड़ी समाज के सचिव गोपाल बापूड़िया, पाली तानाखार (एसटी) से सोबराम सिंह सैमा, जांजगीर चांपा से पूर्व शिक्षक परमेश्वर प्रसाद सांडे, खल्लारी से नीलम ध्रुव, बलौदाबाजार से संतोष यादव, रायपुर उत्तर से विजय गुरूबक्षाणी, आरंग (एससी) से प्रमोद जांगड़े और बिंद्रानवागढ़ (एसटी) से भागीरथ मांझी शामिल हैं।

कैसा नेता चाहती है रायपुर ग्रामीण की जनता

रायपुर। छत्तीसगढ़ में नवंबर महीने में विधानसभा चुनाव होने हैं। जिसमें पहले चरण का चुनाव 7 नवंबर और दूसरे चरण का मतदान 17 नवंबर को होना है। चुनावी बिगुल भी बज चुका है। राजनीतिक दल ने कमर कस ली है। कौन जीतेगा कौन हारेगा। इस बात का पता 3 दिसंबर को ही पता चलेगा। लेकिन इससे पहले मीडिया ने रायपुर ग्रामीण की जनता से संवाद किया। जिसमें रायपुर ग्रामीण की जनता ने अपना जरुरतों और सुविधाओं के बारे में बताया।साथ ही साथ ये भी बताया कि उन्हें कैसा जनप्रतिनिधि चाहिए।

मूलभूत सुविधाओं को पूरा करे- रायपुर ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र की रहने वाली चैताली दास ने बताया कि जनप्रतिनिधि या विधायक किसी भी पार्टी का हो चाहे वह कांग्रेस का हो या फिर भारतीय जनता पार्टी का। मूलभूत समस्याएं बिजली, पानी और सड़क जैसी समस्याओं का समाधान करने के साथ ही बच्चों के खेलने के लिए अच्छा प्लेग्राउंड, पार्क और अच्छे स्कूल होने चाहिए। चुनाव के दौरान जनप्रतिनिधि जनसंपर्क करने के लिए आम जनता के घरों तक पहुंचते हैं। लेकिन उसके बाद 5 सालों तक नेता गायब रहते हैं। कई बार आम जनता मिलना चाहती है, तो जनप्रतिनिधि से मुलाकात भी नहीं हो पाती।

सड़क और पानी की सुविधा नहीं हुई पूरी- रायपुर ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र के रहने

वाले राहुल तिवारी ने बताया कि क्षेत्र के लोगों से मुलाकात करते रहे। चुनकर जो भी विधायक आए वह बिजली पानी सड़क जैसी समस्याओं का समाधान करने वाला होना चाहिए। ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र की सड़क काफी खराब हो चुकी है, कुछ दिन पहले ही सड़क का निर्माण कार्य शुरू किया गया है। सड़कों की स्थिति काफी खराब हो गई है। पाइपलाइन के लिए सड़क खुदाई का काम किया गया है, जिसके कारण नगर निगम द्वारा सप्लाई होने वाले पेयजल भी मटमैला और गंदा आ रहा है।

सड़क में भर जाता है पानी- ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र के रहने वाले राजकुमार राठी ने बताया कि बारिश के आखिरी समय में मूसलाधार और भारी बारिश की वजह से अवंती विहार जैसे पॉश कॉलोनी की सड़कों पर डेढ़ से 2 फीट पानी भर गया था। भारी बारिश की वजह से सड़कों पर पानी भरने के साथ ही लोगों के घरों तक पानी पहुंच गया था।सामान तैरने लगे थे। ड्रेनेज सिस्टम का बुरा हाल है।

भ्रष्टाचार नहीं करने वाला नेता चाहिए- ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र की रहने वाली अनीता जैन का कहना है कि जनसंपर्क के दौरान जनप्रतिनिधि लोगों से नाली और सड़क बनाने का वादा जरूर करते हैं। लेकिन वादे अधूरे रह जाते हैं। जनप्रतिनिधि गरीबों की सुनने और उनकी समस्याओं का समाधान करने वाला होना चाहिए। वहीं विवेक कुमार सिंह ने बताया कि जनप्रतिनिधि या विधायक किसी भी पार्टी का हो लेकिन क्षेत्र की समस्याओं को दूर करने वाला होना चाहिए। कोई भी जनप्रतिनिधि हो विकास के काम करे और वह भ्रष्टाचार ना करें। ऐसे जनप्रतिनिधि की नितांत आवश्यकता है।

मतदाताओं की संख्या- रायपुर ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र में कुल मतदाता की संख्या 3 लाख 47 हजार 929 है। पुरुष मतदाता की संख्या 1 लाख 79 हजार 980 है। महिला मतदाता की संख्या 1लाख 67 हजार 888 है। थर्ड जेंडर मतदाताओं की संख्या 61 है। 18 से 19 वर्ष आयु वर्ग के मतदाताओं की संख्या 7884 है।

सीएम बघेल चुनावी पिच पर नहीं मार सके हाफ सेंचुरी, 49 पर आकर रुका स्कोर

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 के लिए कांग्रेस ने सभी 90 विधानसभा सीटों के लिए उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है। जिसमें से 49 सीटों पर कांग्रेस के सिटिंग विधायक चुनाव लड़ रहे हैं। 22 सिटिंग एमएलए की टिकट कांग्रेस ने काट दी है वर्तमान विधानसभा में कांग्रेस के पास कुल 71 विधायक है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता शुरू से ही इस बात को कहते रहे हैं कि काम करने वाले और जिताऊ उम्मीदवार को ही टिकट दिया जाएगा। अपनी इसी कथनी को सच साबित करते हुए कांग्रेस ने 22 विधायकों का टिकट काट दिया है।

इस चुनावी पिच पर छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल हाफ सेंचुरी भी पूरी नहीं कर सके। उनका स्कोर 49 पर आकर रुक गया। वर्तमान में भूपेश सरकार में कांग्रेस के पास 71 विधायक थे। जिसमें से पार्टी ने 49 वर्तमान विधायकों पर विश्वास जताते हुए उन्हें दोबारा

चुनावी मैदान में उतारा है। साल 2023 के विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस के 22 विधायकों का टिकट काटा गया है। इस तरह से मुख्यमंत्री भूपेश बघेल हाफ सेंचुरी लगाने से एक अंक यानी की एक विधायक से चूक गए हैं।

कांग्रेस उम्मीदवारों की तीसरी सूची रविवार की रात को जारी की गई। जिसमें बची हुई सभी 7 सीटों पर उम्मीदवारों की घोषणा की गई। इन सात सीटों में से 6 पर कांग्रेस विधायक काबिज थे। वहीं एक सीट बीजेपी के हिस्से में थी। इन 6 सिटिंग एमएलए में से कांग्रेस ने 4 विधायकों की टिकट काट दी। वहीं कांग्रेस ने दो विधायकों पर विश्वास जताते हुए उन्हें दोबारा मौका दिया है। जिन दो विधायकों पर कांग्रेस ने भरोसा जताया उसमें रायपुर उत्तर विधानसभा के विधायक कुलदीप जुनेजा और बैकुंठपुर की विधायक अंबिका सिंहदेव शामिल हैं। जिन 4 विधायकों की टिकट काटी गई है, उसमें सरायपाली से किस्मत लाल नंद, महासमुंद से विनोद सेवक लाल चंद्राकार, कसडोल से शकुंतला साहू, और सिहावा से विधायक लक्ष्मी ध्रुव का नाम शामिल है। कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के लिए पहली सूची में 30 प्रत्याशियों के नाम जारी किए थे जिसमें आठ सेटिंग मा की टिकट काटी गई थी जिनकी टिकट गाड़ी गई थी उनमें यह नाम शामिल थे।

हमर राज पार्टी की दूसरी लिस्ट जारी, पाटन में भूपेश और विजय को टक्कर देंगे बी एस रावटे

रायपुर। अरविंद नेताम की हमर राज पार्टी ने अपनी दूसरी लिस्ट जारी कर दी है। दूसरी लिस्ट में 20 प्रत्याशियों के नामों की घोषणा कर दी है। प्रदेश की सबसे वीआईपी सीट पाटन से हमर राज पार्टी ने बी एस रावटे को मैदान में उतारा है। वैशाली नगर सीट से हेमंत केशरिया को प्रत्याशी बनाया है। सीतापुर से नन्कू राम सिंह को उम्मीदवार बनाया है।

रामानुजगंज से फेंकू राम, सीतापुर से नन्कू राम सिंह, जशपुर से शुकरू राम भगत, कुनकुरी से बोध साय मांझी, लैलुंगा से अजय कुमार पंकज, रायगढ़ से बीएस नागेश, सारंगढ़ से उधो राम कौसले, धरमजयगढ़ से महेंद्र सिंह सिदार, मरवाही से प्रताप सिंह भानू, कोटा से ललिता बाई पैकरा, तखतपुर से राम बनवास जगत, अकलतरा से रिषी मरावी, सक्ती से छोटे लाल जगत, चंद्रपुर से तेजराम सिदार, महासमुंद से गणेश ध्रुव, बिलाईगढ़ से फूलकुमारी जांगड़े, सिहावा से जीवराखन लाल मरई, कुरुद से प्रेम सिंह ध्रुव, पाटन से बीएस रावटे, वैशाली नगर सीट से हेमंत केशरिया।

हमर राज पार्टी ने प्रदेश की 50 सीटों पर प्रत्याशी उतारने का फैसला किया है। पहली लिस्ट में हमर राज पार्टी ने 19 प्रत्याशियों पर मुहर लगाई थी। आज जारी दूसरी लिस्ट में 20 प्रत्याशियों का नाम घोषित होने के बाद 11 सीटों पर उम्मीदवारों को उतारना बाकी रहेगा।

हमर राज पार्टी के नेता और संस्थापक अरविंद नेताम ने कांग्रेस से इस्तीफा देने के बाद हमर राज पार्टी का गठन किया। नेताम ने कांग्रेस से इस्तीफा देने के बाद सत्तारूढ़ कांग्रेस और भाजपा पर आदिवासियों की उपेक्षा का आरोप लगाया था।

कांकेर विधानसभा सीट पर आदिवासी समाज का दबदबा

कांकेर। बस्तर का प्रवेश द्वार कहा जाने वाला उत्तर बस्तर कांकेर पहले पुराने बस्तर का हिस्सा हुआ करता था। साल 1998 में कांकेर को एक जिला बना दिया गया। कांकेर जिले में कुल 3 विधानसभा सीटें है। जिसमें कांकेर, भानुप्रतापपुर और अंतागढ़ विधानसभा शामिल है। कांकेर जिला आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है। यही कारण है कि इस जिले के तीनों विधानसभा सीटों पर आदिवासी वर्गों का दबदबा है। वर्तमान में शिशुपाल शोरी यहां के विधायक हैं। बीजेपी ने आशाराम नेताम के इस सीट से टिकट दिया है। तो वहीं, विधायक शिशुपाल शोरी का टिकट यहां से काट दिया गया है। कांग्रेस ने इस सीट पर शंकर धुर्वा को टिकट दिया है।

कांकेर विधानसभा सीट पर बीजेपी और कांग्रेस दोनो ने अपने प्रत्याशी हदल दिये हैं। कांग्रेस ने कांकेर से शंकर धुर्वा को टिकट दिया है। वहीं बीजेपी ने आशाराम नेताम को अपना उम्मीदवार घोषित किया है। 2018 के चुनाव में कांग्रेस ने शिशुपाल सोरी को टिकट दिया था। लोकिन इस लास उनका टिकट कांग्रेस ने काट दिया। वहीं बीजेपी ने 2018 में हीरा मरकाम को टिकट दिया था, उनका टिकट भी बीजेपी ने काटा हैं। कांकेर विधानसभा सीट आदिवासी वर्ग के लिए आरक्षित है। यहां तकरीबन 70 फीसद आदिवासी वर्ग के मतदाता हैं। जबकि 4 फीसद अनुसूचित जाति वर्ग के मतदाता हैं। 15 फीसद मतदाता पिछड़े वर्ग के है। 10 फीसदी सामान्य वोटर हैं। इस क्षेत्र में साक्षरता दर 72 फीसद है। साल 2018 में हुई वोटिंग दर 51 फीसद थी। आदिवासी वर्ग में भी गोंड जाति की अधिकता होने के कारण पार्टियों के प्रत्याशी भी अक्सर गोंड समुदाय से ही आते हैं। यही कारण है कि बीजेपी ने इस बार गोंड जाति से आशाराम नेताम पर भरोसा जताया है।

बीजेपी ने इस बार आशाराम नेताम को कांकेर विधानसभा सीट से टिकट दिया है। आशाराम नेताम कांकेर के बेवरती गांव के रहने वाले हैं। साल 1998 में भाजपा में प्राथमिक

सदस्यता लेने के बाद ग्रामीण मंडल मंत्री के पद पर 10 साल उन्होंने काम किया। साल 2010 में आशाराम को महामंत्री ग्रामीण का पद मिला। साल 2014 में मंडल अध्यक्ष बने फिर साल 2015 में जनपद सदस्य पद में निर्विरोध चुनाव जीते। साथ ही साल 2016 में तुलसी मानस प्रतिष्ठान ब्लॉक के अध्यक्ष रहे। साल 2020 में आशाराम कांकेर से अनुसूचित जनजाति मोर्चा के अध्यक्ष बने। फिलहाल कांकेर के गोंड आदिवासी समाज में सलाहकार के तौर पर आशाराम निर्वाचित हैं।

साल 2003 में बीजेपी के शासनकाल में कांकेर सीट पर शंकर धुर्वा ने जीत दर्ज किया था। इसके बाद से लगातार वह कांग्रेस के आला नेताओं की नजर में बने हुए थे। साल 2018 में उन्हें टिकट नहीं मिली। लेकिन वह जनता से संपर्क साधते रहे। इस बार फिर 2023 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने उनपर भरोसा जताया है।

कांकेर विधानसभा सीट पर वर्तमान में शिशुपाल सोरी विधायक हैं। साल 2018 में कांग्रेस ने कांकेर विधानसभा सीट से शिशुपाल को टिकट दिया। साल 2018 के विधानसभा चुनाव में शिशुपाल सोरी ने कांकेर विधानसभा सीट से जीत दर्ज की।

मतदाताओं की संख्या-कांकेर विधानसभा सीट में 1 लाख 59 हजार 632 से अधिक मतदाता हैं। इनमें पुरुष मतदाताओं की संख्या 77505 है, जबकि महिला मतदाता 81127 हैं। पूरे विधानसभा में महिला मतदाताओं की संख्या ज्यादा है। महिला मतदाता इस सीट पर चुनाव में निर्णायक की भूमिका निभाती आ रही है।

मुद्दे और समस्याएं- इस सीट पर आदिवासी वर्ग से जुड़ी समस्याएं मूल मुद्दा रही है। कांकेर विधानसभा के कई गांव अभी भी दूर्गम क्षेत्र में है। जिसके कारण पहुंचविहीन हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों की जरूरत है। लोग आज भी झिरिया का पानी पीने को मजबूर हैं। यहां पेयजल की समस्या ज्यादा है। यहां आज भी सुदूर अंचल के स्कूलों में शिक्षकों की कमी देखी जाती है। स्कूलें जर्जर है। स्वास्थ्य क्षेत्र में स्वास्थ्य केंद्र तो बनाए गए हैं, लेकिन सुविधाओं का आभाव है। पर्यटन के क्षेत्र में दुधावा जलाशय को तो निखारा गया, लेकिन कांकेर नगर का मुकुट कहलाने वाला गढ़िया पहाड़ पर आज भी काम नहीं हुआ है। यहां पर्यटन के दृष्टिकोण से काम नहीं हुआ है। नगर में पेयजल जैसी समस्यओं से लोग जूझ रहे हैं।

2018 विधानसभा चुनाव की तस्वीर- छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2018 में कांकेर विधानसभा में 100 फीसद वोटिंग हुई। 2018 के चुनाव में कांग्रेस के शिशुपाल शोरी को 69053 वोट मिले थे, जिसका वोट प्रतिशत 51 फीसदी था। बीजेपी के हीरा मरकाम को 49249 वोट मिले। वोट प्रतिशत 37 फीसदी था। गोंडवाना गणतंत्र पार्टी के हेमलाल मरकाम को 5 प्रतिशत, बीएसपी के रामसाय कोर्राम को 2 प्रतिशत, आप आदमी पार्टी के बीसल ध्रुव को 2 प्रतिशत, आईएनडी के दीपक कुमार उसेंडी को 2 प्रतिशत वोट मिल थे। 2 प्रतिशत वोट नोटा के भी पड़े थे।

कौन तय करता है हार और जीत- कांकेर विधानसभा सीट आदिवासी बाहुल्य होने के कारण यहां आदिवासी वोटरों का दबदबा है। यहां जीत और हार आदिवासी वोटर ही तय करते हैं। इस सीट का अधिकतर हिस्सा पहुंचविहीन होने के कारण यहां के लोग आंदोलन अधिक करते हैं। कांकेर विधानसभा सीट को आंदोलन का गढ़ भी कहा जाता है। छत्तीसगढ़ के बड़े आंदोलन यहीं से फलते-फूलते हैं। चाहे राम वन गमन पथ को लेकर विरोध हो, आदिवासियों का जन आंदोलन हो या पेसा कानून लागू करने का आंदोलन।

मध्य प्रदेश में टिकट को लेकर रार!

राजेंद्र कुमार

मध्य प्रदेश में सीटों के बंटवारे पर बात बिगड़ने के बाद कांग्रेस और समाजवादी पार्टी (सपा) के बीच जुबानी तल्खी बढ़ती जा रही है। अब दोनों ही दलों के बड़े नेता एक-दूसरे के खिलाफ तीखी टिप्पणी करने लगे हैं। गत शुक्रवार को मध्य प्रदेश में पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ और यूपी कांग्रेस के अध्यक्ष अजय राय ने सपा मुखिया अखिलेश यादव पर निजी टिप्पणियां कीं। तो शनिवार को सपा के राष्ट्रीय महासचिव प्रो। रामगोपाल ने सपा के खिलाफ अजय राय और कमलनाथ की टिप्पणी पर यह कह दिया कि कहने दो यार, हमें इनपर कुछ नहीं कहना है, छुटभैय्ये नेता हैं ये। सपा मुखिया अखिलेश तो पहले ही यह कह चुके हैं कि कांग्रेस इस तरह से व्यवहार करेगी तो उसके साथ कौन खड़ा होगा? फिलहाल कांग्रेस और सपा के बीच शुरू हुई इसी तीखी जुबानी जंग के राजनीतिक परिणाम पर यूपी में अब चिंतन होने लगा है। कहा जा रहा है कि मध्य प्रदेश से सीटों के तालमेल को लेकर शुरू हुए टकराहट का परिणाम पांच राज्यों में हो रहे विधानसभा चुनाव का परिणाम आने के बाद यूपी में दिखने लगेगा। आज भले ही अखिलेश यादव कांग्रेस पर धोखा देने का आरोप लगाते हुए सीटों के बंटवारे में कमलनाथ से लेकर दिग्विजय सिंह तक की भूमिका पर सवाल उठाए हैं। लेकिन अखिलेश को भी यह सोचना होगा कि जब इंडिया गठबंधन का गठन लोकसभा चुनाव मिलकर लड़ने के लिए हुआ था। तो उन्होंने क्यों मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के साथ सीटों के लिए बातचीत का सिलसिला शुरू किया। फिर जब यह सिलसिला शुरू हुआ तो उन्होने दस से अधिक सीटें छोड़ने के लिए कांग्रेस पर दबाव क्यों बनाया है। यह धमकी क्यों दी कि यूपी में सपा ही इंडिया गठबंधन से जुड़े दलों को सीटें बांटेगी। कहा जा रहा है कि अखिलेश यादव की दबाव डालने की इस राजनीति से ही मध्य प्रदेश में कांग्रेस के साथ सीटों के तालमेल की बात बिगड़ गई। तो अखिलेश यादव खफा हो गए और उन्होने बिना विचार किए हुए कांग्रेस नेताओं पर धोखा देने का आरोप लगा दिया। यदि उन्होंने संयम से काम लिया होता तो सपा और कांग्रेस के बीच जुबानी जंग ना शुरू होती। कांग्रेस ने सीनियर नेताओं ने अखिलेश यादव के इस आरोप को बेहद ही गंभीरता से लिया और अखिलेश यादव के आरोप का जवाब देने की छूट पार्टी नेताओं को दे दी। ताकि यह संदेश दिया जा सके कि अब कांग्रेस अपने हितैषी दलों के बेजा दबाव के सामने झुकेगी नहीं। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय कहते हैं कि उन्होंने अखिलेश यादव पर कोई निजी टिप्पणी नहीं की। हमें तो यहीं कहा था कि मध्य प्रदेश का मतदाता हाथ का पंजा जानता है, साइकिल नहीं। भाजपा को हराने के लिए सपा को कांग्रेस का समर्थन करना चाहिए। लेकिन सपा नेताओं ने राहुल गांधी सहित कांग्रेस के कई सीनियर नेताओं के खिलाफ निजी टिप्पणी की। तो कांग्रेस की तरफ से जवाब दिया गया। कहा गया अखिलेश यादव ने सैनिक स्कूल और ऑस्ट्रेलिया में पढ़ाई की है। लेकिन उनकी भाषा समाजवादी संस्कार की नहीं है। जिसने अपने पिता का सम्मान नहीं किया, उनके लिए हमारे जैसे आम लोग क्या हैं? सपा और अखिलेश, भाजपा से मिले हैं। इसके बाद शनिवार को प्रो रामगोपाल जो कांग्रेस के साथ मध्य प्रदेश में सीटों के तालमेल को लेकर बातचीत कर रहे थे ने हमारे नेताओं को छुटभैय्ये नेता कह रहे हैं। अब उनके इस कथन पर क्या कहा जाए। फिलहाल सपा और कांग्रेस के बीच हो रही जुबानी जंग के बीच आगामी लोकसभा चुनाव में दिनों दलों के बीच मिलकर चुनाव लड़ने की संभावनाओं पर दोनों दलों के नेता अभी कोई टिप्पणी करने को तैयार नहीं हैं। इन दलों के नेताओं का कहना है, इस मामले में अभी कुछ कहा नहीं जा सकता है। यूपी में कांग्रेस के कोई बड़ा आधार नहीं है। वर्ष 2009 के बाद कांग्रेस सूबे में दो से अधिक सीटें जीतने में सफल नहीं हुई है।

इजरायल-फिलिस्तीन की जुबानी जंग

संजय तिवारी

रविवार को गाजियाबाद के हिंडन एयरपोर्ट से भारतीय सेना के एक परिवहन विमान सी-17 ने मिस्र के लिए उड़ान भरी। इस विमान में कुल 38.5 टन राहत सामग्री एवं मेडिकल सहायता की चीजें थीं। ये राहत सामग्री गाजा पट्टी में बसे फिलिस्तीनियों के लिए भेजी गयी है जो मिस्र से गाजा पहुंचाई जाएगी। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने कहा, %भारत ने फिलस्तीन के लोगों को मानवीय सहायता भेजी है। इसमें लगभग 6.5 टन चिकित्सा सामग्री और 32 टन आपदा राहत सामग्री है।

संयुक्त राष्ट्र और विश्व स्वास्थ्य संगठन के आव्हान पर दुनियाभर के देश फिलिस्तीनी नागरिकों की मदद के लिए आगे आ रहे हैं। इसमें अब भारत ने मदद का हाथ आगे बढाया है। लेकिन दुर्भाग्य से भारत सरकार की ओर से फिलिस्तनियों के लिए भेजी गयी इस राहत की भारतीय मीडिया में ही कोई खास चर्चा नहीं हुई। इसके उलट जब प्रधानमंत्री मोदी ने हमास के आतंकवाद का शिकार हुए इजराइलियों के लिए सहानुभूति के दो शब्द बोल दिये तो हंगामा हो गया था।

इजरायल पर हमास के आतंकी हमले के बाद से ही भारत सरकार का दृष्टिकोण तुष्टीकरण की बजाय मानवीय है। अगर वर्तमान मोदी सरकार ने इजरायल पर हुए हमास के आतंकी हमले की निंदा की तो हिंसा पीड़ित फिलस्तीनियों के लिए भी मदद का हाथ आगे बढाया है। इसके अलावा प्रधानमंत्री मोदी ने फिलस्तीन के राष्ट्रपति महमूद अब्बास से भी फोन पर बात की थी। महमूद अब्बास से पीएम मोदी ने इजरायल फिलस्तीन पर भारत के पुराने रुख को दोहराते हुए कहा था कि उस क्षेत्र में हिंसा, आतंकवाद और बढती सुरक्षा चुनौतियों के प्रति हम सचेत हैं। इसके अलावा मोदी ने उन्हें इजरायल फिलिस्तीन को लेकर भारत के पुराने रुख के प्रति अपनी प्रतिबद्धता भी दोहराई। स्वाभाविक है राजनयिक रूप से भारत इजरायल फिलिस्तीन संबंधों को लेकर अपनी कटस्थ नीति पर ही कायम है। हां, पीएम मोदी ने इजरायल के संबंधों में नयी ताजगी पैदा की है। इजरायल भारत के साथ जटिल सुरक्षा उपायों में मददगार रहा है। खासकर मुंबई पर

हुए आतंकी हमले के बाद इजरायल और भारत के संबंधों में करीबी आयी है क्योंकि वहां हिन्दू और यहूदी दोनों एक साथ इस्लामिक आतंकवाद का शिकार हुए थे। आतंकवाद दोनों की साझी पीड़ा है जिसके कारण दोनों का एक साथ खड़ा होना जरूरी भी है और मजबूरी भी।

लेकिन राजनयिक संबंधों के इतर राजनीतिक दलों और सोशल मीडिया पर इजरायल फिलिस्तीन का बंटवारा भी भारत में गहरा हो चला है। राजनीति और सोशल मीडिया पर भी एक बड़ा वर्ग ऐसा पैदा हो गया है जो खुलकर इजरायल का समर्थन करता है। 7 अक्टूबर की सुबह जब हमास के हमलावरों ने इजरायल के निर्दोष नागरिकों को अपना निशाना बनाया था उसके बाद से ही सोशल मीडिया पर आई स्टैंड विद इजरायल का हैशटैग चल पड़ा था जो कई दिन तक चलता रहा।

सोशल मीडिया पर भारत से इजरायल के नागरिकों के पक्ष में इतनी तगड़ी आवाज उठी कि इजरायल के राजदूत ने पीड़ा की इस घड़ी में उनके साथ खड़े होने के लिए धन्यवाद भी दिया। इजरायल के विदेश मामलों के प्रभारी मंत्री एमिकाई चिकली ने भी सोशल मीडिया पर मिले भारतीयों के समर्थन पर धन्यवाद दिया और कहा कि इस्लामिक जिहादी आतंकवाद के खिलाफ हमारे साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होने के लिए हम भारत सरकार और भारतीय नागरिकों का धन्यवाद करते हैं।

भारत में ऐसा पहली बार हुआ कि सोशल मीडिया पर इजरायल के आतंक पीड़ित नागरिकों के पक्ष में ऐसी आवाज सुनाई दी। भारत में लंबे समय तक कांग्रेस का शासन रहा और बौद्धिक जगत में वामपंथी ही प्रभावी होते थे। राजनीतिक रूप से कांग्रेस के लिए यह कभी फायदेमंद नहीं था कि वह यहूदी इजराइलियों के साथ खड़ी दिखाई दे क्योंकि इससे उसका मुस्लिम वोटबैंक प्रभावित होता था। बौद्धिक जगत में जेएनयू जैसे शिक्षण संस्थानों में हमेशा फिलिस्तीन को पीड़ित और इजरायल को शोषक के रूप में प्रस्तुत किया था। जो पोस्टर, बैनर, रैली या मार्च होते थे वो इजरायल डाउन डाउन के नारे के साथ ही होते थे। जहां तक भारत के मुसलमानों का सवाल है तो वह बिला शक इजरायल के खिलाफ ही रहेगा क्योंकि उनकी मजहबी किताबों में उनको ऐसा करने के लिए कहा गया है। वो फिलस्तीनी मुसलमान को अपना भाई मानें न मानें, यहूदी को कसाई जरूर मानेंगे। इसलिए जब जब इजरायल और फिलस्तीन में टकराव होता था तो भारतीय मुस्लिम इजरायल को लानते भेजने, उनके खिलाफ रैलियां करके अपनी एकजुटता दिखाने का काम करते आये हैं।

इस बार भी अलीगढ मुस्लिम युनिवर्सिटी से लेकर हैदराबाद तक इजरायल के खिलाफ जहर उगलने से मुस्लिम पीछे नहीं हटे। हैदराबाद की एक मस्जिद के बाहर तो जमीन पर इजरायल और अमेरिका का झंडा बनाया गया था ताकि वो उस पर पैर रखकर मस्जिद के अंदर बाहर आएं जाएं। इसी तरह केरल की एक कंपनी मरियम अपारेल ने इजरायल के पुलिसवालों के लिए ड्रेस सप्लाई इसलिए रोक दी क्योंकि वह चाहती है कि इजरायल फिलीस्तिनियों पर हमले बंद करे। यह कंपनी एक क्रिश्चियन थॉमस ओलिक्कल की है। उनका कहना है कि वो दोनों ओर से होनेवाले खून खराबे के प्रति अपना विरोध दर्ज कराना चाहते हैं।

इसी तरह राजनीतिक दलों में भी इजरायल फिलिस्तीन का बंटवारा दिखता है। फिलिस्तीन के समर्थन में कांग्रेस ने प्रस्ताव पारित किया, वहीं पूर्व कांग्रेसी शरद पवार ने कहा कि इजरायल बाहरी है जिसने फिलिस्तीन पर कब्जा कर लिया है। इसीलिए जवाहरलाल नेहरु से लेकर वाजपेयी तक हर प्रधानमंत्री ने फिलस्तीन का समर्थन किया था। लेकिन लगता है पीएम मोदी ने भारत का स्टैंड बदल दिया है। हालांकि उनके बयान पर बहुत राजनीतिक विवाद हुआ और भाजपा ने उन्हें याद दिलाया कि पीएम मोदी ने इजरायल पर हमास के आकंकवादी हमले की निंदा किया है, तो क्या पवार आतंकवादी हमलों को भी सही मानते हैं।

असम के बीजेपी मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वसरमा तो दो कदम और आगे बढ गये। उन्होंने कहा कि पवार साहब को फिलिस्तिनियों से इतनी हमदर्दी है तो अपनी बेटी को उनकी मदद के लिए भेज दें। शरद पवार के बयान की आलोचना हुई तो हेमंत विस्वसरमा के बयान की भी निंदा हुई। इस बीच 21 अक्टूबर को श्रीनगर में मुसलमानों ने इजरायल के विरोध और फिलस्तीनियों के समर्थन में एक रैली ही निकाल दी। उन्होंने फिलस्तीन पर इजराइली कार्रवाई की तो खूब आलोचना की लेकिन इजरायल पर हमास के आतंकी हमले पर एक शब्द नहीं बोला।

स्वाभाविक है आज के भारत में अब फिलस्तीन के मुखर समर्थक हैं तो इजरायल के भी समर्थक हैं जो उसके साथ खड़े होने में कोई संकोच नहीं करते। हालांकि ऐसे लोगों के लिए कोई मजहबी मजबूरी नहीं है कि वो इजरायल का समर्थन करें जैसे मुस्लिम मजहब के नाम पर फिलिस्तीन का समर्थन करते हैं। लेकिन संभवतः इस्लामिक आतंकवाद ने ऐसे लोगों के मन में यहूदियों के लिए सहानुभूति पैदा कर दी है। भारत एक लोकतंत्र है और कोई किसी का समर्थन या विरोध कर सकता है। सबको अभिव्यक्ति की आजादी है। लेकिन व्यावहारिक रूप से देखें तो एक भारतीय के रूप में हमारे लिए यह बिल्कुल जरूरी नहीं है कि फिलिस्तीन इजरायल की जुबानी जंग भारत में लड़ें। विदेशी मामले सरकार की विदेश नीति का हिस्सा होते हैं और यह काम उन्हीं को करने देना चाहिए। लेकिन जब आप भारत जैसे उदार लोकतंत्र में हों और आपके पास अभिव्यक्ति के लिए विचार ही नहीं प्लेटफॉर्म भी हो तो फिर आपको अपनी अभिव्यक्ति से कौन रोक सकता है?

भारतीय ज्ञान परंपरा....

महोपनिषद् (भाग-23)

गतांक से आगे...

इसके पश्चात् स्वप्न जाग्रत अवस्था वह है, जिसमें पूरे विकास को न प्राप्त हुआ स्वप्न जो अनेक क्रिया-कलापों द्वारा देर तक टिके तथा जो जाग्रत् की तरह ही उत्पन्न हो अथवा जागते हुए भी स्वप्न दिखाई दे। इन छः अवस्थाओं को पारकर जब जीव की जड़ात्मक स्थिति में प्रतिष्ठापना होती है, उस बीते हुए दुःखबोध से युक्त अवस्था को ही सुषुप्ति कहा गया है। उस स्थिति में यह संसार आन्तरिक अंधकार में विलीन हो जाता है।

हे ब्रह्मन् ! मैंने तुम्हारे प्रति अज्ञानजनित मोह की सात भूमिकाओं को बतलाया। इसमें से प्रत्येक भूमिका विभिन्न ऐश्वर्ययुक्त, विभिन्न अवस्थाओं के रूप में विविध रूप धारण करने वाली है। हे निष्पाप पुत्र ! अब मैं तुम्हें ज्ञान की जो सात भूमिकायें हैं, उन्हें सुनाता हूँ, जिन्हें जान लेने पर मनुष्य मोहपङ्क में नहीं फँसता। ज्ञानीजनों ने योग भूमिकाओं के बहुविध भेद बतलाये हैं, परन्तु मैं तो इन सात भूमिकाओं को ही विशेष लाभप्रद मानता हूँ। इस प्रकार इन सात भूमिकाओं द्वारा उत्पन्न होने वाला अवबोध ही ज्ञान कहलाता है। इन सात भूमिकाओं के अन्तर्गत होने वाली मुक्ति ज्ञेय कही जाती है।

पहली ज्ञान भूमिका को शुभेच्छा नाम दिया गया है। दूसरी विचारणा तीसरी तनुमानसी, चौथी सत्त्वापत्ति, पाँचवीं असंसक्ति, छठवीं पदार्थभावना तथा सातवीं तुर्यगा है। इन भूमिकाओं में पुनः शोकाकुल न होने देने वाली मुक्ति निहित है। अब तुम इन भूमिकाओं का विस्तार सुनो। मैं भ्रमितमति क्यों हूँ? शास्त्र तथा श्रेष्ठ जनों से मैं इस सम्बन्ध में चर्चा करूँगा- इस प्रकार से वैराग्य धारण करने से पूर्व जो अभिलाषा जागती है, उसे ज्ञानियों ने शुभेच्छा नाम दिया है। इसके बाद शास्त्र तथा श्रेष्ठ जनों के सान्निध्य लाभ से अध्ययन आदि के द्वारा अभ्यास एवं वैराग्य भावना से सदाचार की प्रवृत्तियों का प्राकट्य होता है, उसे ही विचारणा नाम दिया है।

शुभेच्छा और विचारणा द्वारा इन्द्रिय-विषयों के प्रति आसक्ति जब क्षीण हो जाती है, ऐसी अवस्था को तनुमानसी कहा गया है। इन तीन भूमिकाओं के अभ्यास द्वारा वैराग्य भाव के प्राबल्य से जब चित्त निर्मल सत्त्वरूप में स्थित होता है, इसी अवस्था को सत्त्वापत्ति कहते हैं।

इन सभी भूमिकाओं का अभ्यास हो जाने पर चमकने वाली संसर्गहीन कला सत्त्वारूढ़ होती है, वही असंसक्ति कहलाती है। इन पाँचों भूमिकाओं के अभ्यास के फलस्वरूप अपनी चेतना में ही रमते रहने तथा बाह्याभ्यन्तर पदार्थों की भावना के नष्ट होने पर पदार्थ भावना नामक छठी भूमिका में पदार्पण होता है। इन छः भूमियों के परिपक्व हो जाने पर भेद-बुद्धि का क्षय हो जाता है और आत्म भाव में ही साधक की दृढ़निष्ठा हो जाती है, यही तुर्यगा अवस्था कही गयी है। इस तुर्यावस्था को जीवन्मुक्त पुरुष ही उपलब्ध कर पाते हैं। इसके बाद तुर्यातीत अवस्था है, जो विदेह मुक्ति का विषय है।

क्रमशः ...

विजयादशमी

शुभा दुबे

आश्विन मास के शुक्ल पक्ष को दशहरा का त्योहार मनाया जाता है। मां भगवती के विजया स्वरूप पर इसे विजयादशमी भी कहा है। इसी दिन भगवान श्रीराम ने रावण का वध कर लंका पर विजय प्राप्त की थी इसलिए भी इस पर्व को विजयादशमी कहा जाता है। हिन्दुओं का यह प्रमुख त्योहार असत्य पर सत्य की जीत तथा बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में भी मनाया जाता है। कहा जाता है कि इस दिन ग्रह-नक्षत्रों की संयोग ऐसे होते हैं जिससे किये जाने वाले काम में विजय निश्चित होती है। भारतीय इतिहास में ऐसे अनेकों उदाहरण हैं जब हिन्दू राजा इस दिन विजय के लिए प्रस्थान किया करते थे। मराठा रत्न शिवाजी ने भी औरंगजेब के विरुद्ध इसी दिन प्रस्थान करके हिन्दू धर्म का रक्षण किया था।

माना जाता है कि तारा उदय होने के साथ विजय नामक काल होता है। यह काल सर्वकार्य सिद्धिदायक होता है। भगवान श्रीराम ने इसी विजय काल में लंका पर चढ़ाई करके रावण को परास्त किया था। दशहरा वर्ष की तीन अत्यन्त शुभ तिथियों में से भी एक माना गया है। इस दिन लोग नया कार्य भी प्रारम्भ करते हैं साथ ही क्षत्रिय वर्ग के लोगों की ओर से इस दिन शस्त्र-पूजा किये जाने की परम्परा है। इस दिन ब्राम्हण सरस्वती पूजन तथा वैश्य बही पूजन करते

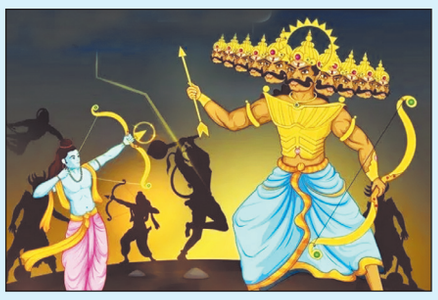

हैं। पुराणों में कहा गया है कि दशहरा का पर्व दस प्रकार के पापों- काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी के परित्याग की सद्प्रेरणा प्रदान करता है।

दशहरा पर्व की धूम नवरात्रि पर्व के शुरू होने के साथ ही शुरू हो जाती है और इन नौ दिनों में विभिन्न जगहों पर रामलीलाओं का मंचन किया जाता है। दसवें दिन भव्य झांकियों और मेलों के आयोजन के पश्चात रावण के पुतले का दहन कर बुराई के खात्मे का संदेश दिया जाता है। रावण के पुतले के साथ वैसे तो मेघनाथ और कुम्भकरण के पुतले का ही दहन किया जाता है लेकिन पिछले कुछ वर्षों से लोग सामाजिक बुराइयों तथा अन्य मुद्दों से संबंधित पुतले भी फूंकते हैं। कई रामलीलाओं में महंगाई और भ्रष्टाचार के पुतले भी फूंके जाते हैं।

एक बार माता पार्वतीजी ने भगवान शिवजी से दशहरे के त्योहार के फल के बारे में पूछा। शिवजी ने उत्तर दिया कि आश्विन शुक्ल दशमी को सायंकाल में तारा उदय होने के समय विजय नामक काल होता है जो सब इच्छाओं को पूर्ण करने वाला होता है। इस दिन यदि श्रवण नक्षत्र का योग हो तो और भी शुभ है। भगवान श्रीराम ने इसी विजय काल में लंका पर चढ़ाई करके रावण को परास्त किया था। इसी काल में शमी वृक्ष ने अर्जुन का गांडीव नामक धनुष धारण किया था।

एक बार युधिष्ठिर के पूछने पर भगवान श्रीकृष्णजी ने उन्हें बताया कि विजयादशमी के दिन राजा को स्वयं अलंकृत होकर अपने दासों और हाथी-घोड़ों को सजाना चाहिए। उस दिन अपने पुरोहित को साथ लेकर पूर्व दिशा में प्रस्थान करके दूसरे राजा की सीमा में प्रवेश करना चाहिए तथा वहां वास्तु पूजा करके अष्ट दिग्पालों तथा पार्थ देवता की वैदिक मंत्रों से पूजा करनी चाहिए। शत्रु की मूर्ति अथवा पुतला बनाकर उसकी छाती में बाण मारना चाहिए तथा पुरोहित वेद मंत्रों का उच्चारण करें। ब्राह्मणों की पूजा करके हाथी, घोड़ा, अस्त्र, शस्त्र का निरीक्षण करना चाहिए। जो राजा इस विधि से विजय प्राप्त करता है वह सदा अपने शत्रु पर विजय प्राप्त करता है।

क्या यूपी में इंडिया गठबंधन की गांठ खुल गई है

नदीम

मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव में गठबंधन की बिसात पर कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के बीच बाहें चढ़ गई हैं। समाजवादी पार्टी मध्य प्रदेश में कांग्रेस से गठबंधन में सीटें चाह रही थी। शुरुआत में छह सीटों पर बात बनती दिख भी रही थी, लेकिन बाद में बात बिगड़ गई और फिर अखिलेश यादव ने सार्वजनिक रूप से कांग्रेस की लानत-मलामत करने में कोई गुरेज नहीं दिखाया। उन्होंने कहा- अगर हमें पता होता कि इंडिया गठबंधन विधानसभा स्तर पर नहीं है, तो हमारे नेता मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस के नेताओं से नहीं मिलते। हम उनके फोन भी नहीं उठाते।

शनिवार को राहुल गांधी को मामले में हस्तक्षेप करना पड़ा। उन्होंने सुलह-सपाटे के लिए अखिलेश यादव को भी संदेश भिजवाया और अपने पार्टीजन को भी अनावश्यक बयानबाजी से बचने को कहा। अखिलेश भी नरम पड़ते दिखाई पड़े। लेकिन उनका वह सवाल अपनी जगह कायम है कि अगर इंडिया विधानसभा चुनाव के लिए नहीं है तो उनकी पार्टी के नेताओं को मध्य प्रदेश पर बात करने के लिए क्यों बुलाया गया था? वैसे अगर मध्य प्रदेश को लेकर सीट शेयरिंग का कोई फॉर्म्युला निकल आता है तो भी इंडिया की राह लोकसभा चुनाव के लिए आसान नहीं जान पड़ती। यूपी से इंडिया के लिए अगर बसपा के मुकाबले समाजवादी पार्टी को तरजीह देने का फैसला हुआ तो उसकी दो बड़ी वजहें थीं। एक तो यूपी में समाजवादी पार्टी का मुख्य विपक्षी दल होना और दूसरे यूपी में तीसरी सबसे मजबूत ताकत समझी जाने वाली बसपा का बहुत विश्वसनीय न होना। लेकिन जहां तक अखिलेश यादव के इंडिया के साथ जाने

का सवाल है तो उसकी वजह राष्ट्रीय राजनीति में अपनी दखलंदाजी बनाए रखना है, नहीं तो वोटों के लिहाज से इंडिया उन्हें बहुत फायदे का जरिया कभी नहीं लगा। उनके अनुभवों की रोशनी में इसे समझा जा सकता है।

2017 विधानसभा चुनाव में कांग्रेस और समाजवादी पार्टी का गठबंधन था। समाजवादी पार्टी ने कांग्रेस के पक्ष में कई ऐसी सीटें भी छोड़ दी थीं, जिन पर उसने पिछले चुनाव में जीत हासिल की थी। प्रशांत किशोर उस चुनाव के रणनीतिकार थे लेकिन समाजवादी पार्टी को फायदा होने के बजाय नुकसान हुआ।

2012 विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के अलग लड़ने से उसके उम्मीदवारों ने अपर कास्ट के वोट में जो भी थोड़ी-बहुत सेंध लगाई थी, उससे सीधे तौर पर बीजेपी को नुकसान हुआ था और समाजवादी पार्टी कई सीटें नजदीकी मुकाबले में बीजेपी से जीत गई थी। 2017 में जब कांग्रेस और समाजवादी पार्टी एक होकर लड़े तो कांग्रेस को मिलने वाले परंपरागत अपर कास्ट के वोट भी बीजेपी के साथ चले गए।

2019 लोकसभा चुनाव में बसपा और समाजवादी पार्टी का गठबंधन हुआ, लेकिन इस गठबंधन से भी समाजवादी पार्टी को कोई फायदा नहीं हुआ। उस गठबंधन से अगर कोई फायदे में रहा तो वह थी बसपा। उसने समाजवादी पार्टी के मुकाबले दो गुनी ज्यादा सीटें पाईं।

इसीलिए इंडिया का हिस्सा होने पर भी अखिलेश यादव कई मौकों पर यह कहते सुने गए कि उन्हें तो अपने ही वोटबैंक का सहारा है। पार्टी कार्यकर्ताओं की बैठकों में भी उन्होंने यही कहा कि यूपी में कोई भी गठबंधन बन जाए, वोटों का बंदोबस्त समाजवादी पार्टी को ही करना रहेगा। इसलिए कार्यकर्ताओं को पीडीए (पिछड़ा-दलित-अल्पसंख्यक) पर ही काम करते रहने होगा। 2017 और 2019 में गठबंधन में सीट शेयरिंग से भी समाजवादी पार्टी अपना नुकसान देखती रही है। 2017 में कांग्रेस ने उससे पिछले चुनाव में जीती हुई कई सीटें ले लीं थी। 2019 में बसपा ने तो उससे आधे से अधिक सीटें ले ली थीं। समाजवादी पार्टी के हिस्से में जो सीटें आई थीं, उनमें से कई बीजेपी का गढ़ कही जाने वाली सीट थीं, जिन पर चुनाव पूर्व ही हार तय मान ली गई थी। समाजवादी पार्टी इस बार बहुत ज्यादा सीट छोड़ने की पक्षधर नहीं है। राष्ट्रीय लोकदल से भी इस मुद्दे पर पेच फंस सकता है, जो कि अभी तक समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन का हिस्सा है।

यूपी में कांग्रेस अकेले कोई ताकत नहीं है। अगर समाजवादी पार्टी उसके साथ नहीं रहती है तो उसे बसपा के साथ जाना ही होगा। एक गठबंधन की संभावना यूपी में शुरू से देखी जा रही, वह है बसपा+ कांग्रेस+ आरएलडी। लेकिन यहां भी कुछ दिक्कतें हैं।

बसपा किसी भी गठबंधन में जाने से पहले सहयोगियों के वोट और उनके वोट ट्रांसफर की हैसियत को परखना चाहती है। कांग्रेस अभी तक यह साबित करने की स्थिति में नहीं है कि उसके पास मोटे तौर पर कौन सा वोट है। वह संभावनाओं पर अपनी दावेदारी पेश कर रही है कि इस बार मुसलमान बीजेपी को हराने के लिए समाजवादी पार्टी के मुकाबले कांग्रेस को वोट करेगा क्योंकि उसने समाजवादी पार्टी को पिछले कई चुनावों में लगातार वोट देकर देख लिया कि उसके जरिए बीजेपी को नहीं हराया जा सकता है। इसके अलावा वह 2009 का उदाहरण दे रही है, जब उसे यूपी से अचानक 21 लोकसभा सीटें मिल गई थीं। यहां समझना जरूरी है कि यूपी में मुसलमान वोटर कांग्रेस के पक्ष में उसी सूरत में झुक सकता है, जब उसे वह बीजेपी को हराने की स्थिति में दिखेगी। यह तभी मुमकिन है जब कांग्रेस के पक्ष में कोई हवा हो। रही बात 2009 के नतीजों की तो एक बात यह समझने की है कि उस समय 2004 से केंद्र में कांग्रेस की सरकार चल रही थी। सरकार होने का मतलब है अपना अलग दबदबा होना। बेनी प्रसाद वर्मा समाजवादी पार्टी में अपने अपमान का मुद्दा बनाकर कांग्रेस में शामिल हुए थे, अवध बेल्ट में उनके अपमान का बदला लेने के लिए कुर्मी वोटर कांग्रेस के साथ आ गया था। उधर, कल्याण सिंह को साथ में लेने के सवाल पर आजम खान की समाजवादी पार्टी से बगावत ने भी कांग्रेस की मदद कर दी थी।

हिन्द स्वराज्य

शिक्षा (भाग-4)

गतांक से आगे...

प्रश्न - तब क्या मेरा यह समझना ठीक है कि आप स्वराज्य के लिए अंग्रेजी शिक्षा का कोई उपयोग नहीं मानते?

उत्तर- मेरा जवाब हाँ और नहीं दोनों है। करोड़ों लोगों को अंग्रेजी की शिक्षा देना उन्हें गुलामी में डालने जैसा है। मेकॉले ने शिक्षा की जो बुनियाद डाली, वह सचमुच गुलामी की बुनियाद थी। उसने इसी इदारे से अपनी योजना बनायी थी, ऐसा मैं नहीं सुझाना चाहता। लेकिन उसके काम का नतीजा यही निकला है। यह कितने दुख की बात है कि हम स्वराज्य की बात भी परायी भाषा में करते हैं? जिस शिक्षा को अंग्रेजों ने ठुकरा दिया है वह हमारा सिंगार बनती है, यह जानने लायक है। उन्हीं के विद्वान् कहते रहते हैं कि उसमें यह अच्छा नहीं है, वह अच्छा नहीं है। वे जिसे भूल से गये हैं उसी से हम अपने अज्ञान के कारण चिपके रहते हैं। उनमें अपनी-अपनी भाषा की उन्नति करने की कोशिश चल रही है। वेल्स इंग्लैण्ड का एक छोटा सा परगना है; उसकी भाषा धूल जैसी नगण्य है। ऐसी भाषा का अब जीर्णोद्धार हो रहा है। वेल्स के बच्चे वेल्स भाषा में ही बोलें, ऐसी कोशिश वहाँ चल रही है। इसमें इंग्लैण्ड के खजांची लॉयड जॉर्ज बड़ा हिस्सा लेते हैं। और हमारी दशा कैसी है? हम एक-दूसरे को पत्र लिखते हैं तब गलत अंग्रेजी में लिखते हैं। एक साधारण एम. ए. पास आदमी भी ऐसी गलत अंग्रेजी से बचा नहीं होता। हमारे अच्छे-से-अच्छे विचार प्रकट करने का ज़रिया है। अंग्रेजी; हमारी कांग्रेस का कारोबार भी अंग्रेजी में चलता है। अगर ऐसा लंबे अरसे तक चला, तो मेरा मानना है कि आने वाली पीढ़ी हमारा तिरस्कार करेगी और उसका शाप हमारी आत्मा को लगेगा। आपको समझना चाहिए कि अंग्रेजी शिक्षा लेकर हमने अपने राष्ट्र को गुलाम बनाया है। अंग्रेजी शिक्षा से दूध, राग, जुल्म वगैरा बढ़े हैं। अंग्रेजी शिक्षा पाये हुए लोगों ने प्रजा को ठगने में, उसे परेशान करने में कुछ भी उठा नहीं रखा है। अब अगर हम अंग्रेजी शिक्षा पाये हुए लोग उसके लिए कुछ करते हैं, तो उसका हम पर जो कर्ज चढ़ा हुआ है उसका कुछ हिस्सा ही हम अदा करते हैं।

क्रमशः ...

भाजपा नेतृत्व ने राजस्थान में अपनी गलती सुधारी

अजय सेतिया

राजस्थान की तस्वीर अब काफी हद तक साफ़ होने लगी है। कांग्रेस ने अभी ज्यादा टिकटें नहीं बांटी हैं, लेकिन भाजपा ने साठ प्रतिशत से ज्यादा टिकटें बांट दी हैं। पितृपक्ष में 41 उम्मीदवारों की पहली सूची जारी करके भाजपा ने जो गलती की थी, उसे नवरात्रों में दूसरी और बड़ी सूची जारी करके सुधारने की कोशिश की है। कांग्रेस ने पितृपक्ष में उम्मीदवारों की लिस्ट जारी करने की गलती नहीं की।

भाजपा की दूसरी सूची से जाहिर हो गया कि राजस्थान में वसुंधरा राजे अभी भी एक बड़ा फेक्टर है, पांच साल की कोशिशों के बाद भी भाजपा का शीर्ष नेतृत्व उनका कोई विकल्प नहीं ढूंढ पाया है। लेकिन पहली सूची में उनके छह सात समर्थकों का टिकट काट कर जो विरोध झेला, उसके बाद भाजपा आलाकमान को समझ आ गया कि चुनाव जीतना है तो अपने व्यर्थ के अहंकार को किनारे रखना पड़ेगा।

यह बात सच है कि पहली लिस्ट तालाब में कंकड़ था, ताकि पता चले कि उसकी लहरें कितनी दूर तक जाती हैं। वरना क्या यह आश्चर्यजनक नहीं था कि पहली सूची में वसुंधरा राजे, राजेन्द्र राठौड़ और सतीश पूनिया के टिकटों का एलान नहीं किया गया था। जबकि हर राजनीतिक दल अपनी पहली सूची में बड़े नेताओं के टिकटों का एलान तो करता ही है। कांग्रेस ने सिर्फ 33 उम्मीदवारों की पहली सूची में अशोक गहलोत, सचिन पायलट, प्रदेश अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा और विधानसभा स्पीकर सीपी जोशी इन चारों बड़े नेताओं को टिकट का एलान किया।

भाजपा की पहली सूची आने के बाद दो चार सीटों को छोड़ कर सभी पर असंतोष के स्वर उभरे थे। सबसे बड़ी वजह सात सांसदों को टिकट देना था। कई जिलों में स्थानीय टिकट दावेदारों ने पार्टी के आधिकारिक उम्मीदवारों के खिलाफ निर्दलीय चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी है। पूर्व विधायक राजपाल सिंह शेखावत ने झोटवाडा, अनिता सिंह गुर्जर ने नगर और पूर्व मंत्री भवानी सिंह राजावत ने लाडपुरा से निर्दलीय चुनाव लड़ने की घोषणा की है, ये तीनों ही वसुंधरा राजे के करीबी माने जाते हैं, और इन सभी को टिकट नहीं दिया गया।

दूसरी लिस्ट में वसुंधरा राजे के कम से कम 30 समर्थकों को टिकट दिए जाने की बात सामने आई है, जिनमें प्रताप सिंह सिंघवी, काली चरण सराफ, सिद्धि कुमारी, सामाराम गरासिया, कैलाश वर्मा, अनिता भदेल, श्रीचंद कृपलानी, नरपत राजवी, ओटाराम देवासी, गुरदीप शाहपीणी, रामस्वरूप लांबा, मंजू बाघमार, संतोष

अहलावत, गोविंद प्रसाद, नरेंद्र नागर, बिहारीलाल बिश्नोई, कालूराम मेघवाल, नरेंद्र नागर, कैलाश मीणा, ओटाराम देवासी, पुष्पेंद्र सिंह, गोपीचंद मीणा, छगन सिंह, संतोष बावरी, शोभा चौहान, जगसीराम कोली, अभिषेक मटोरिया, रामस्वरूप लांबा और मानसिंह किनसरिया के नाम शामिल है।

यह बदलाव इस बात का संकेत है कि भारतीय जनता पार्टी को एहसास हो गया है कि अगर वसुंधरा राजे ने मन से प्रचार नहीं किया तो पार्टी का बेड़ा पार होना मुश्किल है। जिस तरह पहले वसुंधरा राजे को अपमानित करके मोदी का चेहरा सामने रख कर चुनाव लड़ने की बात की जा रही थी, उस पर भी अब ब्रेक लग गया है। क्योंकि संघ की तरफ से उन्हें उदाहरण दे कर समझाया गया कि राज्यों के नेताओं की उपेक्षा से पार्टी को लाभ के बजाए नुकसान होगा।

2018 के विधानसभा चुनावों में भी मोदी का चेहरा सामने रखा गया था, लेकिन राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और कर्नाटक में भाजपा हारी। इसके बाद 2019 में हरियाणा में बहुमत नहीं मिला, तो 2020 में दिल्ली, 2022 में हिमाचल और 2023 में कर्नाटक हारी। इसलिए मोदी ने खुद जयपुर की रैली में कह दिया कि एक ही चेहरा सामने होगा और वह कमल का चेहरा होगा। यह अपने पहले के स्टैंड से पीछे हटने का पहला संकेत था। और वह मजबूरी में लिया गया स्टैंड था, वह मजबूरी उनके चेहरे से झलक भी रही थी।

25 सितंबर को मोदी के जयपुर के भाषण में वह जोश और उत्साह नहीं था, जो उसी दिन मध्यप्रदेश में हुई रैली में था या अगले दिन छत्तीसगढ़ में हुई रैली में था। 25 सितंबर को जयपुर में उनका भाषण उन दबावों का संकेत भी दे रहा था। हालांकि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की राजस्थान इकाई की वसुंधरा राजे से ज्यादातर समय नाराजगी ही रही है लेकिन इस बार संघ का स्थानीय नेतृत्व वसुंधरा राजे के मुताबिक़ टिकटें देने की पैरवी कर रहा था। दूसरी सूची ने यह स्पष्ट कर दिया कि आला कमान ने हवाई नेताओं की सिफारिशों को पूरी तरह नजरअंदाज करके जमीनी रिपोर्ट को ध्यान में रख कर ही टिकट बांटे हैं।

भाजपा का आंतरिक सर्वे बता रहा था कि बिना वसुंधरा के भी भाजपा विधानसभा चुनाव जीत रही है, लेकिन ऐसे ही तथाकथित सर्वे पिछले पांच सालों में आठ राज्यों में भाजपा की लुटिया डुबो चुके हैं। प्रदेश में वसुंधरा राजे के विरोधी भाजपा नेता भी मानते हैं कि वसुंधरा की नाराजगी चुनाव नतीजों पर उलटा असर डाल सकती है। क्योंकि वसुंधरा राजे महिलाओं में बहुत लोकप्रिय हैं और अगर उनकी उपेक्षा का संदेश चला गया तो भाजपा जीती हुई बाजी हार सकती है।

वसुंधरा राजे की भाजपा में चल रही उपेक्षा का फायदा उठा कर ही अशोक गहलोत ने महिलाओं को कांग्रेस के पक्ष में करने के लिए दो महीने पहले ही रणनीति बनाना शुरू कर दिया था। उन्होंने सखी सम्मेलन में राजीविका सखियों के लिए सात घोषणाएं की, जिसमें उनका मानदेय 15 प्रतिशत बढ़ाने, 1000 करोड़ का ब्याज मुक्त कृषि ऋण देने, स्कूटी वितरण में ब्याज मुक्त ऋण देने, सेनेट्री नेपकिन की सप्लाई और उत्पादन राजीविका से करने और गांवो में इंदिरा रसोई योजना का संचालन राजीविका की महिलाओं को देने की घोषणा की थी।

भाजपा के प्रदेश नेताओं को एहसास हो गया था कि अगर जनता में वसुंधरा की उपेक्षा का संदेश चला गया तो महिलाएं बड़ी तादाद में कांग्रेस के पक्ष में वोटिंग कर सकती हैं। इसलिए उन्होंने केन्द्रीय नेताओं को दबी जुबान में कहना शुरू कर दिया था कि अगर वसुंधरा को मुख्यमंत्री का चेहरा बनाया जाता है तो भाजपा को 130 से ज्यादा सीटें मिल सकती हैं और बिना वसुंधरा के भाजपा 105 सीटों तक तो पहुंच ही जाएगी।

कुल मिलाकर दिल्ली में बैठ कर राजनीति करने वालों को जमीनी हकीकत बता दी गई थी कि अशोक गहलोत से मुकाबला इस बार इतना आसान भी नहीं है, जितना दिल्ली में बैठे नेता अपने चिरकुटों के माध्यम से समझ रहे हैं। इसीलिए दूसरी सूची से स्थिति बदल गई है। अब चुनाव के बाद मोदी क्या रूख अपनाएंगे, यह तो नहीं कहा जा सकता, क्योंकि राजनीति में कुछ भी कभी भी संभव है। लेकिन भाजपा की दूसरी सूची जारी होने के बाद वसुंधरा राजे का चेहरा उभर कर सामने आ गया है, और जो अब तक खुद को भावी मुख्यमंत्री समझ रहे थे, उनके चेहरे मुरझा गए हैं।

वसुंधरा और गहलोत अपनी अपनी पार्टी पर भारी!

अंकित सिंह

राजस्थान विधानसभा चुनाव को देखते हुए दो नेताओं पर सबकी नजर है। एक कांग्रेस के अशोक गहलोत है जो वर्तमान में राज्य के मुख्यमंत्री हैं और एक भाजपा की वसुंधरा राजे हैं जो राजस्थान में दो बार मुख्यमंत्री रह चुकी हैं। पिछले 20 वर्षों के इतिहास को देखें तो इन्हीं दोनों के इर्द-गिर्द राज्य की राजनीति घूमती रही है। हालांकि, 2023 का विधानसभा चुनाव इन दोनों नेताओं के लिए किसी बड़ी परीक्षा से काम नहीं है और अगर हम दूसरे शब्दों में कहें तो शायद इन दोनों नेताओं के लिए यह आखरी सियासी दांव भी होगा। दोनों नेताओं को पार्टी के भीतर भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है और वर्तमान में इन दोनों के समक्ष पार्टी नेतृत्व के फैसले को भी स्वीकार करने की एक बड़ी चुनौती है। सबसे पहले बात वसुंधरा राजे की करें तो 2018 के विधानसभा चुनाव में मिली हार के बाद कहीं ना कहीं वह पार्टी में हाशिए पर जाती दिखीं। जब भाजपा ने सतीश पूनिया को प्रदेश अध्यक्ष बनाया तब भी वसुंधरा राजे नाराज हुई थीं। वसुंधरा राजे के विरोधी गुट को प्रदेश अध्यक्ष कि जिम्मेदारी सौंप कर भाजपा ने भी कोई बड़ा संदेश देने की कोशिश की। हालांकि पार्टी का यह दांव कामयाब नहीं हो सका। फिलहाल राजस्थान में वसुंधरा के भविष्य पर अटकलें का दौर जारी है। हालांकि, वसुंधरा राजे को पार्टी ने उनके पारंपरिक सीट झालरापाटन से मैदान में उतार दिया है। लेकिन उन्हें मुख्यमंत्री का उम्मीदवार नहीं बनाया है। पार्टी सामूहिक नेतृत्व पर जोर दे रही है। हालांकि फिलहाल उन्हें पार्टी की ओर से भरोसे में लिया जा रहा है। अशोक गहलोत के लिए राजस्थान में पिछले 5 सालों में कई चुनौतियां आई। सत्ता के शीर्ष पर रहने के बावजूद भी उन्होंने पार्टी के भीतर के विरोध का भी सामना किया। सचिन पायलट जैसे नेता लगातार उन्हें चुनौती दे रहे थे। हालांकि, अशोक गहलोत को विधायकों का समर्थन लगातार मिलता रहा। यही कारण है कि पार्टी आलाकमान भी चाह कर भी कुछ बड़े कदम नहीं उठा सका। वर्तमान में देखें तो पार्टी ने सचिन पायलट और अशोक गहलोत के बीच के मनमुटाव को खत्म करने की कोशिश की। इसी से जुड़े एक सवाल पर अशोक गहलोत ने कहा कि उन्होंने पायलट पक्ष के किसी भी उम्मीदवार का विरोध नहीं किया। हालांकि अशोक गहलोत के तीन करीबी नेताओं को अभी भी आलाकमान ने टिकट से दूर रखा है। ये तीन नाम शांति धारीवाल, महेश जोशी और धर्मेंद्र राठौर के हैं। राजस्थान में पिछले तीन-चार सालों के सियासत में इन तीनों नाम की चर्चा खूब रही है। गहलोत हर हाल में राजस्थान में सत्ता की कमान अपने हाथ में रखना चाहते हैं। हालांकि इस बार कांग्रेस की ओर से भी उन्हें मुख्यमंत्री का उम्मीदवार नहीं बनाया गया है। गहलोत और राजे में यह भी समानता है कि पिछले पांच वर्षों में उन्होंने अपने-अपने आलाकमानों की नापसंदगी को किस तरह दृढ़ता से झेला है। यह दोनों नेता भले ही सियासी विरोधी हैं, लेकिन इनके साथ होने के भी खूब चर्चे होते हैं। याद करिए कुछ दिन पहले अशोक गहलोत ने कहा था कि वसुंधरा राजे की ही वजह से उनकी सरकार बच पाई थी। दूसरी ओर देखे तो सचिन पायलट ने पिछले दिनों एक विरोध प्रदर्शन किया था। उन्होंने अशोक गहलोत की ही सरकार को घेरते हुए मांग की थी कि वसुंधरा राजे के कार्यकाल के दौरान हुए भ्रष्टाचार की जांच हो। सचिन पायलट ने गहलोत पर वसुंधरा की मदद करने का भी आरोप लगाया था। जब वसुंधरा राजे को टिकट मिलने में देरी हुई तो अशोक गहलोत ने कहा मेरी वजह से वसुंधरा राजे को सजा नहीं मिलनी चाहिए। गहलोत कि बयान के बाद राजस्थान की राजनीति में एक बार फिर से नए पुराने अफसाने ने जोर पकड़ लिया। फिलहाल देखे तो राजस्थान की चुनावी गलियारों में वादों की भरमार है। लेकिन इन दोनों ने नेता की भी लगातार चर्चा बनी रहती है। फैसला जनता के हाथों में है। यही तो प्रजातंत्र है।

खड़गे के फोन कॉल के बाद बदले सपा नेताओं के तेवर

रोहित मिश्र

मप्र में सीटों के बंटवारे को लेकर सपा और कांग्रेस के बीच चल रहा वाकयुद्ध अब रुकने जा रहा है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकाअर्जुन खरगे के फोन कॉल के बाद सपा नेताओं के तेवर बदल गए हैं। कल तक कांग्रेस को कोसने वाले नेता अब इस बारे में बात करने से बच रहे हैं। सूत्रों के अनुसार पहले राहुल गांधी ने अपना संदेश अखिलेश को पहुंचाया। फिर रविवार को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिका अर्जुन खरगे ने खुद ही अखिलेश से बात की। ऐसा माना जा रहा है कि मप्र में दोनों पार्टियों के बीच गठबंधन हो सकता है। सपा के एक नेता नाम ना छापने की शर्त पर कह रहे हैं कि पार्टी ने भले ही मप्र में सीटें घोषित कर दी हों लेकिन यदि गठबंधन होता है तो हम अपने प्रत्याशी वापस ले लेंगे। अभी नाम वापस लेने का विकल्प खुला हुआ है। बीते दिनों कमलनाथ का एक बयान वायरल हो रहा था। इस बयान में कमलनाथ यह कहते दिख रहे थे कि कौन अखिलेश वखिलेश। इस बयान को सपा प्रमुख ने गंभीरता से लिया था। इसके बाद उनकी तरफ से तल्ख टिप्पणी भी आई थी। सपा के नेता भी इस बयानबाजी में कूद पड़े थे। अब इस मसले को ठंडा करने की कोशिशें हो रही हैं। सपा के वरिष्ठ नेता राम गोपाल यादव ने कहा कि कमलनाथ तो मेरे दोस्त हैं। उनसे किसी प्रकार की खटास नहीं है। मालूम हो कि राम गोपाल यादव अखिलेश के करीबी हैं। मध्य प्रदेश में सपा और कांग्रेस के बीच सीटों को लेकर काफी समय से वार्ता चल रही थी। शुरुआती बातचीत इंडिया गठबंधन में सपा के प्रतिनिधि जावेद अली खान ने की। इसके बाद साझेदारी पर बातचीत की कमान सपा की ओर से प्रो. रामगोपाल यादव और कांग्रेस की ओर से रणदीप सुरजेवाला ने संभाली। दोनों के बीच कई राउंड बातचीत हुई। सपा नेतृत्व को बताया गया कि नवरात्र में कांग्रेस की ओर से आने वाली पहली सूची में ही सपा प्रत्याशियों के नाम भी होंगे। सपा का कहना है कि गठबंधन के तहत छह सीटें उसे देने की बात हुई थी। हालांकि, सपा ने दो सीटें और मांगी थीं। सपा मुख्यालय पर हुई मध्य प्रदेश के पदाधिकारियों के साथ बैठक में भी कांग्रेस के साथ मिलकर चुनाव लड़ने के संकेत दिए गए। अखिलेश यादव ने यह समीक्षा भी की कि कौन प्रत्याशी जिताऊ स्तिथि में है और कहां ज्यादा मेहनत करने की जरूरत है। सपा मध्य प्रदेश में कुल 33 प्रत्याशियों की सूची जारी कर चुकी है। गठबंधन के तहत चुनाव लड़ने के बारे में सपा के मुख्य प्रवक्ता राजेंद्र चौधरी से संपर्क किए जाने पर उन्होंने कहा कि सपा की लड़ने वाली सीटें घट-बढ़ सकती हैं, लेकिन पूरी स्थिति वह सोमवार को ही स्पष्ट करने की स्थिति में होंगे।

अब जयंत चौधरी ने बढ़ा दी इंडिया गठबंधन की टेंशन

स्वदेश कुमार

उत्तर प्रदेश में 'इंडिया' गठबंधन को चलाना कांग्रेस के लिए टेढ़ी खीर होता जा रहा है। यह गठबंधन 2024 में मोदी को चुनाव हराने के लिए बना था, लेकिन उससे पहले पांच राज्यों में होने वाले विधान सभा चुनावों के दौरान गठबंधन में पड़ी रार ने साबित कर दिया है कि मोदी विरोधी नेता मोदी को हराने से अधिक अपनी राजनीति चमकाने में लगे हैं। मध्य प्रदेश में सीटों की दावेदारी को लेकर कांग्रेस-समाजवादी पार्टी के बीच का झगड़ा थम नहीं पाया था और अब राजस्थान विधान सभा चुनाव में इंडिया गठबंधन के एक और सहयोगी राष्ट्रीय लोकदल के जयंत चौधरी ने अपनी दावेदारी ठोक कर कांग्रेस को और भी दुविधा में डाल दिया है। बता दें कि इंडिया गठबंधन का हिस्सा बनी समाजवादी पार्टी और राष्ट्रीय लोकदल (आरएलडी) का उत्तर प्रदेश में पहले से ही चुनावी गठबंधन है। बीते वर्ष 2022 में यूपी विधान सभा चुनाव में सपा-रालोद मिलकर चुनाव लड़े थे। इन दोनों दलों में से सपा ने मध्य प्रदेश की 9 सीटों के अलावा राजस्थान में आरएलडी ने 6 सीटों की मांग कर दी है। आरएलडी ने राजस्थान में टिकट की दावेदारी करके वहां (राजस्थान) खुद को मजबूत करने की दलील दी है।

गौरतलब है कि साल 2018 के राजस्थान चुनावों में आरएलडी ने दो सीटों- भरतपुर और मालपुरा में चुनाव लड़ा था। इसमें से भरतपुर में उसे जीत हासिल हुई थी। यहां आरएलडी के सुभाष गर्ग ने भाजपा के विजय बंसल को 15,000 वोटों से हराया था। गर्ग को मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने अपनी कैबिनेट में मंत्री बनाया था। दूसरी ओर मालपुरा में आरएलडी के रणवीर पहलवान बीजेपी के कन्हैय्या लाल से करीब 30,000 वोटों से हार गए थे। आरएलडी को दोनों सीटों पर पड़े कुल वोटों में से 33 फीसदी वोट मिले थे। इस बार, आरएलडी राजस्थान में

कांग्रेस के सहयोगी के रूप में चुनाव लड़ रही है। पार्टी ने झुंझुनू, चूरू, हनुमानगढ़, भरतपुर, बीकानेर और सीकर जैसे जाट बहुल जिलों में सीटों की मांग की है। सर्वेक्षण के अनुसार राजस्थान के जिन जिलों से रालोद अपना प्रत्याशी उतारना चाहती है वहां जाट मतदाताओं का 10 फीसदी से अधिक हिस्सा है और राजस्थान की 200 सीटों में से लगभग 40 पर जाट वोटरों का प्रभाव है।

बता दें कि चुनाव के मद्देनजर आरएलडी प्रमुख जयंत चौधरी पहले ही जयपुर और भरतपुर समेत पांच विधानसभा सीटों पर प्रचार कर चुके हैं। वहीं, आने वाले दिनों में कुछ और सीटों पर उनकी रैलियों की योजना है। सूत्रों बताते हैं कि आरएलडी राजस्थान में जाट के अलावा दलित मतदाताओं को अपने पक्ष में जुटाने के लिए भीम आर्मी प्रमुख चन्द्रशेखर आज़ाद से हाथ मिला सकते हैं। बहरहाल, यूपी में इंडिया गठबंधन को लेकर अखिलेश यादव और जयंत चौधरी ने जो तेवर अपनाए हैं, उससे तो यही लगता है कि मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान समेत पांच राज्यों में होने वाले विधान सभा चुनाव को इंडिया गठबंधन की परीक्षा के तौर पर देखा जा रहा है। इन चुनावी राज्यों में यदि कांग्रेस का प्रदर्शन अच्छा रहा तो इंडिया गठबंधन के सहयोगी दलों पर दबाव आ जायेगा, लेकिन इसका उलटा हुआ तो कांग्रेस को झुकना पड़ेगा। मगर ऐसा हो पाये इससे पूर्व ही गठबंधन के दल आपसदारी में सेंध लगाने का कोई मौका नहीं छोड़ रहे हैं।

मध्य प्रदेश में सपा को सीटें न देने पर जहां अखिलेश ने कांग्रेस को चेतावनी दी है, वहीं अब जयंत चौधरी ने भी राजस्थान में 6 सीटें मांगकर इंडिया गठबंधन को टेंशन दे दी है। अखिलेश ने बीते दिनों साफतौर पर कह दिया कि इंडिया के तहत अगर राज्य स्तर पर गठबंधन नहीं हुआ तो बाद में भी नहीं होगा। उन्होंने मध्य प्रदेश के चुनाव में सीट बंटवारे को लेकर कांग्रेस से बात न बनने पर ये चेतावनी दी है। पूरे सियासी घटनाक्रम की तह में जाया जाये तो पता चलता है कि सपा ने गत दिनों मध्य प्रदेश की 9 सीटों पर अपने उम्मीदवार घोषित किए थे, इसमें पांच सीटें ऐसी हैं, जिन पर कांग्रेस ने भी अपने उम्मीदवार घोषित कर रखे हैं। सपा ने पहले ही अपने लिए संभावित सीटों की सूची कांग्रेस को दी थी, जिसे तवज्जो नहीं मिली। इसके बाद जब अखिलेश यादव से कांग्रेस से गठबंधन को लेकर सवाल पूछा गया तो उन्होंने कहा कि यह कांग्रेस को बताना होगा कि 'इंडिया' गठबंधन भारत के स्तर पर होगा या नहीं। अगर देश के स्तर पर है तो देश के स्तर पर है, अगर प्रदेश स्तर पर नहीं है तो भविष्य में भी प्रदेश स्तर पर नहीं होगा।

खैर, यह सब बाद की बाते हैं लेकिन आज तो कांग्रेस और समाजवादी पार्टी एक-दूसरे को नीचा दिखाने में ही लगे हैं। 19 अक्टूबर को सपा प्रमुख ने कांग्रेस नेताओं को आईना दिखाते हुए उसके उत्तर प्रदेश अध्यक्ष अजय राय को चिरकुट घोषित कर दिया था तो 21 अक्टूबर को उत्तर प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष अजय राय ने अखिलेश को खरी खोटी सुनाते हुए उन्हें बीजेपी का मददगार साबित कर दिया। यही नहीं अजय राय ने यहां तक आरोप लगाया कि जिस अखिलेश ने अपने पिता की इज्जत नहीं की उससे और क्या उम्मीद की जा सकती है। अजय राय ने कहा कि जनता देख रही है कि भाजपा से कौन मिला है। इससे पहले 7 उप-चुनाव हुए।

मध्यप्रदेश में कांग्रेस के लिए यहां सपा से बड़ी चुनौती है बसपा

आशीष तिवारी

मध्यप्रदेश में जैसे-जैसे विधानसभा के चुनाव की तारीख नजदीक आती जा रही है, सियासी तपिश भी बढ़ती जा रही है। वैसे तो सियासी समीकरणों के लिहाज से मध्यप्रदेश में सीधे तौर पर लड़ाई भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस की हो रही है, लेकिन एक पार्टी और भी है जो इस वक्त मध्यप्रदेश की तीसरे नंबर की सबसे बड़ी पार्टी भी है और अगर उस पार्टी का सही सियासी दांव चला तो मध्यप्रदेश में बड़े-बड़े सियासी समीकरणों की गणित बिगाड़ सकती है। आंकड़ों के मुताबिक बहुजन समाज पार्टी में पिछले साल के चुनाव में तकरीबन 68 सीटों पर दूसरे और तीसरे नंबर पर उसके प्रत्याशी रहे थे। इस बार बहुजन समाज पार्टी ने मध्यप्रदेश की गोंडवाना गणतंत्र पार्टी से गठबंधन कर आदिवासी और दलितों को साधने के साथ एक बड़े सियासी समीकरण को लेकर दांव चला है।

मध्यप्रदेश की सियासत में इस वक्त भाजपा और कांग्रेस के अलावा तीसरी जिस पार्टी की सबसे ज्यादा चर्चा हो रही है, वह समाजवादी पार्टी है। लेकिन सियासी जानकारों का कहना है कि चर्चा भले समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के गठबंधन में सीटों के मिलने और न मिलने की हो। लेकिन असली खेल बनाने और बिगाड़ने में बहुजन समाज पार्टी का बहुत बड़ा रोल होने वाला है। राजनीतिक विश्लेषक और वरिष्ठ पत्रकार उमंग सक्सेना कहते हैं कि कांग्रेस ने अपना जो भी सियासी आकलन किया हो और उसी आकलन के बाद ही कांग्रेस के लिए कोई सीट भले न छोड़ी गई हो। लेकिन अभी भी असली खतरा कांग्रेस के लिए सपा से ज्यादा बहुजन समाज पार्टी बन सकती है। उमंग कहते हैं कि आंकड़े इस बात की गवाही देते हैं कि पिछले चुनाव में अगर समाजवादी पार्टी ने कांग्रेस का नुकसान किया तो बहुजन समाज पार्टी ने भी मजबूती के साथ न सिर्फ कांग्रेस का नुकसान किया, बल्कि कुछ सीटों पर ऐसे सियासी समीकरण बैठे की भाजपा का भी थोड़ा बहुत नुकसान हुआ।

उमंग कहते हैं कि मध्यप्रदेश की तकरीबन 68 सीटें ऐसी थीं, जहां पर बहुजन समाज पार्टी 2018 के चुनाव में दूसरे या तीसरे नंबर पर रही थी। इनमें कई सीटें तो ऐसी थीं जो की बहुजन समाज पार्टी के चलते ही कांग्रेस के हाथ से खुले तौर पर फिसल गई। मध्यप्रदेश चुनाव आयोग के आंकड़े बताते हैं कि यहां की अटेर विधानसभा सीट में कांग्रेस तकरीबन 5000 वोटो से चुनाव हार गई थी। इसी सीट पर बहुजन समाज पार्टी को 16 हजार से ज्यादा वोट मिले थे। इसी तरह मध्यप्रदेश की कोलारस सीट पर कांग्रेस महज 720 वोटों से चुनाव हार गई। जबकि बहुजन समाज पार्टी को इसी सीट पर 16 हजार से ज्यादा वोट मिले थे। मध्यप्रदेश के ही बीना में कांग्रेस 632 वोटों से चुनाव हारी थी। जबकि इस सीट पर बहुजन समाज पार्टी ने तकरीबन 7000 वोट पाकर कांग्रेस का सियासी समीकरण बिगाड़ दिया था। आंकड़े बताते हैं कि टीकमगढ़ में कांग्रेस 4175 वोटो से हारी थी। जबकि इसी सीट पर बहुजन समाज पार्टी को तकरीबन 10 हजार वोट मिले थे।

सियासी जानकारों का कहना है कि सिर्फ बहुजन समाज पार्टी ही नहीं, बल्कि गोंडवाना गणतंत्र पार्टी (जीजीपी) ने भी कुछ सीटों पर पिछले चुनाव में

सियासी समीकरण बिगाड़ दिए थे। एमपी चुनाव आयोग के आंकड़े बताते हैं कि यहां की टिमरनी विधानसभा में भी कांग्रेस 2213 वोटों से हारी थी। जबकि इसी सीट पर जीपीपी को साढ़े पांच हजार से ज्यादा वोट मिले थे। मध्यप्रदेश की बिजजपुर में कांग्रेस 2840 वोटों से हार गई थी। जबकि इसी विधानसभा सीट पर बहुजन समाज पार्टी को 37000 से ज्यादा वोट मिले थे। राजनैतिक विश्लेषक वैभव पवार कहते हैं कि मध्यप्रदेश में इस वक्त सियासत में कांग्रेस और भाजपा की तो चर्चा हो ही रही है। क्योंकि इन्हीं दोनों पार्टियों के बीच में चुनाव की असली लड़ाई है। लेकिन बीच-बीच में समाजवादी पार्टी की सियासी गलियारों में सबसे ज्यादा चर्चा हो रही है। वैभव कहते हैं कि चर्चा भले समाजवादी पार्टी की ज्यादा हो, लेकिन तीसरे नंबर की सबसे बड़ी और साइलेंट पार्टी के तौर पर बहुजन समाज पार्टी मध्यप्रदेश में अपनी सियासी दांव पेंच के साथ बढ़ चुकी है।

उनका कहना है कि बहुजन समाज पार्टी की मध्यप्रदेश में कोई बहुत बड़ी हैसियत नहीं है। लेकिन जितनी चर्चा समाजवादी पार्टी और कांग्रेस को लेकर के हो रही है, उसकी तुलना में तो कई गुना ज्यादा हैसियत मध्यप्रदेश में बहुजन समाज पार्टी की है। और वह कई सीटों पर कांग्रेस का खेल बिगाड़ने की स्थिति में भी है। सियासी जानकारों का कहना है कि ऐसा नहीं है कि कांग्रेस को इसका अंदाजा नहीं है। लेकिन सियासत में हर कदम फूंक फूंक कर रखे जाते हैं, शायद यही वजह है कि कांग्रेस बहुजन समाज पार्टी और गोंडवाना गणतंत्र पार्टी के हुए गठबंधन पर चुप्पी जरूर साधे है। लेकिन अंदरूनी तौर पर जबरदस्त मंथन भी चल रहा है। वह कहते हैं कि अगर सियासी ताकत का अंदाजा वोट प्रतिशत से लगाना हो, तो बहुजन समाज पार्टी एमपी में समाजवादी पार्टी की तुलना में बहुत आगे है। मध्यप्रदेश के चुनाव आयोग के आंकड़ों के मुताबिक बहुजन समाज पार्टी को 2018 में 5.1 फीसदी मत मिले थे। जबकि समाजवादी पार्टी को 2018 में 1.30 प्रतिशत ही वोट मिले थे।

वैभव पवार कहते हैं कि समाजवादी पार्टी से ज्यादा वोट प्रतिशत तो मध्यप्रदेश में गोंडवाना गणतंत्र पार्टी को मिले थे। आंकड़ों के मुताबिक 2018 के चुनाव में जीजीपी का वोट प्रतिशत समाजवादी पार्टी से ज्यादा था। समाजवादी पार्टी को जहां 1.30 फ़ीसदी वोट मिले थे। वहीं जीजीपी को 1.78 फीसदी वोट मिले थे। सियासी जानकारों का कहना है कि भले ही 2008 के बाद बहुजन समाज पार्टी का वोट प्रतिशत कम हुआ हो और उसके विधायक भी कम हुए हों। लेकिन प्रदेश के सियासी समीकरण को बिगाड़ने और बनाने की हैसियत में बहुजन समाज पार्टी इस बार गोंडवाना गणतंत्र पार्टी के गठबंधन के साथ तो सियासी मैदान में उतर ही चुकी है। मध्यप्रदेश चुनाव आयोग के आंकड़ों के मुताबिक बहुजन समाज पार्टी को 2008 में जहां 8.9 फीसदी वोट के साथ सात विधानसभा सीटें मिली थीं। 2013 में बसपा का वोट प्रतिशत खिसककर 6.29 हो गया और सीटें 7 से 4 रह गई थीं। जबकि पिछले चुनाव में बहुजन समाज पार्टी का वोट प्रतिशत 2013 की तुलना में खिसक कर 5.01 रह गया और सीटें भी खिसक कर चार से दो पर आ गईं।

राजनीतिक जानकारों का कहना है कि मायावती ने इस बार दलित और आदिवासियों के सहारे मध्य प्रदेश में अपनी सियासी पैठ को मजबूत करने के लिए जीजीपी से गठबंधन किया है। गठबंधन के चलते मायावती मध्यप्रदेश की 178 सीटों पर सियासी मैदान में ताल ठोंक रही हैं, जबकि गोंडवाना गणतंत्र पार्टी के हिस्से में 52 सीटें आई हैं। राजनीति विश्लेषक पवार कहते हैं कि जिस तरीके से 2018 के चुनाव में बहुजन समाज पार्टी और जीजीपी ने अलग-अलग चुनाव लड़ने के बाद भी कई सीटों पर सियासी समीकरण न सिर्फ बिगाड़े थे बल्कि कांग्रेस का अच्छा खासा नुकसान किया था। इस बार दोनों पार्टियों के गठबंधन के साथ मध्य प्रदेश की सियासत में सियासी समीकरणों को बनाने और बिगाड़ने के लिहाज से यह गठबंधन सबसे बड़ा और साइलेंट गठबंधन माना जा रहा है।

जानिए रावण के बारे में ये 10 खास बातें

राम भारत की जनआस्था में बसे हैं. राम और रावण के युद्ध की कहानी रामायण भारत का पवित्र धर्मग्रंथ है. दशहरा राम और रावण युद्ध में रावण के अंत का दिन है. इसे बुराई पर अच्छाई की जीत के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है. आइए जानते हैं लंका के राजा रावण के बारे में 10 महत्वपूर्ण बातें.

राम भारत की जनआस्था में बसे हैं. राम और रावण के युद्ध की कहानी रामायण भारत का पवित्र धर्मग्रंथ है. दशहरा राम और रावण के युद्ध में रावण के अंत के साथ ही बुराई पर अच्छाई की जीत के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है. आइए जानते हैं लंका के राजा रावण के बारे में 10 महत्वपूर्ण बातें.

रावण एक कुशल सेनापति, अनुशासित और एक शानदार योद्ध था. उसकी कुशल रणनीति के चलते उसने लगातार अपने साम्राज्य का विस्तार किया.

रावण एक कुशल राजनीतिज्ञ भी था. इसके अलावा वह वास्तुकला का मर्मज्ञ होने के साथ-साथ ब्रह्म ज्ञानी और बहु-विद्याओं का जानकार था. उसे संगीत की भी अच्छी जानकारी थी.

रावण शिव का अनन्य और महान भक्त था. शिव उसके आराध्य थे. उसने कई तंत्र विद्याओं पर सिद्धी हासिल की थी. इन्हीं तंत्र-मंत्र विद्याओं के चलते वह मायावी कहलाता था.

रावण के दस सिरों को लेकर भी कई तरह के भ्रम फैले हैं. लेकिन विद्वानों का मानना है कि रावण अपने दस सिरों के होने का भ्रम पैदा करता था. उसे दशानन कहा जाता था. विद्वानों की मानें तो रावण छह दर्शन और चारों वेद का ज्ञाता था. यही नहीं कई विद्याओं का ज्ञानी थी. उसका एक नाम दसकंठी के रूप में भी प्रचलित था.

रावण जाति से ब्राह्मण था. दरअसल, रावण के पिता ब्राह्मण विश्वश्रवा थे और माता राक्षस थीं. वाल्मीकि रामायण के अनुसार रावण पुलस्त्य मुनि का पोता था अर्थात् उनके पुत्र विश्वश्रवा का पुत्र था. जैसा कि पहले कहा रावण एक कुशल योद्धा था. उसने सुंबा और बालीद्वीप को जीतकर अपने शासन का विस्तार किया. इसके अलावा अंगद्वीप, मलयद्वीप, वराहद्वीप, शंखद्वीप, कुशद्वीप, यवद्वीप और आंध्रालय को जीत लिया.

बताया जाता है कि रावण ने लंका कुबेर से छीनी और खुद का राज्य कायम किया. यही नहीं उसने धनपति कुबेर से पुष्पक विमान भी छीन लिया.रावण खुदको शिव का सबसे महान भक्त कहता था. उसने शिव तांडव स्तोत्र की रचना तो की ही, इसके अलावा अन्य कई तंत्र ग्रंथों की रचना की. उसने ज्योतिष पर भी कई ग्रंथ लिखे. ज्योतिष में उसके सुनहरी सिद्धांत एक गंभीर आज भी बहुत गंभीर माने जाते हैं.

देश में आज भी ऐसे कई स्थान हैं जहां रावण को पूजा जाता है. वैसे रावण को लेकर कई जगह पर अलग-अलग मान्यताएं भी हैं. कहा जाता है रावण अपने अहंकार के कारण समाप्त हो गया.

रावण नहीं धन के देवता कुबेर की थी सोने की लंका, दशानन ने ऐसे किया था हासिल

वेद शास्त्रों के मुताबिक कुंभकर्ण और विभीषण रावण के दो सगे भाई थे। इसके अलावा रावण के एक सौतेला भाई भी थे जिनका नाम कुबेर था। ये वही कुबेर जी हैं जो हम पर धन की कृपा बरसाते हैं। महर्षि वाल्मीकि के द्वारा रचित रामायण के अनुसार महर्षि पुलस्त्य ब्रह्माजी के मानस पुत्र थे।

वेद शास्त्रों के मुताबिक कुंभकर्ण और विभीषण रावण के दो सगे भाई थे। इसके अलावा रावण के एक सौतेला भाई भी थे जिनका नाम कुबेर था। ये वही कुबेर जी हैं जो हम पर धन की कृपा बरसाते हैं। महर्षि वाल्मीकि के द्वारा रचित रामायण के अनुसार महर्षि पुलस्त्य ब्रह्माजी के मानस पुत्र थे। महर्षि पुलस्त्य का विवाह राजा तृणबिंदु की पुत्री से हुआ था। इनके पुत्र का नाम विश्रवा था।

महर्षि वाल्मीकि के द्वारा रचित रामायण के मुताबिक, ब्रह्माजी ने महर्षि पुलस्त्य को अपना पुत्र माना था। महर्षि पुलस्त्य का विवाह राजा तृणबिंदु की पुत्री से हुआ था।

महर्षि पुलस्त्य के पुत्र विश्रवा थे। विश्रवा अपने पिता के दिए हुए संस्कारों के अनुसार सत्यवादी व जितेंद्रीय थे। विश्रवा के इन गुणों से प्रसन्न होकर महामुनि भरद्वाज ने अपनी कन्या इड़विड़ा का विवाह विश्रवा के साथ कर दिया। महर्षि विश्रवा और इड़विड़ा से एक पुत्र हुआ। जिसका नाम वैश्रवण रखा गया। वैश्रवण नाम धन कुबेर का ही है। इसके बाद महर्षि विश्रवा ने दूसरा विवाह किया। इनकी दूसरी पत्नी का नाम कैकसी था। कैकसी राक्षस कुल की कन्या थीं। कैकसी के गर्भ से तीन पुत्रों का जन्म हुआ। जिनका नाम रावण, कुंभकर्ण और विभीषण था। इस तरह से रावण, कुबेर का सौतेला भाई हुआ।

सोने की लंका

रामायण के मुताबिक, महर्षि विश्रवा ने कुबेरदेव को रहने के लिए सोने की लंका प्रदान की थी और धन कुबेर की तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी ने उनको उत्तर दिशा का स्वामी और धनाध्यक्ष बना दिया। इसके साथ ही ब्रह्माजी ने कुबेरदेव को मन की गति से चलने वाला पुष्पक विमान भी दिया। लेकिन रावण की हट और अपने पिता के कहने पर कुबेर जी ने सोने की लंका अपने भाई रावण को दे दी। फिर उन्होंने अपने लिए कैलाश पर्वत पर अलकापुरी बसाई।

जब रावण विश्व विजय पर निकला तो उसने अलकापुरी को भी जीत लिया। इस कारण से तो रावण और कुबेरदेव के मध्य भयंकर युद्ध भी हुआ था। लेकिन रावण को ब्रह्माजी का वरदान प्राप्त था, जिस वजह से उसने कुबेर को हरा दिया था और बलपूर्वक ब्रह्माजी द्वारा दिया हुआ पुष्पक विमान भी कुबेर जी से छीन लिया।

कुबेर का पिछला जन्म

धर्म शास्त्रों के अनुसार, ऐसा कहा जाता है कि कुबेरदेव अपने पिछले जन्म में चोर थे। कहते हैं कि वह अन्य जगहों के साथ-साथ देव मंदिरों में भी चोरी किया करते थे। एक बार कुबेर जी चोरी करने के लिए शिव मंदिर में घुस गए। उस समय में मंदिरों में बहुत माल-खजाना हुआ करता था। खजाने को ढूंढने के लिए कुबेर ने मंदिर में दीपक जलाया, लेकिन तेज हवा के कारण वह दीपक बुझ गया। यह क्रम कई बार तक चलता रहा और कुबेर जी बार-बार प्रयास करते रहे। इसे देखकर भोले-भाले और औढरदानी भगवान शंकर प्रसन्न हो गए और उस बार-बार हुए क्रम को दीप आराधना समझकर अगले जन्म में कुबेर को धनपति होने का वरदान दे दिया।

ये 10 दिग्गज प्रभु श्रीराम के साथ नहीं होते तो रावण को मारना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन था

कहते हैं कि रावण को युद्ध में हराने से पहले तो उसका लंका में प्रवेश करना ही सबसे कठिन कार्य था। प्रभु श्रीराम ने लंका पर चढ़ाई करने के पहले शिव की आराधना की फिर उन्होंने लंका की रक्षक देवी की आराधना की, तब कहीं जाकर वे रावण की लंका में प्रवेश कर पाए थे।

रावण ज्योतिष, वास्तुकला, इन्द्रजाल, तंत्र, सम्मोहन और तरह-तरह के जादू जानता था। उसके पास विमान और घातक अस्त्र एवं शस्त्र थे। उसे शिव से वरदान प्राप्त था। उसके किले की रक्षा देवी करती थी। रावण मायावी शक्तियों का स्वामी था। रावण को भगवान राम कभी नहीं मार पाते, यदि उन्हें इन 10 लोगों का साथ नहीं मिलता तो। लेकिन यह सभी राम की ही लीला थी। आओ जानते हैं कि वे 10 लोग कौन थे?

1.हनुमानजी

हनुमानजी ने ही प्रभु श्रीराम की अंगूठी को लेकर समुद्र को पार करने के बाद उसे माता सीता को दिया, मेघनाद के पुत्र अक्षय कुमार का वध कर लंका दहन किया, विभीषण और सुग्रीव को राम से मिलाया, राम और लक्ष्मण का अपहरण कर जब अहिरावण पाताल लोक ले गया था, तो उन्हें मुक्त कराया और उन्होंने ही हिमालय से संजीवनी बूटी को लाकर लक्ष्मण की जान बचाई थी।

2 .लक्ष्मण

प्रभु श्रीराम के भाई लक्ष्मण शेषनाग के अवतार थे। अपनी पत्नी उर्मिला से 14 वर्ष तक दूर रहे लक्ष्मण के बगैर राम न तो सीता माता को ढूंढ पाते और न ही वे युद्ध की तैयारी कर पाते। लक्ष्मण एक श्रेष्ठ धनुर्धर थे और वे पाशुपतास्त्र का संधान करना जानते थे।

3.संपाती और जटायु

राजा दशरथ के मित्र जटायु ने ही सीता को ले जा रहे रावण को रोकने का प्रयास किया और वे मारे गए। जटायु ने राम को पूरी कहानी सुनाई और यह भी बताया कि रावण किस दिशा में गया है? इसके बाद संपाती ने अंगद को रावण द्वारा सीताहरण की पुष्टि की थी। संपाती ने ही दूरदृष्टि से देखकर बताया था कि सीता माता अशोक वाटिका में सुरक्षित बैठी हैं।

4.सुग्रीव

बाली ने सुग्रीव की पत्नी और संपत्ति हड़पकर उसको राज्य से बाहर धकेल दिया था। यही कारण था कि प्रभु श्रीराम ने सुग्रीव से अपने बड़े भाई बाली से युद्ध करने को कहा और इसी दौरान श्रीराम ने छुपकर बाली पर तीर चला दिया और वह मारा गया। बाली वध के बाद सुग्रीव किष्किंधा के राजा बने और उन्होंने राम के लिए वानर सेना को गठित किया था।

5.अंगद

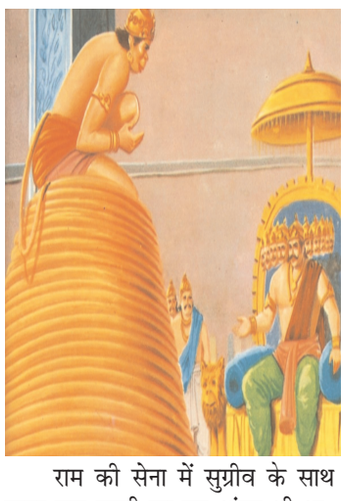

राम की सेना में सुग्रीव के साथ वानर राज बाली का पुत्र अंगद भी था। युद्ध के पूर्व श्रीराम ने अंगद को अपना दूत बनाकर लंका भेजा था। वहां अंगद ने अपना पैर जमाकर अपनी शक्ति का परिचय दिया था। अंगद हनुमान की तरह पराक्रमी और बुद्धिमान थे। रावण की सभा में अंगद ने जो उपदेश दिया, वह अनूठा है।

6.जामवंत

श्रीराम ने जामवंतजी को शिवलिंग स्थापना के समय रावण को आचार्यत्व का निमंत्रण देने के लिए लंका भेजा था। जामवंतजी ने ही हनुमानजी को उनकी शक्ति का स्मरण कराया था। वे एक इंजीनियर भी थे। समुद्र के तटों पर वे एक मचान को निर्मित करने की तकनीक जानते थे, जहां यंत्र लगाकर समुद्री मार्गों और पदार्थों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता था। मान्यता है कि उन्होंने एक ऐसे यंत्र का निर्माण किया था, जो सभी तरह के विषैले परमाणुओं को निगल जाता था। जामवंतजी आज भी जिंदा हैं।

7.नल

नल और नील दो भाई थे। नल ने ही लंका और भारत के बीच पुल बनाया था। यह पुल लगभग 5 दिनों में बन गया जिसकी लंबाई 100 योजन और चौड़ाई 10 योजन थी। रामायण में इस पुल को 'नल सेतु' की संज्ञा दी गई है। नल के निरीक्षण में वानरों ने बहुत प्रयत्नपूर्वक इस सेतु का निर्माण किया था। यह सेतु कालांतर में समुद्री तूफानों आदि की चोटें खाकर टूट गया था।

8.गरुड़ भगवान

जब रावण के पुत्र मेघनाथ ने श्रीराम से युद्ध करते हुए श्रीराम को नागपाश से बांध दिया था, तब देवर्षि नारद के कहने पर गरुड़ ने नागपाश के समस्त नागों को खाकर श्रीराम को नागपाश के बंधन से मुक्त कर दिया था। भगवान राम के इस तरह नागपाश में बंध जाने पर श्रीराम के भगवान होने पर गरुड़ को संदेह हो गया था। अंत में काकभुशुण्डिजी ने राम के चरित्र की पवित्र कथा सुनाकर गरुड़ के संदेह को दूर किया।

9.सुषेण वैद्य

राम-रावण युद्ध के समय मेघनाद के तीर से लक्ष्मण घायल होकर मूर्छित हो गए थे, ऐसे में सुषेण वैद्य को बुलाया गया। लक्ष्मण की ऐसी दशा देखकर राम विलाप करने लगे। सुषेण ने कहा- 'लक्ष्मण के मुंह पर मृत्यु-चिह्न नहीं है अत: आप निश्चिंत रहिए, आप संजीवनी बूटी का इंजताम कीजिए।' हनुमानजी यह बूटी लेकर आए। यदि सुषेण वैद्य नहीं होते तो लक्ष्मण का जिंदा रहना मुश्किल था और यदि लक्ष्मण का देहांत हो जाता तो संभवत: प्रभु श्रीराम यह युद्ध रोककर पुन: लौट जाते। अत: सुषेण वैद्य की रामकथा में महत्वपूर्ण भूमिका रही।

10. विभीषण

रावण के 10 सिर थे। जिस सिर को राम अपने बाण से काट देते थे पुन- उसके स्थान पर दूसरा सिर उभर आता था। राम द्वारा लाख प्रयास करने के बाद भी जब रावण नहीं मारा गया, तो वानर सेना में चिंता होने लगी थी। रावण ने अमरत्व प्राप्ति के उद्देश्य से भगवान ब्रह्मा की घोर तपस्या कर वरदान मांगा, लेकिन ब्रह्मा ने उसके इस वरदान को न मानते हुए कहा था कि तुम्हारा जीवन नाभि में स्थित रहेगा। यही कारण था कि वानर सेना पर रावण भारी पड़ने लगा था। ऐसे में विभीषण ने राम को यह राज बताया कि रावण का जीवन उसकी नाभि में है। नाभि में ही अमृत है। तब राम ने रावण की नाभि में तीर मारा और रावण मारा गया।

● अनिरुद्ध जोशी

रामायण का सबसे शक्तिशाली राक्षस

रामायण भगवान राम, हनुमान, रावण, बाली और कुंभकरण जैसे बड़े योद्धाओं से भरी हुई है. लेकिन रामायण में एक योद्धा इन सबसे ज्यादा शक्तिशाली था. एक बार अगस्त्य मुनि जब अयोध्या आए तो उन्होंने प्रभु श्रीराम को बताया कि रावण का पुत्र मेघनाद ही इस संग्राम का सबसे ताकतवर योद्धा यानी सबसे शक्तिशाली राक्षस था. आइए जानते हैं अगस्त्य मुनि ने ऐसा क्यों कहा और किसके हाथों मेघनाथ की मौत हुई.

कैसे नाम पड़ा मेघनाद?

ऐसा कहा जाता है कि रावण के घर जब पुत्र ने जन्म लिया तो उसके रोने की आवाज बिजली के कड़कने जैसी थी. यही कारण था कि रावण ने अपने बेटे का नाम मेघनाद रख दिया, जिसका अर्थ होता है बादलों में कड़कती बिजली.

क्यों इतना शक्तिशाली था मेघनाद?

राक्षसों के सबसे बड़े गुरू ने मेघनाथ के अंदर छिपे योद्धा को पहचाना था और उसे युद्ध के गुर सिखाए. उन्होंने मेघनाद को देव आस्त्रों का ज्ञान भी दिया, जिससे वो अधिक बलशाली हो गया था. मेघनाद अकेला ऐसा वीर था जिसके पास ब्रह्मास्त्र समेत पशुपत्रास्त्र और वैश्णवास्त्र थे. यही कारण है कि वो अकेला राम की पूरी सेना पर भारी था.

इंद्र को बनाया था बंधक

दानव और देवों के बीच हुए एक युद्ध में रावण के पुत्र मेघनाद ने अकेले ही इंद्र को पराजित कर दिया था. इंद्र को हराने के बाद वो उन्हें बंधक बनाकर अपने साथ ले आया. इस बारे में जब ब्रह्मा को पता चला तो उन्होंने इंद्र को छोड़ने के लिए मेघनाथ को एक वरदान देने की बात कही.

ब्रह्मा से मिला था वरदान

इंद्र को आजाद करने के लिए मेघनाद ने ब्रह्मा से सदा अमर रहने का

वरदान मांगा. ब्रह्मा ने इससे इनकार कर दिया और उन्हें युद्ध में कभी परास्त ना होने का वरदान दिया. ब्रह्मा ने मेघनाथ से कहा कि तुम्हें कभी कोई युद्ध में परास्त नहीं कर सकेगा, लेकिन हर युद्ध से पहले उसे अपने पर्थयांगिरा देवी के लिए यज्ञ करना होगा. ब्रह्मा ने ही मेघनाद को इंद्रजीत नाम दिया था.

युद्ध में कैसे मचाया कोहराम?

कुंभकरण का वध होने के बाद युद्ध भूमि पर कदम रखते ही मेघनाथ ने कोहराम मचाकर रख दिया था. अपने मायावी शस्त्रों से उन्होंने राम की पूरी सेना को हिलाकर रख दिया था. भगवान राम से लेकर हनुमान तक मेघनाथ को रोकने में असफल हो रहे थे. युद्ध में मेघनाथ का अंत सबको असंभव लगने लगा था.

विभीषण ने बताई कमजोरी

रावण के भाई विभीषण ने भगवान राम से कहा कि मेघनाद जब यज्ञ करता है, तब उसके पास कोई हथियार नहीं होता है. मेघनाथ को मारने का यही सही मौका होगा. हालांकि ये चाल भी काम न आई और मेघनाद बचकर निकल गया. बाद में रणभूमि में उसका सर्वनाश लक्ष्मण के हाथों हुआ.

अगस्त्य मुनि ने बताया रहस्य

अगस्त्य मुनि ने राम को बताया कि इंद्रजीत रावण से भी बड़ा शूरवीर था. लक्ष्मण के हाथों उसका संहार हुआ और केवल वही उसे मार सकते थे. राम ये बात सुनकर काफी हैरान हुए. तब अगस्त्य ने बताया कि वरदान देते वक्त ब्रह्मा ने मेघनाथ से कहा था कि उसका वध ऐसे योद्धा के हाथों ही हो सकता है जो 14 वर्षों से ना सोया हो.

14 साल तक नहीं सोए थे लक्ष्मण

भगवान राम के पूछने पर लक्ष्मण ने बताया कि वनवास के समय वह 14 साल तक नहीं सोए थे. वह रातभर धनुष पर बाण चढ़ाए पहरेदारी पर रहते थे. लक्ष्मण ने निद्रा को अपने वश में कर लिय था. ब्रह्मा के मुख से निकले स्वर शायद लक्ष्मण के लिए ही थे, जिनके हाथों निश्चित ही मेघनाद का अंत लिखा था.

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

शेखावत के अनुकरणीय नेतृत्व के लिए भारत आभारी रहेगा

नईदिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को पूर्व उपराष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत को उनकी 100वीं जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि भारत उनके अनुकरणीय नेतृत्व और प्रगति की दिशा में किए गए प्रयासों के लिए हमेशा आभारी रहेगा। मोदी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, आज बहुत ही खास दिन है। आज आदरणीय राजनेता भैरों सिंह शेखावत की 100वीं जयंती है। भारत हमेशा उनके अनुकरणीय नेतृत्व और हमारे देश की प्रगति की दिशा में किए गए प्रयासों के लिए उनका आभारी रहेगा। प्रधानमंत्री ने राजनीतिक और वैचारिक मतभेदों के बावजूद शेखावत को सभी दलों से मिले सम्मान को भी याद किया। मोदी ने उनके साथ अपनी पुरानी तस्वीरें साझा करते हुए कहा कि वह ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें सभी राजनीतिक दलों के और हर क्षेत्र के लोग पसंद करते थे। शेखावत राजस्थान में भाजपा के पहले मुख्यमंत्री थे और उन्हें पश्चिमी राज्य में पार्टी को प्रमुखता से खड़ा करने का श्रेय दिया जाता है।

भाजपा ने विधायक राजा सिंह का निलंबन समाप्त किया

हैदराबाद। भाजपा ने तेलंगाना से अपने विधायक टी. राजा सिंह का निलंबन समाप्त करते हुए उन्हें एक बार फिर विधानसभा चुनाव में उतारा है जिसको लेकर राजनीतिक बवाल खड़ा हो गया है। जहां विपक्षी पार्टियां भाजपा के इस कदम की आलोचना कर रही हैं वहीं सोशल मीडिया पर लोग ट्रेंड चला कर नुपूर शर्मा का भाजपा से निलंबन समाप्त करने की मांग भी कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर टिप्पणियों के जरिये भाजपा नेतृत्व पर दबाव बढ़ाया जा रहा है कि वह नुपूर शर्मा का निलंबन समाप्त कर उन्हें मुख्यधारा की राजनीति में लाये। हम आपको बता दें कि नुपूर शर्मा को जब भाजपा से निलंबित किया गया था उस समय वह पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता पद पर थीं। पार्टी सूत्रों का कहना है कि संभव है कि लोकसभा चुनावों से पहले उनका निलंबन समाप्त कर उन्हें दिल्ली-एनसीआर की किसी संसदीय सीट से चुनाव लड़ाया जाये।

राजा का सस्पेंशन रद्द करने पर भाजपा पर भड़के ओवैसी

हैदराबाद। एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी भाजपा पर तीखा हमला किया है, जब उन्होंने तेलंगाना विधायक टी राजा सिंह का निलंबन रद्द कर दिया था, जिन्हें पार्टी ने पैगंबर के खिलाफ उनकी विवादास्पद टिप्पणी के लिए कारण बताओ नोटिस जारी किया था। पिछले साल पैगंबर मुहम्मद के खिलाफ नूपुर शर्मा की टिप्पणी पर आपत्ति जताने वाले मुस्लिम देशों पर केंद्र सरकार के रुख का जिक्र करते हुए, ओवैसी ने कहा कि नरेंद्र मोदी ने अपने प्रिय फ्रिंज एलिमेंट को पुरस्कृत किया है। उन्होंने दावा किया कि नफरत फैलाने वाले भाषण देना भाजपा में प्रचार का सबसे तेज़ तरीका है। उन्होंने एक्स पर लिखा कि नरेंद्र मोदी ने अपने प्रिय फ्रिंज एलिमेंट को पुरस्कृत किया है। मुझे पूरा यकीन है कि नूपुर शर्मा को भी पीएम से आशीर्वाद मिलेगा। मोदी की बीजेपी में नफरत फैलाने वाले भाषण प्रचार का सबसे तेज़ तरीका है।

मध्यप्रदेश में कांग्रेस की सूची में परिवारवाद का वर्चस्व

भोपाल। विपक्षी कांग्रेस ने 7 नवंबर के मध्य प्रदेश चुनावों के लिए चार परिवारों के सदस्यों को अधिक टिकट दिए हैं। जबकि एक परिवार, एक टिकट का फॉर्मूला पार्टी में व्यापक आंतरिक सुधारों का हिस्सा था। उदयपुर में तीन दिवसीय चिंतन शिविर (मंथन सत्र) के अंत में अपनाई गई कांग्रेस की नव संकल्प (नया संकल्प) घोषणा में फॉर्मूले में एक चेतावनी जोड़ी गई जिसमें कहा गया कि पांच साल का अनुभव रखने वालों को एक परिवार, एक टिकट नियम से छूट दी जाएगी। राज्यसभा सदस्य दिग्विजय सिंह और नेता प्रतिपक्ष गोविंद सिंह के परिवार को तीन-तीन टिकट दिए गए हैं। गोविंद सिंह अपनी रिश्तेदार चंदा रानी गौड़ और भतीजे राहुल सिंह भदोरिया के साथ चुनाव लड़ेंगे। दिग्विजय सिंह के बेटे जयवर्धन सिंह को उनके भाई लक्ष्मण सिंह और उनके भतीजे प्रियव्रत सिंह के साथ मैदान में उतारा गया है। दिवंगत पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह के बेटे अजय सिंह और उनके बहनोई राजेंद्र सिंह को भी नामांकित किया गया है।

तेजस्वी ने नीतीश के भाजपा प्रेम पर व्यक्त की प्रतिक्रिया

पटना। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा विपक्षी दल भाजपा के प्रति सौहार्द और प्रेम को लेकर जमकर जदयू और राजद के बीच सियासी घमासाना मचा हुआ है। दोनों दलों के बीच चल रहे जुबानी जंग के बीच राजद नेता और उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने सोमवार को कहा कि नीतीश कुमार की भाजपा से दोस्ती वाली टिप्पणी को अधिक महत्व नहीं देना चाहिए। मीडिया के अनुसार तेजस्वी यादव ने कहा कि इस पर चर्चा का कोई मतलब नहीं है। उन्होंने कहा, इस पर चर्चा करने का कोई मतलब नहीं है। हम सभी जानते हैं कि बिहार सरकार सफलतापूर्वक चल रही है और सरकार के भीतर बहुत अच्छा सहयोग है। राज्य में बहुत सारे विकास कार्य हुए हैं। लोगों ने इसमें एक समस्या है। तेजस्वी यादव ने पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव के बारे में कहा, आप सभी जानते हैं कि क्या होगा। भाजपा का सभी राज्यों में हार तय है।

खुद के भावी प्रधानमंत्री वाले पोस्टर पर बोले अखिलेश यादव

समाजवादियों का लक्ष्य भाजपा को रोकना है

लखनऊ। लखनऊ में पार्टी कार्यालय के बाहर समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव को भावी प्रधानमंत्री घोषित करते हुए एक पोस्टर लगा है। इसको लेकर सियासी बवाल मच गया है। समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के बीच जारी तनातनी के दौरान ही यह पोस्टर लगा है। यही कारण है कि इंडिया गठबंधन को लेकर भी चर्चा होने लगी है। इन सब के बीच अखिलेश यादव ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि सिर्फ पोस्टर लगाने से कोई प्रधानमंत्री नहीं बनने वाला. अगर किसी समर्थक ने पोस्टर लगाया है तो वह जो चाहता है, वही जाहिर कर रहा है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि समाजवादियों का लक्ष्य भाजपा को रोकना है।

स्वामी प्रसाद मौर्य ने कहा कि जब से इंडिया गठबंधन बना है, सभी राजनीतिक दलों के कार्यकर्ता चाहते हैं कि उनकी पार्टी का नेता प्रधानमंत्री बने। जैसा कि इंडिया (गठबंधन) में हमारे नेताओं ने कहा है, पहले हम गठबंधन की सरकार बनाएंगे, और पीएम कौन होगा, हम चर्चा से तय करेंगे। इसलिए पहले संसदीय चुनाव होने दीजिए। दूसरी ओर भाजपा हमलावर हो गई है। बीजेपी नेता शहजाद पूनावाला ने कहा कि ढ्ढह्लष्ठढ्ढ गठबंधन एक अनोखा गठबंधन है, इसका देश के लिए कोई मिशन और विजन नहीं है, इसमें केवल भ्रम, विरोधाभास और महत्वाकांक्षा की प्यास है... पहले कांग्रेस और समाजवादी पार्टी मध्य प्रदेश में सीटों को लेकर लड़ रही थीं. ..अब वे पीएम पद के लिए लड़ रहे हैं जबकि पीएम पद के लिए कोई वैकेंसी नहीं है, कभी कांग्रेस राहुल गांधी का चेहरा आगे बढ़ाती है, कभी टीएमसी ममता बनर्जी का चेहरा आगे बढ़ाती है, तो अखिलेश यादव और नीतीश कुमार का चेहरा भी आगे बढ़ाया जा रहा है, कितने पीएम उम्मीदवार होंगे क्या वे इस भ्रामक गठबंधन में हैं?

बीजेपी नेता दानिश आजाद अंसारी ने इसे %मुंगेरी लाल के हसीन सपने% बताया। उन्होंने कहा कि दिवास्वप्न देखने से कोई किसी को नहीं रोक सकता। लेकिन व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार ही सपने देखना चाहिए। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी के नेतृत्व में हमारा देश विकास की राह पर आगे बढ़ रहा है। देश की जनता को पीएम मोदी पर भरोसा है और देश निश्चित तौर पर तीसरी बार पीएम मोदी को पीएम चुनेगा। यह पोस्टर सपा नेता

फखरुल हसन चांद ने लगवाया है। चांद ने कहा कि पोस्टर का उद्देश्य समाजवादी पार्टी प्रमुख के प्रति प्यार और सम्मान व्यक्त करना था। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी के नेता और कार्यकर्ता चाहते हैं कि अखिलेश यादव देश के प्रधानमंत्री बनें...भारत गठबंधन में हम चाहते हैं कि अखिलेश यादव प्रधानमंत्री का चेहरा बनें।

भाजपा बोली- मुंगेरी लाल के हसीन सपने

भारतीय जनता पार्टी ने सोमवार को लखनऊ में पार्टी कार्यालय के बाहर समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव को भावी प्रधानमंत्री घोषित करने वाला एक पोस्टर सामने आने के बाद उनका मजाक उड़ाया और कहा कि किसी भी व्यक्ति को दिवास्वप्न देखने से नहीं रोका जा सकता है। पार्टी ने कहा कि लोगों को अपनी क्षमता के मुताबिक सपने देखना चाहिए। यह पोस्टर चुनावी राज्य मध्य प्रदेश में सीटों के बंटवारे को लेकर इंडिया गठबंधन सहयोगियों, सपा और कांग्रेस के बीच खींचतान के बीच आया है। यह पोस्टर सपा नेता फखरुल हसन चांद ने लगवाया है। सपा के इसी पोस्टर पर भाजपा ने पलटवार किया है।

बीजेपी नेता दानिश आजाद अंसारी ने इसे मुंगेरी लाल के हसीन सपने बताया। उन्होंने कहा कि दिवास्वप्न देखने से कोई किसी को नहीं रोक सकता। लेकिन व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार ही सपने देखना चाहिए। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी के नेतृत्व में हमारा देश विकास की राह पर आगे बढ़ रहा है। देश की जनता को पीएम मोदी पर भरोसा है और देश निश्चित तौर पर तीसरी बार पीएम मोदी को पीएम चुनेगा। चांद ने कहा कि पोस्टर का उद्देश्य समाजवादी पार्टी प्रमुख के प्रति प्यार और सम्मान व्यक्त करना था। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी के नेता और कार्यकर्ता चाहते हैं कि अखिलेश यादव देश के प्रधानमंत्री बनें...भारत गठबंधन में हम चाहते हैं कि अखिलेश यादव प्रधानमंत्री का चेहरा बनें।

इंडिया गठबंधन के घटकों - भाजपा के खिलाफ 28 दलों का एक समूह - के बीच इस बात पर कोई सहमति नहीं है कि 2024 के आम चुनावों के लिए ब्लॉक का चेहरा कौन होगा। यादव ने कमलनाथ के नेतृत्व वाली मध्य प्रदेश भाजपा पर कांग्रेस के 144 उम्मीदवारों की सूची में समाजवादी पार्टी के किसी भी नेता को जगह न देकर उन्हें धोखा देने का आरोप लगाया है। उन्होंने दावा किया है कि कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं ने उनकी पार्टी को कम से कम चार उम्मीदवार मैदान में उतारने का आश्वासन दिया है। रविवार को कमलनाथ ने स्वीकार किया कि समाजवादी पार्टी के साथ सीटों के बंटवारे पर चर्चा हुई है।

गृहमंत्री ने एनसीईएल का नया लोगो, वेबसाइट और ब्रोशर किया लॉन्च

हमारा लक्ष्य किसानों की समृद्धि करना : अमित शाह

नईदिल्ली। सहकारिता मंत्री अमित शाह ने सोमवार को कहा कि नव स्थापित नेशनल कोऑपरेटिव फॉर एक्सपोर्ट्स लिमिटेड (एनसीईएल) को अब तक 7,000 करोड़ रुपये का ऑर्डर मिला है। शाह ने यहां एनसीईएल का 'लोगो' और वेबसाइट जारी करते हुए कहा कि सहकारी समिति यह सुनिश्चित करेगी कि निर्यात का लाभ सहकारी समितियों के सदस्य किसानों तक पहुंचे और न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के अलावा निर्यात लाभ का करीब 50 प्रतिशत हिस्सा वह उनके साथ साझा करेगी। मंत्री ने राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा, वर्तमान में एनसीईएल एक अस्थायी कार्यालय से काम कर रहा है। हम कर्मचारियों की भर्ती कर रहे हैं। अब तक हमें (एनसीईएल) 7,000 करोड़ रुपये के ऑर्डर मिले हैं।

उन्होंने कहा कि एनसीईएल न केवल निर्यात से मुनाफा कमाने पर ध्यान केंद्रित करेगा बल्कि किसानों को निर्यात बाजार के लिए उत्पाद बनाने में भी मदद करेगा। यह सहकारी समितियों के सदस्य किसानों के साथ लाभ भी साझा करेगा।

शाह ने कहा कि एनसीईएल सदस्य किसानों से निर्यात की जाने वाली वस्तुओं को एमएसपी पर खरीदेगा। एनसीईएल को निर्यात से होने वाले कुल लाभ में से करीब 50 प्रतिशत सीधे सदस्य किसानों के बैंक खातों में स्थानांतरित किया जाएगा। मुनाफा एमएसपी के इतर होगा। शाह ने यहां पूसा परिसर में आयोजित संगोष्ठी में पांच एनसीईएल सदस्यों को सदस्यता प्रमाण पत्र भी वितरित किए।

सहकारिता मंत्री ने कहा कि अगर निर्यात बढ़ाना है तो खेतों और किसानों के स्तर पर व्यवहार विकसित करना होगा, फसल पैटर्न बदलना होगा, ब्रांड-पैकेजिंग-मार्केटिंग प्रक्रिया के बारे में किसान को जागरूक करना होगा। उन्होंने कहा कि यह काम नेशनल कोऑपरेटिव एक्सपोर्ट्स लिमिटेड (एनसीईएल) को करना होगा। उन्होंने कहा कि हमारे

क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। इसका उपयोग करने के लिए एक माध्यम की आवश्यकता है जो किसानों, सहकारी समितियों और वैश्विक बाजार के बीच संबंध होगा। मेरा मानना है कि नेशनल कोआपरेटिव फॉर एक्सपोर्ट्स लिमिटेड के साथ इस संबंध की भरपाई हो जाएगी जिसकी हमारे पास कमी थी।

कार्यक्रम में मौजूद केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि एनसीईएल के निर्माण से निर्यात को बढ़ावा मिलेगा। यह देश के विकास और ग्रामीण परिवर्तन में योगदान देगा। उन्होंने कहा कि सहकारी क्षेत्र निर्यात क्षमता का दोहन कर सकता है क्योंकि वैश्विक स्तर पर भारत पर जोर दिया जा रहा है। मंत्री ने कहा कि सहकारी समितियों को निर्यात बाजार के लिए अंतरराष्ट्रीय मानकों का अनुपालन करने वाले गुणवत्तापूर्ण उत्पादों के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इस कार्यक्रम में सहकारिता राज्य मंत्री बीएल वर्मा, सहकारिता सचिव ज्ञानेश कुमार और एनसीईएल प्रमुख पंकज कुमार बंसल भी मौजूद थे। एनसीईएल को इस साल 25 जनवरी को बहु-राज्य सहकारी सोसायटी अधिनियम के तहत पंजीकृत किया गया था। अधिकृत शेयर पूंजी 2,000 करोड़ रुपये है और निर्यात में रुचि रखने वाली प्राथमिक से शीर्ष स्तर तक की सहकारी समितियां इसकी सदस्य बनने के लिए पात्र हैं। देश में करीब आठ लाख सहकारी समितियां हैं, जिसके 29 करोड़ से अधिक सदस्य हैं।

खेल
प्रमुख समाचार

भारत का सेमीफाइनल का दावा मजबूत, शीर्ष पर टीम इंडिया

धर्मशाला। भारत और न्यूजीलैंड के बीच रविवार को वनडे विश्व कप का 21वां मुकाबला खेला गया। यह मैच धर्मशाला के हिमाचल प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन मैदान में खेला गया। टीम इंडिया ने इस मैच को चार विकेट से अपने नाम किया। भारतीय टीम का न्यूजीलैंड के खिलाफ आईसीसी टूर्नामेंट में रिकॉर्ड अच्छा नहीं रहा था। इसको लेकर भारतीय टीम पर दबाव था, लेकिन रोहित शर्मा की अगुवाई वाली टीम ने इस बार कोई गलती नहीं की और 20 वर्षों बाद न्यूजीलैंड के खिलाफ आईसीसी टूर्नामेंट में ऐतिहासिक जीत हासिल की। इस मैच से ही अंक तालिका में भी बड़ा फेरबदल हुआ है।

दरअसल, 21वें मैच से पहले तक न्यूजीलैंड और भारत दोनों टीमें इस विश्व कप में अजेय थीं और चार में से चार मैच जीते थे। हालांकि, इस मैच के बाद कीवी टीम के साथ एक हार का आंकड़ा जुड़ गया, जबकि भारतीय टीम ने जीत का पंजा लगाया। भारतीय टीम अभी भी अजेय है और उसने पांच में से पांचों मैच जीते हैं। मैच से पहले तक न्यूजीलैंड की टीम अंक तालिका में शीर्ष पर थी, लेकिन अब भारतीय टीम ने उन्हें हराकर अंक तालिका में शीर्ष स्थान हासिल किया।

मौजूदा अंक तालिका में भारत ने पांच मैचों में पांच जीत हासिल की है। उसके 10 अंक हैं, जबकि नेट रन रेट +1.353 है। न्यूजीलैंड की टीम पांच मैचों में चार जीत और आठ अंक के साथ दूसरे स्थान पर लुढ़क गई है। उसका नेट रन रेट +1.481 है। 2019 विश्व कप में भारत अंक तालिका में शीर्ष पर रहा था। उसने नौ में से सात मैच जीते थे। एक में हार का सामना करना पड़ा था और एक मैच बेनतीजा रहा था। 2019 विश्व कप में भारत और न्यूजीलैंड के बीच लीग स्टेज का मुकाबला बारिश की वजह से नहीं हो सका था।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

825 अंक टूटकर सेंसेक्स 65 हजार के आया नीचे

नईदिल्ली। ग्लोबल मार्केट से मिले कमजोर रुझानों के बीच हफ्ते के पहले कारोबारी दिन यानी सोमवार को घरेलू बाजार लगातार चौथे दिन बिकवाली के दबाव में रहा। कारोबारी सत्र के दूसरे हिस्से में इसमें और तेजी आई। आज दोनों फ्रंटलाइन इंडेक्स सेंसेक्स और निफ्टी में भारी गिरावट दर्ज की गई। आज के कारोबार में बीएसई सेंसेक्स 825 अंक कमजोर हुआ। वहीं, निफ्टी में भी 264 अंक की गिरावट दर्ज की गई। व्यापक बाजारों में, बीएसई मिडकैप 2.5 प्रतिशत और स्मॉलकैप सूचकांक में 4.18 प्रतिशत की गिरावट आई। बीएसई का 30 शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स 825.74 अंक यानी 1.26 फीसदी की गिरावट के साथ 64,571.88 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान सेंसेक्स 65,453.92 की ऊंचाई तक गया और नीचे में 64,502.68 तक आया। वहीं, दूसरी तरफ नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी में भी 260.90 अंक गिरावट दर्ज की गई।

टोयोटा जल्द पेश करेगी सॉलिड-स्टेट बैटरी!

नईदिल्ली। जापानी वाहन निर्माता टोयोटा इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए मौजूदा बैटरी के समान गति से ही सॉलिड-स्टेट बैटरी बनाने के करीब है। फाइनैंशियल टाइम्स की एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि सॉलिड-स्टेट बैटरियों का बड़े पैमाने पर उत्पादन 2027 या 2028 तक शुरू हो सकता है। ऑटोमेकर टोयोटा ने हाल ही में कहा कि वह एक ऐसी उपलब्धि पर पहुंच गया है जो इन बैटरियों की लागत और आकार को आधा कर सकती है। सफल होने पर, टोयोटा ने कहा कि सॉलिड-स्टेट बैटरियां ईवी की रेंज को 1,200 किमी तक दोगुना कर देंगी। चार्जिंग का समय 10 मिनट या उससे भी कम रह जाएगा। पिछले हफ्ते, टोयोटा ने सॉलिड-स्टेट बैटरियों के बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी पर काम करने के लिए एक प्रमुख जापानी तेल कंपनी इडेमित्सु के साथ सहमति व्यक्त की।

बीते वित्त वर्ष में फ्लिपकार्ट का घाटा बढ़कर 4890.6 करोड़ हुआ

नईदिल्ली। प्रमुख ई-कॉमर्स कंपनी फ्लिपकार्ट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड का एकीकृत घाटा बीते वित्त वर्ष (2022-23) में बढ़कर 4,890.6 करोड़ रुपये पर पहुंच गया है। व्यापार आसूचना मंच टॉफलर द्वारा उपलब्ध कराए गए वित्तीय आंकड़ों में यह जानकारी दी गई। वॉलमार्ट समूह की ई-कॉमर्स कंपनी को वित्त वर्ष 2021-22 में 3,371.2 करोड़ रुपये का एकीकृत घाटा हुआ था। एकल आधार पर बीते वित्त वर्ष में फ्लिपकार्ट का शुद्ध घाटा बढ़कर 4,839.3 करोड़ रुपये रहा है। फ्लिपकार्ट की वित्तीय रिपोर्ट के अनुसार, वित्त वर्ष 2022-23 के लिए उसका एकल शुद्ध घाटा 44 प्रतिशत बढ़कर 4,839.3 करोड़ रुपये रहा, जबकि इससे पिछले वित्त वर्ष में यह 3,362.4 करोड़ रुपये रहा था। समीधाक्षीन वित्त वर्ष के लिए कंपनी की एकीकृत शुद्ध कुल आमदनी (अन्य स्रोतों से मिलाकर) 9.4 प्रतिशत बढ़कर 56,012.8 करोड़ रुपये हो गई, जो वित्त वर्ष 2021-22 में 51,176 करोड़ रुपये थी।

स्टेशनरी कंपनी का आईपीओ 30 अक्टूबर को खुलेगा

नईदिल्ली। घरेलू उत्पाद और स्टेशनरी विनिर्माता सेलो वर्ल्ड का 1,900 करोड़ रुपये का आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) 30 अक्टूबर को खुलेगा और एक नवंबर को बंद होगा। एंकर निवेशक 27 अक्टूबर को शेयरों के लिए बोली लगा सकेंगे। आईपीओ दस्तावेजों के अनुसार, यह निर्गम प्रवर्तकों और अन्य शेयरधारकों द्वारा पूरी तरह से बिक्री पेशकश (ओएफएस) पर आधारित है। इसमें 10 करोड़ रुपये के शेयर पात्र कर्मियों के लिए आरक्षित रखे गए हैं। कंपनी की पांच स्थानों- दमन, हरिद्वार (उत्तराखंड), बद्दी (हिमाचल प्रदेश), चेन्नई (तमिलनाडु) और कोलकाता (पश्चिम बंगाल) में 13 विनिर्माण इकाइयां हैं। कंपनी की एकीकृत परिचालन आय वित्त वर्ष 2022-23 में 32.2 प्रतिशत बढ़कर 1,796.69 करोड़ रुपये रही है, जो इससे पिछले वित्त वर्ष में 1,359.18 करोड़ रुपये थी।

क्रिकेट, व्यापार और राजनीतिक गठजोड़ के गोपनीय अनुमान

रामचंद्र गुहा

क्रिकेट में गेंदबाज जिन दो छोरों से गेंदबाजी करते हैं, उनके अलग-अलग नाम होते हैं। लॉर्ड्स क्रिकेट ग्राउंड के दो छोरों के नाम पैवेलियन और नर्सरी एंड हैं। ओवल के दो छोरों के नाम क्रमश: मेंबर स पैवेलियन और अंडरग्राउंड स्टेशन वॉक्सहॉल हैं। दरअसल वॉक्सहॉल अंडरग्राउंड स्टेशन पास में ही है। मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड के दो छोरों के नाम मेंबर्स एंड और द ग्रेट सदर्न स्टैंड हैं। कोलकाता के ईडन गार्डन के दो छोर पैवेलियन एंड और हाई कोर्ट एंड हैं। ओल्ड ट्रेफर्ड के दो छोरों के नाम सबसे अच्छे हैं, जहां उन दो तेज गेंदबाजों के नाम पर छोरों का नामकरण किया गया है, जिनका यह घरेलू मैदान था। ये दो खिलाड़ी हैं- ब्रायन स्टैथम और जिमी एंडरसन। मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम के दो छोरों के नाम गरवारे एंड और टाटा एंड हैं। दूसरे स्टेडियमों के छोरों के नामों की तुलना में ये कम आकर्षक हैं, लेकिन ये इस आधार पर स्वीकार्य हैं कि क्रिकेट को स्पांसर भी चाहिए।

क्रिकेट मैदान के दो छोरों के नामकरण के तीन उद्देश्य हैं- पहला यह कि इससे मैच देखने आने वाले लोग अलग-अलग छोरों में बने स्टैंड्स में आसानी से अपनी जगह ढूंढ लेते हैं। दूसरा, इससे उन लोगों के लिए कमेंटरी बहुत आकर्षक हो जाती है, जो मैदान पर खेल देखने नहीं आते। खासकर टेलीविजन के आने से पहले रेडियो कमेंटरी में दो अलग-अलग छोरों से होती गेंदबाजी का वर्णन श्रोताओं का आनंद बढ़ा देता था। और तीसरा, इससे खिलाड़ियों, खासकर कप्तानों को बहुत मदद मिलती है, जिन्हें स्थानीय परिस्थिति के बारे में ज्यादा जानकारी होती है। वे इस तथ्य का भी लाभ उठाते हैं कि किस छोर से चल रही हवा मैच

के किस चरण में किस गेंदबाज के लिए फायदेमंद साबित हो सकती है। ऐसा भी नहीं है कि क्रिकेट स्टेडियम के दो छोरों के नाम पत्थर की लकीर की तरह अमिट ही हों। ये नाम बदले भी जा सकते हैं।

चेन्नई से 2,000 मील दूर बड़े होते हुए मैंने रेडियो कमेंटरी और अखबारों से जाना था कि चेपक स्टेडियम के एक छोर का नाम वालाजा रोड एंड है। यह नाम आकर्षण भी पैदा करता था और रहस्य भी। लेकिन कुछ साल पहले तमिलनाडु क्रिकेट एसोसिएशन ने वालाजा रोड एंड का नाम बदलकर एक पूर्व क्रिकेट प्रशासक वी पट्टाभिरमन के नाम पर करने का फैसला लिया। लेकिन चूंकि वालाजा रोड एंड नाम लोगों की स्मृति में बसा हुआ है, इसलिए इसका इस्तेमाल होता है। जब नरेंद्र मोदी स्टेडियम दर्शकों के लिए 2021 में खुला और उसी साल फरवरी में वहां पहला टेस्ट मैच हुआ, तो हमने पाया कि इसके दो छोरों का नामकरण अदाणी और अंबानी के नाम पर किया गया है। इस सच्चाई ने मुझमें हंसी, क्षोभ और असमर्थता के मिले-जुले भाव पैदा किए।

यह सच है कि अतीत में उद्यमियों ने स्टेडियमों के लिए धन दिए हैं, और छोरों के नाम उनके नाम पर किए गए हैं, जैसे कि वानखेड़े स्टेडियम में टाटा एंड और गरवारे एंड। लेकिन गुजरात में पहले सरदार वल्लभभाई पटेल स्टेडियम का नाम नरेंद्र मोदी के नाम पर करना, फिर दोनों छोरों के नाम अदाणी और अंबानी के नाम पर करना आत्म जागरूकता के अभाव का ही नमूना है। हाल के वर्षों में इन दो भारतीय उद्यमियों ने जो विराट आर्थिक समृद्धि हासिल की है, उस पर सवाल भी उठे हैं। केंद्र सरकार के पूर्व आर्थिक सलाहकार अरविंद सुब्रमणियम ने तो इसे कलंकित पूंजीवाद का 2ए मॉडल तक कह दिया।

न्यू अहमदाबाद स्टेडियम में हुआ पहला टेस्ट मैच टेलीविजन पर देखते हुए मैंने पाया कि दो छोरों पर स्कोरबोर्ड के ठीक ऊपर कंकरीट में इसके दो वित्तपोषकों के नाम बिल्कुल स्पष्ट हैं। उससे कुछ ही ऊपर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा है-नरेंद्र मोदी स्टेडियम। इस तरह प्रधानमंत्री के साथ इन दो उद्यमियों के नाम सीधे-सीधे जुड़े हैं। यह इनकी सांकेतिक नजदीकी का सार्वजनिक प्रदर्शन भी है। मैं टेस्ट क्रिकेट का प्रेमी हूं और आईपीएल नहीं देखता। इसलिए मैं यह नहीं कह सकता कि आईपीएल, 2022 के दौरान इन दो छोरों को किस नाम से पुकारा गया।

भूपेश की घोटालेबाज सरकार ने किया आवास घोटाला:मूणत

रायपुर। रायपुर पश्चिम से बीजेपी प्रत्याशी और पूर्व मंत्री राजेश मूणत ने भूपेश सरकार पर जमकर आरोप लगाए हैं। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि भूपेश बघेल सरकार पर कॉलोनाइजरों और बिल्डरों से साठगांठ कर राज्य के गरीबों का आवास छीनने का षड्यंत्र कर रही है। उन्होंने भाजपा कार्यालय एकात्म परिसर में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि भाजपा शासन काल में गरीब तबके के आवास के लिए कॉलोनाइजर को 15 प्रतिशत भूखंड छोड़ने होते थे, लेकिन भूपेश बघेल सरकार ने उस नियम में संशोधन कर सारे अधिकार कॉलोनाइजर और बिल्डर को सौंप दिए हैं। अब यह बिल्डर तय करेंगे कि गरीबों को कितनी कीमत पर मकान देना है।

उन्होंने कहा कि गरीब विरोधी भूपेश बघेल सरकार ने शहरी गरीबों के आवास की प्रधानमंत्री आवास योजना का स्वरूप ही बदल दिया और शहरी गरीबों को लूटने की तरकीब निकाली। अब गरीब हितग्राहियों से पूरे 4 लाख 75 हजार रुपए वसूल रहे हैं। जबकि इसमें 1 लाख 50 हजार रुपये केन्द्रांश, 2 लाख 50 हजार राज्यांश और हितग्राही से 75 हजार रुपये के अंश पर सहमति बनी थी। उन्होंने कहा कि भाजपा की सरकार गरीब को 75 हजार में ही मकान देंगे। गरीब का हक उसे देंगे।

मूणत ने कहा कि केंद्र सरकार चाहती है कि हर गरीब परिवार को पक्का मकान मिले। राज्य सरकार ने भी कहा कि यह आवास हम भी देंगे और उन्होंने भी घोषणा कर दी। घोषणा करने के बाद केंद्र का पैसा तो रख लिया। यह सरकार गरीब से ही पूरा पैसा लेकर मकान बेच रही है। गरीब की बात करने वाले, जिन्होंने अपने जन घोषणा पत्र में स्पष्ट रूप से कहा था कि शहरी क्षेत्र में दो कमरे का पक्का मकान देंगे। जिसके पास पट्टा नहीं उनको मकान देंगे। पट्टे के नाम पर लाखों लोग आज भी राजधानी में वंचित हैं। मैं तो कुछ लोगों का ही उदाहरण दे रहा हूं, जहां पर राजीव आवास योजना के पट्टे मिले हुए हैं, उनका नवीनीकरण नहीं किया गया और साथ ही वहां पर लिख दिया नवीनीकरण। पहले वह पट्टा किसका था और अभी जो पट्टों का वितरण हुआ,

जो केवल 3 साल के लिए दिया गया, यह कभी नहीं होता। एक सर्वे होता है। सर्वे के अंदर कौन से खसरे नंबर पर कौन व्यक्ति वहां पर स्थापित है, कितने साल से है, इसका स्पष्ट सर्वे होता है।

%हवा हवाई भूपेश सरकार की योजना%

भाजपा प्रदेश प्रवक्ता एवं पूर्व मंत्री राजेश मूणत ने कहा कि भाजपा छत्तीसगढ़ में प्रधानमंत्री आवास योजना के विषय को हमेशा उठाती रही है। इस विषय को उठाने के साथ ही इसे अंजाम तक पहुंचाने का काम भी भाजपा ने किया है। शासन का ध्यान आकर्षण भी किया है। प्रधानमंत्री आवास योजना के साथ ही छत्तीसगढ़ सरकार ने स्वयं अपनी योजना सर्वे कराकर आवास देने की बात कही थी, लेकिन वह योजना असफल साबित हुई। अगर सरकार की नीयत ही साफ है, सरकार की सोच सही है तो गरीब परिवार को उनका हक मिले। उनको छत मिले। मूणत ने कहा कि हमने आवास पर्यावरण मंत्री रहते हुए एक आदेश निकाला। गरीबों के लिए 15 प्रतिशत भूखंड आरक्षण की सुविधा इसलिए दी थी कि भविष्य में लैंड की कमी होने के बाद इसका उपयोग शासन अपने हिसाब से तय करे। सैकड़ों एकड़ जमीन शासन के पास है। इस पर केंद्र सरकार की योजना के तहत प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी क्षेत्र में आई। प्रदेश सरकार ने एक सर्वे किया। सर्वे करने के बाद भी बस्ती की कहां-कहां कौन-कौन सी जगह है, किस-किस बिल्डर की जगह है, वहां पर बस बीएसयूपी के मकान बनाकर गरीब परिवार को देना होता है। अब इस सरकार ने वह कानून वापस ले लिया और राजपत्र में प्रकाशित भी कर दिया कि भविष्य में गरीब परिवार को बिल्डर को मकान देना है। गरीब परिवारों के लिए यह जमीन आरक्षित की गई थी। जिसे सरकार ने फ्री कर दिया। उन्होंने कहा कि कुमारी सैलजा जब केंद्रीय मंत्री थीं, इस योजना की तारीफ करके इसको राष्ट्रीय स्तर पर लागू करने कहा था।

%सरकार गुमराह करने का काम कर रही%

उन्होंने कहा कि सर्वे सूची के आधार पर जो पट्टी दे रहे हैं उसमें यह कहीं नहीं लिखा है और इसी वजह से यह सरकार गुमराह करने का काम कर रही है। गरीब परिवारों का मकान जो उनका हक है, उनको मिलना था उनका पैसा डकार रही है और कुछ लोगों कुछ उद्योगपतियों जिनकी 15 फीसदी जमीन आरक्षित रखना ही थी उसमें छूट देकर के अपने लोगों को लाभ पहुंचाने का जो काम कर रहे हैं, भारतीय जनता पार्टी इसका विरोध करती है और यह स्पष्ट करती है कि जब भी हमारी सरकार बनेगी, गरीब परिवार को 75 हजार में मकान मिलेगा। जो नियमत: पट्टे हैं उसको स्थाई पट्टा मिलेगा और उसमें वे सभी चीज इंक्लूड रहेगी ताकि वह पट्टा उस व्यक्ति के पास जब रहे तो उसके उपरांत जो उसका हक है, वह उसके परिवार को मिले। पत्रकार वार्ता में भाजपा सह मीडिया प्रभारी अनुराग अग्रवाल उपस्थित थे।

✍ उमेश चतुर्वेदी

छतीसगढ़ में जीत के प्रति क्यों आश्वस्त नजर आ रही है कांग्रेस?

मध्य भारत के धान कटोरे में सियासी चावल भरने की तैयारियां तकरीबन पूरी हो चुकी हैं। राज्य के दोनों पारंपरिक प्रतिद्वंद्वी दलों ने अपने-अपने पौधे रोप दिए हैं। कांग्रेस ने जहां 83 सीटों के उम्मीदवारों का नाम फाइनल कर दिया है तो दो पांच साल से सत्ता से दूर बीजेपी भी 87 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतार चुकी है। दोनों पार्टियों की कोशिश है कि कटोरे से उनका ही चावल निकले, हालांकि इसमें अड़ंगा बहुजन समाज पार्टी और आम आदमी पार्टी लगा रही है। बीएसपी ने जहां 26 सीटों पर दम लगा रखा है तो आम आदमी पार्टी 11 सीटों के जरिए इस राज्य में सेंध लगाने की कोशिश कर रही है।वोट बैंक और समर्थक आधार के नजरिए से देखें तो बहुजन समाज पार्टी और आम आदमी पार्टी का वोट बैंक कमोबेश बीजेपी विरोधी ही माना जाता है। इस लिहाज से कांग्रेस, बहुजन समाज पार्टी और आम आदमी पार्टी एक ही समर्थक वोट बैंक पर निर्भर हैं। इस हिसाब से लगेगा कि तीनों दलों की उपस्थिति से कांग्रेस की स्थिति डांवाडोल हो सकती है। लेकिन कांग्रेस को उम्मीद अपने सबसे बड़े चेहरे से है। कांग्रेस की उम्मीद की बड़ी वजह राज्य के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल हैं। कांग्रेस जिस तरह की रणनीति पर चल रही है, उससे ऐसा लगता है कि वह एक बार फिर से सत्ता में वापसी के भरोसे से भरी है। उसे लगता है कि उसकी सरकार की योजनाओं के जरिए गांवों के लोगों को बहुत फायदा हुआ है। उसकी गोधन न्याय योजना की लोकप्रियता गांव-गांव तक फैली हुई है। कांग्रेस को यह भी लगता है कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल द्वारा चलाई गई 25 योजनाओं से लोग बेहद संतुष्ट हैं। जिनमें धनवंतरि मेडिकल योजना, दाई दीदी मोबाइल योजना, मुख्यमंत्री हाट बाजार क्लिनिक योजना, छत्तीसगढ़ महतारी दुलार योजना से लोगों को सीधे और तत्काल फायदा पहुंचा है। इस वजह से राज्य के लोगों का भरोसा भूपेश बघेल पर बना हुआ है। पार्टी को पता है कि सत्ता में रहने की वजह से उसके खिलाफ कुछ वर्गों में सत्ता विरोधी रूझान भी है। इसे ध्यान में रखते हुए पार्टी ने अपने 18 विधायकों के टिकट काट दिए हैं। पार्टी को लगता है कि इसकी वजह से उसे फायदा होगा और वह सत्ता विरोधी रुझानों से बच जाएगी।

पंद्रह साल से राज्य में पक रहे बीजेपी के चावल को निकालकर कांग्रेस का चावल पकाने वाले भूपेश बघेल ही रहे। राज्य के कांग्रेस अध्यक्ष रहते उन्होंने समूचे राज्य का दौरा किया था और तकरीबन अजेय समझी जाती रही भाजपा की सीटों को बीस से भी नीचे लाने पर मजबूर कर दिया था। कांग्रेस को अपने इसी चमत्कारी नेतृत्व पर अब भी भरोसा है। वैसे कांग्रेस को लगता है कि जिस तरह उसने जाति जनगणना की मांग का समर्थन किया है, उससे राज्य की करीब पचास फीसद पिछड़ा आबादी उसके समर्थन में खड़ी होगी। वैसे राज्य में करीब 34 प्रतिशत आदिवासी समुदाय के लोग हैं, जबकि बारह प्रतिशत हिस्सेदारी अनुसूचित जातियों की है। राज्य में करीब चार फीसद आबादी ही सवर्ण है। कांग्रेस को लगता है कि जाति जनगणना की राजनीति, मुख्यमंत्री का चेहरा और मुख्यमंत्री द्वारा चलाई जा रही योजनाएं उसे एक बार फिर जीत दिलाएंगी। हालांकि बीजेपी ने भी धान के कटोरे पर कब्जे के लिए अपने हरावल दस्ते के तकरीबन सारे तीर छोड़ रखे हैं। चुनावी मैदान में कोई कसर बाकी ना रहे, इसलिए पार्टी ने अपने चार मौजूदा सांसदों को मैदान में उतार दिया है। पार्टी ने सरगुजा से सांसद और केंद्रीय मंत्री रेणुका सिंह को भरतपुर- सोहनत तो रायगढ़ से सांसद गोमती साय को पत्थल गांव से टिकट दिया है। इसके अलावा बिलासपुर सांसद अरुण साव को लोरमी से प्रत्याशी बनाया गया है जो बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष भी हैं। साथ ही सांसद विजय बघेल को पाटन से कैंडिडेट बनाया गया है। बीजेपी के सांसदों को मैदान में उतारे जाने की कांग्रेस ने खिल्ली भी उड़ाई है। उसका कहना है कि बीजेपी को लग रहा है कि वह हार रही है, इसलिए उसने अपने सांसदों को मैदान में उतारा है। बीजेपी की ओर से रमन सिंह पूरी ताकत झोंके हुए हैं। ऐसा लगता है कि वे एक बार फिर सत्ता तक पहुंच सकते हैं।वैसे तो केंद्रीय स्तर पर विरोधी दलों ने भाजपा की अगुआई वाले गठबंधन के विरोध में इंडी एलाएंस बना रखा है। इंडी गठबंधन का एक हिस्सा आम आदमी पार्टी भी है। इस हिसाब से होना यह चाहिए था कि आम आदमी पार्टी कांग्रेस के साथ तालमेल करके चुनाव लड़ती।

भूपेश की घोषणाएं उनकी सरकार के दाग दिखा रहीं: अरुण साव

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सांसद अरुण साव ने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के बयान पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि वर्मी खाद के नाम पर जबरिया मिट्टी बेचने वाली सरकार को चुनाव के वक्त किसान याद आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि अभी भाजपा का घोषणा पत्र तो आने दीजिए, किसान को भाजपा से जितनी उम्मीद हैं, सभी पूरी होंगी। गांव, गरीब और किसान का विकास होगा। किसान का पूरा धान खरीदने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किसानों को वचन दिया है कि उनकी और अधिक बेहतरी के लिए काम करेंगे।प्रदेश भाजपा अध्यक्ष अरुण साव ने कहा कि किसानों को कांग्रेस राज के 16 प्रतिशत ब्याज पर कर्ज को ब्याज मुक्त ऋण में बदलने वाली भाजपा के घोषणा पत्र में ऐसी ऐसी योजनायें हैं जिनसे किसानों को कर्ज के जाल में फँसना ही नहीं पड़ेगा। भाजपा सरकार ने ही धान खरीदी की चाक चौबंद व्यवस्था कर खरीद को 15 गुना तक बढ़ाया। कांग्रेस ने पचास वर्ष तक अन्नदाताओं को गरीबी और कर्ज में डुबोकर रखा। कांग्रेस से इसका हिसाब छत्तीसगढ़ की जनता अवश्य लेगी। भूपेश बघेल ने आज एक बार फिर साबित कर दिया कि 5 साल में उन्होंने जनता के हित के कोई कार्य नहीं किए हैं। अब हार के डर से नित्यप्रति घोषणाबाजी कर रहे हैं।प्रदेश भाजपा अध्यक्ष अरुण साव ने कहा कि भूपेश बघेल से छत्तीसगढ़ की जनता पूछ रही है कि किसान हर साल कर्ज लेता है।

असम के सीएम सरमा का 26 को महासमुंद, बिलासपुर और खैरागढ़ दौरा

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के स्टार प्रचारक और असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा आगामी 26 अक्टूबर को छत्तीसगढ़ प्रवास पर रहेंगे। श्री सरमा इस दिन प्रदेश में महासमुंद, बिलासपुर और खैरागढ़ में जनसभाओं को संबोधित करेंगे और नामांकन रैलियों में शिरकत करेंगे।असम के मुख्यमंत्री श्री सरमा आगामी 26 अक्टूबर को विशेष विमान से सुबह 10.20 बजे रायपुर पहुँचेंगे और फिर हेलिकॉप्टर से 11 बजे महासमुंद जाएँगे। महासमुंद में श्री सरमा पहले जनसभा को संबोधित करेंगे और फिर जिले की चारों विधानसभा के भाजपा प्रत्याशियों के नामांकन दाखिले के लिए आहूत रैली में हिस्सा लेंगे। दोपहर 12.30 बजे श्री सरमा महासमुंद से बिलासपुर के लिए रवाना होंगे। बिलासपुर में आहूत जनसभा को संबोधित करने के बाद श्री सरमा वहाँ भाजपा प्रत्याशियों की नामांकन रैली में भाग लेंगे। यहाँ से प्रस्थान करके श्री सरमा अपराह्न 3.20 बजे खैरागढ़ पहुँचेंगे।

टीएस सिंहदेव के खिलाफ भाजपा से उतरने को तैयार है चिंतामणि

■ बृजमोहन से विधायक ने की मुलाकात

अंबिकापुर । कांग्रेस से टिकट कटने के बाद बलरामपुर के सामरी के विधायक चिंतामणि महाराज ने पार्टी छोड़ने के संकेत दिए हैं। उन्होंने अंबिकापुर सीट से उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव (टीएस बाबा) के विरुद्ध चुनाव लड़ने की इच्छा जताई है। उन्होंने कहा है कि भाजपा यदि उन्हें अंबिकापुर विधानसभा सीट से प्रत्याशी घोषित करती है तो वे भाजपा के साथ हो जाएंगे।इधर, भाजपा ने छह महीने बाद होने वाले लोकसभा चुनाव में सरगुजा संसदीय सीट से टिकट देने के आश्वासन के साथ भाजपा में प्रवेश का प्रस्ताव उन्हें दिया है। चिंतामणि महाराज दो बार से कांग्रेस के विधायक हैं लेकिन इस बार पार्टी ने उन्हें टिकट नहीं दिया है। सामरी सीट से कांग्रेस ने नए चेहरे विजय पैकरा पर पार्टी ने दांव लगाया है।

रविवार को पूर्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल हेलीकाप्टर से कुसमी पहुंचे। उनके साथ भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष विष्णुदेव साय, भाजपा के संभाग प्रभारी संजय श्रीवास्तव सहित अन्य स्थानीय नेता भी चिंतामणि महाराज के आश्रम श्रीकोट पहुंचे। भाजपा के नेता यहां मां काली की प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव में शामिल होने के साथ ही चिंतामणि महाराज से अलग से मुलाकात की। यह एकांत चर्चा लगभग 20 मिनट तक चली। भाजपा नेताओं के श्रीकोट आश्रम पहुंचने के कारणों को संसदीय सचिव चिंतामणि महाराज ने खुद सार्वजनिक किया। उन्होंने कहा कि भाजपा की ओर से प्रवेश का प्रस्ताव दिया गया है। उन्हें आश्वस्त किया गया है कि यदि वे पार्टी में प्रवेश कर लेते हैं तो छह माह बाद होने वाले लोकसभा चुनाव में सरगुजा संसदीय सीट से प्रत्याशी बना दिया जाएगा। इसके लिए दिल्ली आलाकमान भी राजी हैं। चिंतामणि महाराज ने कहा कि आज हर क्षण लोगों का विचार बदलता है।छह माह बाद क्या परिस्थिति बनेगी, इसे कोई नहीं जानता।

छत्तीसगढ़/राजधानी
प्रमुख समाचार

कांग्रेस सरकार बनने पर किसानों का कर्ज माफ: बैज

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं सांसद दीपक बैज ने शक्ति में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के द्वारा कांग्रेस सरकार बनने पर कर्ज माफ करने की घोषणा का स्वागत करते हुए कहा कि कांग्रेस का लक्ष्य प्रदेश के किसानों को आर्थिक रूप से मजबूत और सक्षम बनाना है ताकि उन्हें किसी प्रकार से कर्ज लेने की आवश्यकता ना पड़े और किसान का परिवार खुशहाल रहे है। छत्तीसगढ़ में पुन कांग्रेस की सरकार बनने पर पूर्व की तरह एक बार और किसानों को कर्ज से मुक्ति दिलाया जाएगा। प्रति एकड़ 20 क्विंटल धान की खरीदी की घोषणा पहले ही कि गई है जिसका क्रियान्वयन 1 नवम्बर से शुरू हो जायेगा। ओबीसी एसटी एसी वर्ग को संख्या के आधार पर सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाने जातिगत जनगणना करवाई जाएगी, 17 लाख आवासहीनो को मकान बनाकर देगी। कांग्रेस की नीति हर वर्ग के साथ न्याय करना है हर वर्ग के लिए बेहतरी के लिए काम करना है और भारतीय जनता पार्टी गरीब किसान मजदूर महिला एवं आरक्षण विरोधी है।प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं सांसद दीपक बैज ने कहा कि कांग्रेस सरकार छत्तीसगढ़ के किसानों को कर्ज मुक्त किया था उसके बाद सिंचाई कर माफ हुए कृषि पंपों को निशुल्क और रियायती दरों पर बिजली की व्यवस्था की गई धान की कीमत वादे से ज्यादा देने की व्यवस्था किसान ही तहसील भूपेश सरकार ने किया।

पुलिस को अयोग्य ठहराना पुलिस का मनोबल तोड़ना: ठाकुर

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने भाजपा प्रवक्ता एवं विधायक अजय चंद्राकर के द्वारा प्रेस वार्ता में पुलिस को अयोग्य कहने और माओवाद की तुलना सशस्त्र क्रांति से करने की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि भाजपा का आतंकी प्रेम प्रदेश की जनता के सामने एक बार और उजागर हो गया। भाजपा ने पुलिस को अयोग्य बताकर छत्तीसगढ़ महतारी और जनता की सुरक्षा में दिन रात घर परिवार को छोड़कर लगे अधिकारी जवानों का अपमान किया है। प्रदेश से नक्सलवाद को खदेड़ रहे पुलिस के अधिकारी जवानों मनोबल तोड़ा है। नक्सलियों के खिलाफ जंग लड़ते शहीद हुए पुलिस जवानों की शहादत का अपमान किया। जिन्होंने नक्सली हमला में अपनों को खोया है उनके जख्मो पर नमक छिड़का है। भाजपा हमेशा आतंकियो के साथ खड़ी रहती है उग्रवादियों को पार्टी का सदस्य बनाती है चुनाव जीतने भाजपा किसी से भी समझौता कर लेती है। प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि भाजपा के नेता कई बार नक्सलियों को अपना भाई बेटा बता चुके हैं।पूर्व रमन सरकार की नीतियां भी नक्सलवाद को पालने पोसने की थी यही वजह है दक्षिण बस्तर के चार विकासखण्ड तक सीमित नक्सलवाद 14 जिलों तक पहुँच गया था। तत्कालीन मुख्यमंत्री रमन सिंह का गृह जिला कवर्धा भी नक्सलवाद की चपेट में आ गया था। पूर्व रमन सरकार ने नक्सलवाद को खत्म करने पंजाब से पूर्व डीजीपी के पी एस गिल को वेतन को और मौज करने की सलाह दिया था।

भाजपा लाशों का उपयोग प्रचार के लिए कर रही: शुक्ला

रायपुर। भाजपा बिरजू तारम की लाश पर घृणित राजनीति कर रही प्रदेश कांग्रेस के संचार प्रमुख सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि भाजपा सत्ता हासिल करने के लिए किसी भी स्तर तक गिर सकती है जिस प्रकार से भाजपा के नेता बिरजू तारम की नक्सल हत्या पर राजनीति कर रहे उससे साफ लग रहा कि भाजपा इस दुखद हत्या का चुनावी लाभ लेना चाह रही है। बिरजू तारम की हत्या में भाजपाई षड्यंत्र के एंगल की भी जांच होनी चाहिये। कहीं यह हत्या राजनैतिक लाभ के उद्देश्य से नही हुई है, इस पहलू का अन्वेषण आवश्यक है। कांग्रेस चुनाव आयोग से भी बिरजू तारम की हत्या के लिए भाजपाई एंगल की जांच की मांग करेगी । प्रदेश कांग्रेस संचार प्रमुख सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि भाजपा सत्ता हासिल करने के लिए किसी भी स्तर तक गिर सकती है जो चुनावी लाभ के लिए मासूम बच्चों के मन में जहर घोल सकती है, वह कुछ भी कर सकती है, भाजपा के द्वारा साजा विधानसभा क्षेत्र में प्रचार के लिए बच्चों का दुरुपयोग करते हुए उनसे साम्प्रदायिकता का जहर उगलवाया है। कांग्रेस इस मामले की चुनाव आयोग में शिकायत करेगी। भाजपा के खिलाफ एफआईआर भी कराएगी। प्रदेश कांग्रेस संचार प्रमुख सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि छत्तीसगढ़ में भाजपा चुनाव में हार को देख कर तिलमिला गयी है। वह साम्प्रदायिकता और वैमनस्यता फैला कर चुनाव लड़ने लगी है।

आक्सीजोन के नाम पर गरीबों के दुकान और मकान तुड़वाए: वर्मा

रायपुर । आवास और पट्टा को लेकर भारतीय जनता पार्टी के आरोप पर पलटवार करते हुए प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा ने कहा है कि भूपेश सरकार की आवास न्याय योजना में 1 रुपया भी केंद्र की मोदी सरकार का नहीं है, झूठा श्रेय लेने के लिए भाजपा के नेता गलतबयानी कर रहे हैं भारतीय जनता पार्टी के नेता केवल चुनावी लाभ के लिए घड़ियाल आंसू बहा रहे हैं। 15 साल सरकार में रहने के दौरान भारतीय जनता पार्टी के यही नेता गरीबों के मकानों पर बुलडोजर चलवाते थे। राजेश मूणत और बृजमोहन अग्रवाल, रमन सिंह सरकार में तीन-तीन बार मंत्री रहे जिसने आक्सीजोन के नाम पर गरीबों के दुकान और मकान तुड़वाए। शहर के भीतर के गरीब बस्तियों को बेरहमी से उजड़ा। ऐतिहासिक, प्राचीन और धार्मिक महत्व के मौली माता और मरही माता मंदिर तक को नहीं छोड़े। अब चुनाव नजदीक आते ही गरीबों के भूखंड और आवास पर जुमलेबाजी कर रहे हैं। कांग्रेस की सरकारों ने अब तक छत्तीसगढ़ में एक लाख से अधिक आवासीय पट्टों का वितरण किया है। साहस है तो राजेश मूणत यह बताएं कि 15 साल मंत्री रहते हैं कितने गरीबों को पट्टा जारी करवाया है? असलियत यही है कि भाजपा के 15 साल के कुशासन में छत्तीसगढ़ में किसी भी गरीब को पट्टा नहीं दिया गया। भूपेश सरकार ने न केवल ग्रामीण और शहरी आवास बल्कि मोर जमीन मोर मकान योजना के तहत भी गरीबों के सिर पर छत का अधिकार दिया है।

पाटीदार भवन में पुरंदर मिश्रा का हुआ भव्य स्वागत

रायपुर। चुनावी माहौल के बीच रायपुर उत्तर विधानसभा क्षेत्र में नेताओं की चहलकदमी ने अब काफी जोर पकड़ लिया है। इसी बीच उत्तर विधानसभा क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी पुरंदर मिश्रा अपने दौरा और जनसंपर्क कार्यक्रम के कारवां को आगे बढ़ाते हुए सैकड़ों समर्थकों और बीजेपी कार्यकर्ताओं की भीड़ के साथ रविवार देर शाम फाफाडीह स्थित पाटीदार भवन भी पहुंचे। यहां गुजराती समाज के तमाम लोगों ने फूलमाला पहनाकर पुरंदर मिश्रा का भव्यता के साथ आत्मीय स्वागत किया।देवेंद्र नगर सेक्टर-5 स्थित पाटीदार भवन में आयोजित गरबा कार्यक्रम में रायपुर उत्तर विधानसभा क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी पुरंदर मिश्रा बतौर मुख्यअतिथि शामिल हुए। यहां उन्होंने पूजा-अर्चना की और गुजराती समाज के लोगों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि, गरबा का आयोजन गुजराती समाज की गौरवशाली धार्मिक परंपरा का एक प्रमुख हिस्सा है। जिसके माध्यम से समाज में एकजुटता का अनुकरणीय भाव भी देखने को मिलता है। पिछले सभी चुनाव में गुजराती समाज के लोगों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रही है और पूरा विश्वास है कि इस बार उन्हें भी गुजराती समाज के लोगों का पूर्ववत स्नेह व आशीर्वाद मिलेगा। इस कार्यक्रम में प्रमुख रूप से समाज के जयंतीभाई पटेल, पार्षद डॉ. प्रमोद साहू, मनोज दलवलकर, पूर्व पार्षद विठ्ठल भाई पटेल, महेंद्र खोडियार पूर्व मंडल अध्यक्ष व बाबू भाई पटेल सहित गुजराती समाज के कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

हार के भय से कांग्रेस हिंसा पर उतरी: सुनील सोनी

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के सांसद द्वय संतोष पांडेय व सुनील सोनी, मुख्य प्रवक्ता व पूर्व मंत्री अजय चंद्राकर और चुनाव आयोग संपर्क समिति के संयोजक डॉ. विजयशंकर मिश्रा ,मीडिया प्रभारी अमित चिमनानी ने मोहला-मानपुर क्षेत्र के भाजपा नेता बिरझू तारम व अन्य भाजपा कार्यकर्ताओं की हत्या की राजनीतिक व लक्षित हत्या के बाद हत्यारों पर कड़ी कार्रवाई करने तथा इस घटना के बाद विधानसभा चुनाव में नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के संवेदनशील व अति संवेदनशील मतदान केंद्रों में केन्द्रीय सुरक्षा बलों (सेंट्रल फोर्स) की तैनाती की मांग की है। भाजपा नेताओं ने छत्तीसगढ़ में नियुक्त संविदा पुलिस महानिदेशक को हटाते हुए क्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक तथा मोहलाङ्कमानपुर के पुलिस अधीक्षक को स्थानांतरित करने की मांग भी की और कहा कि घटना की त्वरित विवेचना के साथ दोषी व्यक्तियों की गिरफ़्तारी सुनिश्चित की जाए।

भाजपा सांसद श्री सोनी ने इस आशय का एक पत्र प्रदेश के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी को सौंपे जाने की जानकारी देते हुए सोमवार को एकात्म परिसर स्थित भाजपा कार्यालय में पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ राज्य में विधानसभा चुनाव-2023 की घोषणा के साथ ही मतदाताओं को आतंकित करने के उद्देश्य से राजनैतिक टारगेट किलिंग की घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है। भाजपा नेताओं ने कहा कि गत 20 अक्टूबर को नक्सल प्रभावित इलाके मोहला-मानपुर में भाजपा नेता बिरझू तारम की निर्दयता से गोली मारकर हत्या कर दी गईद्ध चुनाव की घोषणा के पूर्व से ही प्रदेश में आतंक का माहौल बनाने के उद्देश्य से ऐसी अनेक आपराधिक घटनाओं को जाम दिया गया है। इसके पूर्व बस्तर में 16 जनवरी को भाजपा जिला मंत्री बुधराम करटाम की हत्या हुई द्ध इस साल 5 फरवरी को बीजापुर भाजपा मंडल अध्यक्ष नीलकंठ कक्केम, 10 फरवरी को नारायणपुर भाजपा उपाध्यक्ष सागर साहू और 11 फरवरी को इंद्रावती नदी के पार दंतेवाड़ा-नारायणपुर जिले की सरहद पर भाजपा नेता रामधर अलामी की हत्या हो चुकी हैं। प्रदेश सरकार ने खुद राजनीतिक दलों के 35 से अधिक नेताओं की हत्या को स्वीकार किया हैद्ध किन्तु बार-बार अनुरोध के बावजूद भी पुलिस प्रसाशन द्वारा इन राजनैतिक टारगेट किलिंग् की घटनाओं को सामान्य घटना बताकर कभी भी गंभीर कार्रवाई नही की गईद्धभाजपा सांसद श्री पांडेय ने पत्रकार वार्ता में कहा कि मोहला-मानपुर की यह घटना विपक्षी दलों के कार्यकर्ताओं को आतंकित करने की घटनाओं की ही श्रृंखला हैद्ध राजनैतिक कार्यकर्ताओं की इन हत्याओं का स्पष्ट उद्देश्य राज्य के आगामी चुनावों के दौरान मतदाताओं में भय के वातावरण का प्रसार कर यह सन्देश देना है।

अभ्यर्थी-राजनीतिक दलों को आदर्श आचार संहिता में कई बातों का रखना होगा ध्यान

रायपुर। भारत निर्वाचन आयोग व्दारा विधानसभा निर्वाचन के दौरान राजनैतिक दलों और अभ्यर्थियों को मार्गदर्शन के लिए जो आदर्श आचार संहिता जारी की है उसके अनुसार सामान्य आचरण के अंतर्गत कोई दल या अभ्यर्थी ऐसी किसी गतिविधि में शामिल नहीं होगा जिससे भिन्न जातियों और धार्मिक या भाषायी समुदायों के बीच विद्यमान मतभेद अधिक गंभीर हो सकते हैं या परस्?पर नफ़रत हो सकती है या तनाव पैदा हो सकता है।

यदि राजनीतिक दलों की आलोचना की जाए, तो यह उनकी नीतियों और कार्यक्रमों, गत रिकॉर्ड और कार्य तक ही सीमित रखी जाएगी। दलों और अभ्यर्थियों को अन्य दलों के नेताओं या कार्यकर्ताओं की सार्वजनिक गतिविधियों से असंबद्ध निजी जीवन के सभी पहलुओं की आलोचना करने से बचना होगा। असत्यापित आरोपों या मिथ्या कथन के आधार पर अन्य दलों या उनके कार्यकर्ताओं की आलोचना करने से बचना होगा। हर व्यक्ति के शांतिपूर्ण और बाधारहित घरेलू जीवन के अधिकार का सम्मान किया जाएगा, फिर चाहे राजनीतिक दल और अभ्यर्थी उनकी राजनीतिक राय या गतिविधियों से कितने भी अप्रसन्न हों। किसी भी परिस्थिति में उनकी राय अथवा गतिविधियों के खिलाफ विरोध जताने के लिए व्?यक्तियों के घर के सामने प्रदर्शन आयोजित करने या धरना देने का सहारा नहीं लिया जाएगा।

कोई भी राजनैतिक दल या अभ्यर्थी अपने अनुयायियों को किसी भी व्यक्ति की अनुमति के बिना उसकी भूमि, भवन, परिसर की दीवारों इत्यादि पर झंडा लगाने, बैनर लटकाने, सूचना चिपकाने, नारा लिखने इत्यादि की अनुमति नहीं देगा।

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.